Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पर्यावरणकाव्यम्

पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित संस्कृत काव्य संग्रह

यह स्वअनुदेशित पाठ्य सामग्री दी ग्लोबल ओपेन यूनिवर्सिटी नागालैण्ड के विद्वान प्रशिक्षक दल द्वारा तैयार किया गया है जो विश्वविद्यालय के बोर्ड ऑफ स्टडीज़ तथा एकेडमिक काउंसिल द्वारा स्वीकृत है।

तृतीय पत्र

डॉ. अशोक कुमार शुक्ल

THE GLOBAL OPEN UNIVERSITY

दी ग्लोबल ओपेन यूनिवर्सिटी

नागालैण्ड

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

।। पुरोवाक् ।।

सुखमारोग्यदं शुभ्रं प्राकृतिकं सामाजिकम्।
पर्यावरणरम्यं भोः कर्म प्रदूषणान्तकम्।।

इह भुवि भवत्सु श्रेष्ठेषु श्रेष्ठतमेभ्यो मानवेभ्यः सर्वविधं भौतिकं सुखसाधनं सम्पादयितुं, प्रापयितुं च तेभ्यः निर्माणकर्मणि निरतैर्नरैर्यथा यथा नूतनोपाया उत्पाद्यन्ते, आविष्कारा आविष्क्रियन्ते, अन्वेषणमन्विष्यते तदर्थं सर्वेषां बीजभूतानां पंचतत्त्वानां पंचतत्त्वेन निर्मितानां प्राकृतिकपदार्थानां दोहनं क्रियते, तथा तथा तात्कालिकसुखस्य कुपरिणामोऽप्यनुभूयते निमज्ज्यते च सर्वैस्स्वार्थिजनैरुत्तरोत्तरं दुःखार्णवे, पत्यते च प्रदूषणस्य गर्ते। परं ततः परावर्तितुं यथा कर्तव्यं न तथा करोति पुरुषः अज्ञानवशात्, स्वार्थवशाच्च। प्राणिषु प्रमुखाणां पुरुषाणामस्मिन् विषये ज्ञानसंवर्धनं भवेदेतदर्थमयं मे प्रथमः प्रयासः।

यथोक्तमप्यत्र—

पर्यावरणकाव्यं यत्करोमि शास्त्रसम्मतम्।
समाधानैः समस्याभिः पूर्णं ज्ञानविवर्धकम्।

प्रभोर्विशिष्टा सृष्टिरियं रम्या, गम्या, मनोहारिणी च सृष्टेरारम्भादेव। अण्डज-पिण्डज-स्वेदजोद्भिज्जानां जगति जायमानानां प्राणिनां, पदार्थानां, ग्रह-नक्षत्राणां जीवनाय एव परस्पराश्रितं जीवनं प्रभुः प्रदत्तवान्। अतः पर्यावरण-प्रेम्णा प्रेरितः, प्रदूषणेन दुष्प्रभावितश्च भूत्वा, पर्यावरणप्रियाणां, संस्कृतानुरागिणां पुरतः पर्यावरणविषयकं पद्यबन्धं प्रथमं काव्यं ''पर्यावरणकाव्यम्'' प्रस्तुत्य मनो मे मोदते परम्। प्रतिकूलपरिस्थितावपि प्रलोभेन प्रेरितः, प्रयोजनप्रियः, प्रभोः प्ररचनायाः प्रमुखः प्राणी पुरुषः प्रकृतेर्विपरीतमाचरणं कृत्रिमां रचनां वा न कदापि कुर्याद्येन प्राकृतिकं सामाजिकं च पर्यावरणं दुष्प्रभावितं भवेदिति ममाभ्यर्थना।

'पृथिवीं परितः प्रासस्य दृश्यादृश्यतत्त्वस्य, प्रकृष्टस्यावरणस्य, जीवनाधायकतत्त्वस्य, प्रश्लिष्टस्य पंचतत्त्वस्य, प्रकृतिसंसाधनस्य, सामाजिकव्यवस्थायाश्च सुस्थितौ स्थितिरस्ति सर्वेषां हिताय। सर्वं विशुद्धं स्यात्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एतदवबोधयितुमाचरितुं जगति जनचेतनोत्पादनमेवास्य काव्यस्य प्रथमं प्रयोजनम्।

यथात्र—

प्रकृतेश्चेतनानां च मह्याः सन्तुलनाधिया।
शुध्यर्थं पंचतत्त्वानां पर्यावरणयोजनम्।

अद्यतनो मननशीलो मानवः स्वल्पस्य सुखस्य सिद्धये पर्यावरणविनाशाद् विरमेद्, विरतो भवेत्, पर्यावरणं पूर्णतः संरक्षेच्चेत्यर्थं विशदं विवेचितमत्र काव्ये। युवानो, युवत्यो, बाला, वृद्धाश्च पर्यावरणस्य प्ररक्षणाय प्रदूषणस्य प्ररोधाय चोपायं प्रकुर्युरग्रेसरा भवेयुः, कर्तनं रोपणं च समानुपातिकपद्धत्या प्रकुर्युरिति काव्यस्योपदेशः।

इदमवधेयं सर्वैरेव काव्यमाध्यमेन यन्न किमपि वस्तुजातं निरर्थकं निःसारं च जगति। भवतु तत् सूक्ष्मादपि सूक्ष्मं बृहत्तोऽपि बृहत्तरं, तरलं, द्रव्यं, चेतनमचेतनं दृश्यमदृश्यं वा

तद्यथा—

पर्यावरणनाशेन विरमेत् विरतो भवेत्।
मानवो मानवो भूत्वा कुर्यात् प्रकृतिरक्षणम्।।
संरक्षेत् दूषितो न स्याल्लोकः मानवजीवनम्।
न कोऽपि कस्यचिद्नाशं कुर्यादर्थस्य सिद्धये।।

वेदोपवेदोपनिषत्सु पुराणेषु भारतीयमहामनीषिभिः पूर्वपुरुषैः पर्यावरणस्य संरक्षणार्थं बहुचिन्तितं चेति विद्यते। परमपूज्यैर्वाल्मीकि–कालिदासादिकविभिः स्वकीये काव्ये प्रसंगानुसारं सरोवराणां, नदीनां, वनपर्वतानां, पादपानां, प्रसूनानां नवपल्लवानां महत्त्वं तेषामुपयोगिता च विवर्णिता वर्तते, समादरतां च भजते।

परं पर्यावरणप्रदूषणविषयकमाधुनिकं काव्यमाधुनिके परिप्रेक्ष्ये नैकेनापि निगदितमुपलभ्यते इदानीं यावत् यत्र समग्रतया पर्यावरणस्य विभिन्नस्य रूपस्य, प्रदूषणस्य विभिन्नस्य च रूपस्य विशदं वर्णनं समुपलब्धं स्यादेकत्र ससमाधानम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कतिपयेभ्यो वर्षेभ्यो निरन्तरं संस्कृतविद्वद्भिः पर्यावरणविज्ञैः सामाजिकैः सामान्यपुरुषैः विशिष्टैश्च पुरुषैः सह विचारचर्चां कृत्वा विभिन्नानामद्यतनानां पुस्तकानां, विभिन्नानां लेखानां, पत्रपत्रिकाणामवगाहनं कृत्वा स्वानुभूत्या च यत्प्राप्तं तन्महता आयासेन काव्येऽस्मिन् समाहितम्।

पर्यावरणकाव्यमिदं भागत्रये विभाजितं वर्तते। प्रथमो भागः, प्राकृतपर्यावरणविषयकः। अत्र षडध्यायाः सन्ति। प्रथमाऽध्यायद्वये पर्यावरणस्य विशुद्धस्वरूपस्य, पर्यावरणस्य प्रदूषितस्य स्वरूपस्य च वर्णनं विद्यते। तृतीयतः षष्ठाध्यायपर्यन्तम् आधुनिकनिर्माणेन प्राप्तस्य प्रदूषणस्य चर्चा चर्चितास्ति। प्रदूषणरोधिन उपाया अपि वर्णिताः सन्ति।

यथा—

वृक्षाणां रोपणे वृद्धौ वर्धने रक्षणे सदा।

भाव्यं हि तत्परैः सर्वैर्वृक्षाः सर्वोपकारकाः॥

काव्यस्य द्वितीये भागे सप्तमोऽष्टमश्चाध्यायौ स्तः। यत्र सप्तमोऽध्यायः सामाजिकपर्यावरणस्य मौलिकं स्वरूपं प्रस्तौति। अष्टमोऽध्यायश्च समाजिकपर्यावरणस्य प्रदूषितं स्वरूपं प्रस्तौति।

काव्यस्य तृतीयो भागः समस्यासमाधानमूलात्मको वर्तते। यत्र नवमोऽन्तिमाध्यायः परिपूर्णतां याति। अस्य काव्यस्य भाषा सरला बोधगम्या चास्ति, येन पाठकाः सारल्येन काव्यानन्दं प्राप्नुयुः। पर्यावरणस्य संरक्षार्थं यत्नं प्रकुर्युश्च। काव्यविषयकः पाठकानां परामर्शः सादरं स्वीकार्यः ग्राह्यश्च। संशोधनसम्मतिं प्रदाय अनुगृह्णन्तु पाठकाः इति मम निवेदनम्।

काव्यस्य प्रपूर्तौ सहयोगप्रदातृभ्यः स्वकीयां हार्दिकीं कृतज्ञतां प्रकटयामि, धन्यवादान्, च प्रयच्छामि। विनिवेदये च पाठकान्—

परब्रह्मणः प्रकृतिः पालनीया

समाजस्य शान्तिः सदा वर्धनीया।

धरित्री धरेयं सुकाम्या सुरम्या

प्रशस्या सुपूज्या नरै रक्षणीया॥

॥इति शम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्वपीठिका

परि + आङ् + वृ + ल्युट् (अन) = पर्यावरण।

परि, आ उपसर्ग पूर्वक वृ धातु से अन प्रत्यय करने पर 'पर्यावरण' शब्द निष्पन्न होता है।

पर्यावरण का सामान्य अर्थ होता है– 'आच्छादन'। इसे आच्छादन, आवरण, घेरा, ढक्कन आदि भी कहा जा सकता है, जो हमें चारों ओर से आच्छादित करता है। परन्तु अपने विशिष्ट अर्थ में पर्यावरण प्राकृतिक पदार्थों एवं सामाजिक व्यवहारों का वह विशुद्ध, मौलिक आच्छादन (घेरा) है जिसमें रहकर प्रकृति और पुरुष दोनों ही सदैव सुख की परम अनुभूति करते हैं।

प्र + दूष् + ल्युट् (अन) = प्रदूषण

प्र उपसर्ग पूर्वक दूष् धातु से अन प्रत्यय करने पर 'प्रदूषण' शब्द निष्पन्न होता है।

प्रदूषण का सामान्य अर्थ होता है 'विकृति'। इसे विकृति, गंदगी, मलिनता, अपवित्रता, विष, उच्छृंखलता, पापाचार, भ्रष्टाचार, कदाचार, अप्रतिष्ठा आदि भी कहा जा सकता है। परन्तु पर्यावरण प्रदूषण के संदर्भ में 'प्रदूषण' से मेरा अभिप्राय तात्कालिक भौतिक सुख सुविधा के लिए मानवनिर्मित नानाविध साधनों, यन्त्रों, वाहनों, आहार विहारों, आचार विचारों, उपासना पद्धतियों, वाग्व्यवहारों, सामाजिकं व्यवहारों आदि से है।

जब यही प्रदूषण विकरालरूप धारण करके हमारे चारों ओर के जीवन को दुष्प्रभावित, विषाक्त बना देता है तब इसे ही पर्यावरण प्रदूषण कहा जाता है। यह पर्यावरण प्रदूषण आज के वैज्ञानिक युग की उपज है।

आज के भौतिकवादी युग में उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही जनसंख्या की उदरपूर्ति एवं सुख साधन की पूर्ति के लिए मानव, प्रकृति का निर्दयता पूर्वक दोहन व शोषण कर रहा है। यदि गाय, भैंस दूध नहीं देतीं तो सूई लगाकर अप्राकृतिक पद्धति से मानव दुग्धदोहन कर रहा है। भूमि में रसायनिक एवं भूमि पर कीटनाशक दवाओं का प्रयोग कर रहा है। पंचतत्त्व से निर्मित प्राकृतिक पदार्थों को कृत्रिम रूप देकर, उनका दोहन व शोषण करके विकासोन्मुख क्रिया कलापों दंभ भरने लगा है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस कल-युग में गर्भाधान से लेकर अंतिम संस्कार तक की क्रियाएँ यन्त्रों से चालित हो रही हैं। प्रातःकालीन नित्य क्रिया से लेकर शयनकालीन तक की क्रियाएँ कृत्रिम उपकरणों एवं मशीनों द्वारा चालित हो रही हैं। सर्वसमर्थ प्रकृति को विज्ञ प्राणी ने कृत्रिम गतिविधियों से अक्षम बना दिया है। आज का अधीर मानव द्रुतगति से आकाश पाताल एक कर तत्क्षण सर्वसुख पा लेना चाहता है। वह नेति-नेति को इति-इति सिद्ध करने में लगा है। प्रकृति सिद्ध सिद्धान्तों को असिद्ध और असिद्ध को सिद्ध करने में लगा है। कर्तन और रोपण इच्छानुसार कर रहा है। मानव स्वयं सबका उपभोक्ता बन गया है।

आशा बलवती होती है। इसी बलवती आशा के बल पर सदियों से हमारे पूर्वपुरुष विभिन्न शास्त्रों में, वेदोपनिषदों में, पुराणों में तथा अन्य काव्यों में प्रदूषणरोधी उपाय निर्दिष्ट करते आये हैं। जैसे पेड़ों की उपयोगिता, पेड़ों को पुत्रवत् पालना, यज्ञ हवनादि, मन्त्रोच्चारण पूर्वक नियमित करना, त्यागपूर्वक उपभोग करना, सब खुशहाल रहें का भाव सदा रखना आदि। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में भी विभिन्न ऋतुओं की चर्चा करते हुए उसके प्राकृतिक महत्त्व को सविस्तार बताया गया है।

प्राचीन भारत में सम्पूर्ण क्रियाविधि को ईश्वर द्वारा निर्मित धर्म कहकर उनका पालन करने को कहा गया ताकि पर्यावरण प्राकृतिक रूप में रह सके। खाद्यान्न को परब्रह्म की संज्ञा दी गई। रस को परमात्मा कहा गया। विश्व को एक परिवार कहा गया।

इसी शृङ्खला में मेरा भी अत्यल्प प्रथम प्रयास है यह लघुकाव्य कृति 'पर्यावरण काव्यम्'। यह पर्यावरण के समस्त पहलुओं को समेटे हुए है। इसमें समस्या भी है कारण भी है निदान भी है और समाधान भी है। दो से अधिक वर्षों के अथक अनवरत प्रयास का सुखद परिणाम है यह काव्य। कल्पना से परे जन जीवन तथा व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर लिखा गया यह काव्य है। कई स्थलों की यात्रा मैंने स्वयं की है, दृश्यों का अवलोकन स्वयं किया है, विज्ञों, अल्पज्ञों का मत लिया है व स्वदेशी एवं विदेशी पर्यटकों से इस विषय पर चर्चा की है, पुस्तकों व लेखों का अवगाहन किया है तथा चिन्तन मनन करके उन्हें श्लोक का रूप दिया है। इसे गेयता प्रदान की है। मेरी प्रबल इच्छा थी कि मैं प्रथम पर्यावरण मूलक स्वतंत्र गेय काव्य की रचना करूँ इसलिए सुधी पाठकों के समक्ष 'पर्यावरण काव्यम्' नामक यह काव्य प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

यह काव्य तीन भागों में विभक्त है, जिनमें कुल नौ सौ श्लोक हैं। प्रथम भाग में प्रथमतः छः अध्याय हैं। प्रथम अध्याय प्राकृतिक पर्यावरण से संबंधित है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इसमें पर्यावरण की परिभाषा, पर्यावरण के मूलस्वरूप पंचतत्त्वात्मक सृष्टि आदि का वर्णन है। प्राकृतिक एवं कृत्रिम (मानव निर्मित) पर्यावरण के अच्छे और बुरे परिणामों को चित्रित किया है।

द्वितीय अध्याय 'प्राकृतिक प्रदूषण' से संबंधित है। इसमें प्रदूषण के कारकों तथा उसके दुष्परिणाम का वर्णन है। इसमें दूषित प्लास्टिक से निर्मित वस्तुओं के उपयोग को आत्मघाती बतलाया गया है। प्रदूषण के प्रमुख चार प्रकारों-ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और भूमि प्रदूषण का परिचय देकर इसमें प्रदूषण रोधी उपाय भी बतलाए गए हैं।

तृतीय अध्याय 'ध्वनि प्रदूषण' से संबंधित है। इसमें शब्द को ब्रह्म तथा ध्वनि को काव्य की आत्मा कहा गया है। आगे कहा गया है कि वाग्व्यवहार के बिना सांसारिक व्यवहार असंभव है। परन्तु ध्वनि विस्तारक एवं नानाविध ध्वनियंत्रों के उपयोग ने पर्यावरण को ध्वनि प्रदूषण से भर दिया है। नगरों में यह आम बात है। कर्णप्रिय ध्वनि सभी सुनना चाहते हैं। इसलिए ऐसी ध्वनि प्रयुक्त की जाए जो सुखद हो, दुखद नहीं।

चतुर्थ अध्याय 'वायु प्रदूषण' से संबंधित है। इसमें मानव निर्मित यंत्रों, संयन्त्रों, विमानों, वाहनों, कल कारखानों से निकलने वाले जहरीले धुओं से होने वाले वायु प्रदूषण का वर्णन है। वायु प्रदूषण प्राणदायक पेड़ों के लिए भी विनाशक है।

दीपावली पर छोड़े जाने वाले पटाखे एक ही रात्रि में अपरिमित मात्रा में जहरीले तत्त्व वातावरण में छोड़ते हैं। परमाणु विस्फोट, उपग्रह प्रक्षेपण ये सभी वायु प्रदूषण कारक तत्त्व हैं। ओजोन परत में छिद्र होना, उष्णता का बढ़ना व ऋतुचक्र का परिवर्तित होना वायु प्रदूषण की अभिवृद्धि को संकेतित करते हैं जिन्हें नियन्त्रित करने की नितांत आवश्यकता है। पर्यावरणविदों की बात पर गौर करें और प्राकृतिक पर्यावरण में जीना सीखें।

पंचम अध्याय 'जल प्रदूषण' से संबंधित है। इसमें जल को जगत का आधार बताकर जल को दूषित होने से रोकने की बात कही गई है। जीवनदायिनी नदियाँ मलवाहिनी बन गई हैं। जलस्रोत प्रदूषित हो चुके हैं। नदियों की सफाई प्रकृति स्वयं करेगी यदि हम उन्हें प्रदूषित न करें तो। आज जल को हर हाल में हमें विशुद्ध रूप में रखने की आवश्यकता है। समुद्र मंथन करना, उसमें जैविक एवं अजैविक कचरा फेंकना बहुविनाशक सिद्ध होता जा रहा है।

षष्ठ अध्याय 'भूमि प्रदूषण' से संबंधित है। इसमें भूमि प्रदूषण के प्रमुख कारकों का वर्णन किया गया है तथा उससे होने वाली हानि जैसे भूमि का

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपरदन, भूमि का अनुर्वर होना, खाद्यान्न प्रदूषित होना आदि का वर्णन किया गया है। साथ ही प्रदूषण रोधी उपाय भी बतलाये गये हैं। जैसे अधिकाधिक वृक्ष लगाना, नियत स्थान पर मलमूत्र, कूड़ा-कचरा आदि विसर्जित करना। इसमें सन्देह नहीं है कि इन उपायों से ही भूमि शुद्ध और उपजाऊ रह पायेगी और समस्त प्राणियों की उदरपूर्ति सम्यक् हो पाएगा तथा हमारा जीवन सुलभ हो पाऐगा।

सप्तम एवं अष्टम अध्याय द्वितीय भाग में समाहित हैं जिनमें सामाजिक पर्यावरण एवं सामाजिक प्रदूषण का विवेचन आज के संदर्भ में किया गया है।

नवम अध्याय 'समस्या समाधान' से संबंधित है। जो तृतीय भाग को समेटे हुए है। यह काव्य का अंतिम अध्याय है। इसमें पर्यावरण एवं प्रदूषण से संबंधित समस्याओं का वर्णन और उन का समाधान प्रस्तुत किया गया है। गाँवों के देश भारत में यदि गाँवों पर ध्यान केन्द्रित करके वहाँ आवश्यक सुविधाएं सुलभ करवा दी जाएँ तो शहरों का भार कम होंगास मलिन और गंदी बस्तियों से छुटकारा पाया जा सकेगा। इस प्रकार गाँव और शहरों में संतुलन बनाते हुए हम स्वस्थ जीवन जी सकेंगे। इससे सभी प्रकार के प्रदूषण में कमी भी आएगी। प्रकृति समाज और एवंम् संस्कृति व सभ्यता में सन्तुलन कायम रह पाएगा।

अस्तु, मूल काव्य की भाषा संस्कृत है। इस रचना के पीछे मेरा उद्देश्य जीवन दायिनी प्रकृति और ज्ञानदायिनी संस्कृत भाषा के प्रति जागरूकता पैदा करना है। पाठक की सुगमता के लिए हिन्दी में संक्षिप्त टीका भी दी गई है क्योंकि विशेष अर्थ तो अध्येता के अधीन होता है।

पाठक गण से मेरा विनम्र निवेदन है कि वे काव्यगत त्रुटियों पर उपहास न करके संशोधन सम्मति प्रदान कर मुझे कृतार्थ करें। भागदौड़ की जिन्दगी में समय निकालकर काव्य लिखना सरल नहीं है। कभी शीघ्रतावश तो कभी प्रमादवश त्रुटि हो ही जाती है।

अशोक कुमार शुक्ल

दीपावली
२५.१०.२००३
३६/बी, डी.डी.ए फ्लेट्स
आनन्द विहार, दिल्ली ११००९२

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अध्याय-सूची

अध्यायः	विषयः	श्लोकसंख्या	पृ०सं०
प्रथमः	प्राकृतिकपर्यावरणम्	१-८५	१-१७
द्वितीयः	प्राकृतिकप्रदूषणम्	१-५१	१८-२७
तृतीयः	ध्वनिप्रदूषणम्	१-५३	२८-३८
चतुर्थः	वायुप्रदूषणम्	१-६९	३९-५१
पंचमः	जलप्रदूषणम्	१-१०१	५२-७०
षष्ठः	भूमिप्रदूषणम्	१-९२	७१-८७
सप्तमः	समाजिकपर्यावरणम्	१-८९	८८-१०८
अष्टमः	सामाजिकप्रदूषणम्	१-१०८	१०९-१२९
नवमः	समस्यासमाधानम्	१-२५१	१३०-१७४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥अथ प्रथमोऽध्याय:॥

प्राकृतिकपर्यावरणम्

परब्रह्मन् प्रभो पाहि सुपर्यावरणप्रिय।
भूमिं जलं नभो वायुं पुनातु पावकं ध्वनिम्॥१॥

पर्यावरणप्रिय हे प्रभो! भूमि, जल, वायु, अग्नि और आकाश के साथ-साथ ध्वंनि को पवित्र रखकर पंचतत्त्वात्मक जगत् को पवित्र रखो।

वनगिरि: खगवृन्दसुपल्लवा:
प्रकृतिरम्यसुरम्यधरा नदी।
जलजपिण्डजतापजभूमिजो
भवतु पावनजीवनशोभनम्॥२॥

वन पर्वत, पल्लव, खगवृन्द, धरती, नदी, अण्डल, पिण्डज, तापज एवं भूमिज प्राणी प्राकृतिक अवस्था में रहें तथा प्राकृतिक एवं भूमिज प्राणियों का जीवन पावन हो।

प्रदूषणप्रदु:खेन बहुभिर्बहुधाभित:।
चेतयितुं नरान् रुग्णान् काव्यं कर्तुं समुत्सहे॥३॥

पृथ्वी पर चारों ओर व्याप्त नानाविध प्रदूषण की समस्या को झेल रहे रुग्ण मानव को जागरुक करने के लिए इस काव्य को लिखने में मैं प्रवृत्त हुआ हूँ।

प्रदूषणसमस्याभिस्त्रस्तान् ग्रस्तान् हि मानवान्।
उद्धर्तुं सर्वयत्नेन काव्यं कर्तुं समुत्सहे॥४॥

अपने चारों ओर विभिन्न रूपों में व्याप्त प्रदूषण से ग्रस्त एवं त्रस्त (भयभीत) मानव को पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से मैं यह काव्य रचना कर रहा हूँ।

अभूतपूर्वगत्याद्य प्रवर्धते प्रदूषणम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जीवनं कण्टकाकीर्णं पर्यावरणनिर्भरम्।।५।।

आज अभूतपूर्व गति से प्रदूषण बढ़ रहा है। इसलिए पर्यावरण पर निर्भर रहने वाला हमारा जीवन प्रदूषण के काँटों से घिर गया है।

पर्यावरणकाव्यं यत् करोमि शास्त्रसम्मतम्।

समाधानैः समस्याभिः पूर्णं ज्ञानविवर्धकम्।।६।।

यह ''पर्यावरण काव्य'' पर्यावरण की समस्या एवं उसके शास्त्र-सम्मत समाधान से पूर्ण एक ज्ञानवर्धक काव्य है।

प्रकृतेश्चेतनानां च मह्याः सन्तुलनाधिया।

शुध्यर्थं पंचतत्त्वानां पर्यावरणयोजनम्।।७।।

प्रकृति, चेतन तत्त्व और धरती के संतुलन को बनाये रखने के लिए तथा पंचतत्त्व को विशुद्ध रखने के लिए पर्यावरण का संयोजन प्रभु ने किया है।

टि० :- १. कालचक्रानुसार स्वतः प्रलय और स्वतः सृष्टि के अनवरत क्रम को चलते रहने देने के लिए प्रकृति प्रदत्त दृश्य तत्त्व मिट्टी, जल, वनस्पति जीव-जन्तु आदि एवं अदृश्य तत्त्व तथा उनमें प्राप्त होने वाले विभिन्न गैस जैसे - आक्सीजन, नाइट्रोज़न, कार्बन डाइऑक्साइड आदि का प्राकृतिक समानुपातिक घेरा पर्यावरण कहलाता है।

२- पंचतत्त्व में व्याप्त सूक्ष्म तत्त्वों की परिष्कृत उपस्थिति एवं क्रिया-प्रतिक्रिया पर्यावरण कहलाता है।

३- धरा, अन्तरिक्ष एवं गगन में गतिशील, दृश्य - अदृश्य, प्राकृतिक और कृत्रिम (मानव-निर्मित), सामाजिक और सांस्कृतिक क्रियाकलापों के परिष्कृत प्रतिफलन का आवरण पर्यावरण कहलाता है।

पृथिवीं परितो व्याप्य तामाच्छाद्य स्थितं च यत्।

जगदाधाररूपेण पर्यावरणमुच्यते।।८।।

पृथ्वी के चारों ओर व्याप्त होकर और उसे आच्छादित करके संसार की स्थिति के लिए जो कुछ भी आधार रूप में स्थित है, वही पर्यावरण है।

जगत्स्थितिविनाशाय पारिस्थितिकजीवनम्।

जैवाजैवेन यत्प्राप्तं पर्यावरणमुच्यते।।९।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संसार की संरचना, संसार की सत्ता एवं संसार के विनाश के कारक तत्त्वों की संसार में समानुपातिक उपस्थिति पारिस्थितिक जीवन कहलाता है। जिसके लिए प्रकृति ने जैव और अजैव तत्त्वों की सृष्टि की है। इनका कृत्रिमता से परे वास्तविक रूप में चारों तरफ बने रहना पर्यावरण कहलाता है।

टि० :- छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़ों से लेकर बड़े-बड़े जानवर तक पर्यावरण के भाग हैं। परन्तु बुद्धि में श्रेष्ठ मानव ने सबको अपने अधीन कर लिया है परिणाम स्वरूप मानव एक मात्र उपभोक्ता है और मानवेतर सब कुछ उसके उपभोग की वस्तु हैं। यही असंतुलन पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख कारण है।

प्राकृतकृत्रिमे रूपे द्वे प्राप्येते समन्ततः।
प्राकृतं पंचतत्त्वेन कृत्रिमं मानवैः कृतम्।।१०।।

पर्यावरण के दो रूप मिलते हैं - प्राकृतिक पर्यावरण और कृत्रिम पर्यावरण। प्राकृतिक पर्यावरण, पर्यावरण में पंचतत्त्व के रूप में स्वतः प्राप्त होता है। जबकि कृत्रिम पर्यावरण का निर्माण मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करता है।

परस्पराश्रितं धन्यं पारिस्थितिकजीवनम्।
जैवाजैवाश्च सम्मिल्य संसारं चालयन्ति भोः।।११।।

हे नर! एक दूसरे पर निर्भर करने वाला पारिस्थितिक जीवन (ecological life) धन्य है जिसमें जैव (living things) और अजैव (Non living things) दोनों ही मिलकर संसार को चलाते हैं।

प्राकृतस्य च रूपे द्वे जायमानं च संचितम्।
प्रयोज्यं सावधानेन जायमानं च संचितम्।।१२।।

प्राकृतिक पर्यावरण के भी दो रूप हैं - जायमान (जन्म लेने वाले) और संचित (प्राकृतिक पद्धति से स्वतः तैयार होकर प्रकृति में बने रहने वाले खनिज आदि)। इन दोनों का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए।

टि० :- पेड़-पौधे और प्राणी समय से जन्म लेते रहते हैं और समय से समाप्त होते रहते हैं इसलिये पर्यावरणविदों ने इन्हें जायमान पर्यावरण कहा है। दूसरी तरफ खनिज पदार्थ, पेट्रोल, डीजल, गैस, मिट्टी का तेल, रत्न आदि प्राकृतिक प्रक्रिया से

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तैयार होकर भंडार के रूप में जल, थल में मिलते हैं इसलिए वे संचित पदार्थ कहलाते हैं।

मृदा जलं वनं वन्यं जायमानो नरः पशुः।
छिद्यते रुह्यते काले प्रयोगं कुरु चेतसा।।१३।।

जायमान मिट्टी, जल, वन, वनसंपदा, पशु, और मानव आदि समय से पैदा होते हैं और समय सें नष्ट हो जाते हैं। इसलिए इनका उपयोग युक्तिपूर्वक किया जाना चाहिए।

खनिजाः कोयलास्तैलाः पेट्रोलडीजलादयः।
गैसादिकाः प्रयोक्तव्या जायन्ते न पुनः पुनः।।१४।।

कोयला, डीजल, पट्रोल, गैस, मिट्टी का तेल आदि खनिज पदार्थ बार-बार नहीं बनते। इसलिए इनका प्रयोग सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।

संचितजायमानानां प्रयोगन्तु तथा कुरु।
जैवाजैवपदार्थैर्न पर्यावरणदूषितम्।।१५।।

संचित एवं जायमान पदार्थों का इस्तेमा़ल इस तरह करना चाहिए कि जैव-अजैव पदार्थों के असंतुलन से पर्यावरण प्रदूषित न होने पाए।

यदि स्याद् दूषितं सर्वं पर्यावरणनिर्भरम्।
भूमिर्वायुर्जलं ज्योतिर्जायते नाशकारकम्।।१६।।

यदि पर्यावरण पर निर्भर करने वाले पदार्थ प्रदूषित हो गए तो भूमि, जल, वायु, और सूर्य सभी विनाशक बन जायेंगे।

अजैविकं विना नास्ति जीवनं जैविकस्य भोः।
गैसा अजैविकाः सन्ति जैविकाः पादपा मृगाः।।१७।।

जैव तत्त्व का जीवन अजैव तत्त्व पर निर्भर करता है। अजैव के बिना जैव का जीवन संभव नहीं है। (जैव प्राणवान होते हैं जबकि अजैव प्राणहीन होते हुए भी प्राण देते हैं, जीवन देते हैं) जैविक और अजैविक तत्त्वों का संतुलन ही पर्यावरण कहलाता है।

टि०:-जैव पदार्थ पेड़-पौधे जीव-जन्तु आदि हैं। और अजैव पदार्थ आक्सीजन, नाइट्रोज़न, लवण, प्रोटीन, प्रकाश कार्बन डाइऑक्साइड आदि हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पादपा भोजनं स्वीयं कुर्वन्ति रचयन्ति च।

मृगश्च पादपान् भुंक्ते कीटाश्च शवभोजिनः॥१८॥

पेड़-पौधे अपना भोजन स्वयं तैयार कर लेते हैं। जबकि मृग आदि पशु और मानव पेड़-पौधे, फल-फूल, मूल, घास, अनाज आदि को ही अपना भोजन बनाते हैं। इनके मृत हो जाने पर, सूखे, सड़े-गले शव को कीड़े-मकोड़े खाकर पर्यावरण को प्रदूषण से बचाते हैं और पर्यावरण को संतुलित रखते हैं।

टि० :- प्राणियों के तीन वर्ग वैज्ञानिकों ने किए हैं- स्वपोषी, परपोषी, और विघटक।

उत्पादकोपभोक्तॄणां भौतिकानां न दूषितम्।

पारिस्थितिकतन्त्रे स्यात् संतुलनं सुजीवनम्॥१९॥

उत्पादक (स्वपोषी) और उपभोक्ता (परपोषी) मानव द्वारा निर्मित भौतिक पदार्थों से पर्यावरण प्रदूषित न होने पाए इसके लिए पारिस्थितिक तन्त्र में संतुलन परमावश्यक है।

टि० :- उत्पादक, उपभोक्ता और भौतिक पदार्थों में संतुलन के चक्र का बने रहना ही पारिस्थितिक तन्त्र (Ecological system) कहलाता है।

वायोरावरणं वायुमण्डलं गदितं विभे।

जलस्यावरणं भूमौ जलमण्डलवन्दितम्॥२०॥

हे विभे! हमारे चारों तरफ पाया जाने वाला वायु का आवरण (घेरा) वायुमंडल कहलाता है और जल का आवरण जलमण्डल कहलाता है।

स्थलस्य निश्चितो भागः स्थलमण्डलमुच्यते।

त्रयाणां यो समाहारः जैवमण्डलमुच्यते॥२१॥

पृथ्वी का सूखा भाग स्थलमंडल कहलाता है। वायु, जल, एवं स्थल इन तीनों मंडलों को मिलाकर जैवमंडल बनता है। जीवन के लिए इन तीनों का होना अनिवार्य है।

मानवैर्जीवनं धन्यं कर्तुं प्राप्तुं च शं सुखम्।

क्रियते कृत्रिमं नित्यं पर्यावरणशोभनम्॥२२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मानव अपने जीवन को सुख सुविधा से सम्पन्न करने के लिए प्रतिदिन कृत्रिम पर्यावरण का निर्माण करता है।

कृत्रिमसाधनेनाद्य सम्भवं सर्वजीवनम्।
कृत्रिमसाधनं त्यक्त्वा दुष्करं जीवनं वरम्।।२३।।

कृत्रिम साधन से ही हम सबका जीवन आज संभव है। उसके बिना जीवन जीना ही कठिन है।

कृषिव्यापारवासानां क्रिया यन्त्रेण चालिता।
अङ्गप्रक्षालनं त्वद्य यन्त्रेण क्रियते नरैः।।२४।।

आज का मानव यन्त्र चालित जीवन जी रहा है। कृषि, व्यापार, आवास का कार्य यन्त्र से हो रहा है। इतना ही नहीं, शरीर के प्रत्येक अंग का मार्जन एवं प्रक्षालन भी मानव यन्त्र से कर रहा है।

पाचकं क्षालकं यन्त्रं मार्जकं कार्यसाधकम्।
शीतोष्णदायकं यन्त्रं प्रयुंक्ते प्रत्यहं पुमान्।।२५।।

खाना पकाने, कपड़ा धोने, साज-सज्जा करने, घर-द्वार धोने, झाड़ू लगाने आदि का कार्य यन्त्र से हो रहा है। सर्दी में गर्मी और गर्मी में शीतलता प्रदान करने वाले यंत्रों का मानव सर्वत्र इस्तेमाल कर रहा है।

प्रदूषितं जलं वायुं भोजनं वसनादिकम्।
कृत्रिमसाधनेनाद्य संशोध्य सेवते नरः।।२६।।

प्रदूषित जल, प्रदूषित वायु, प्रदूषित भोजन, प्रदूषित वस्त्र आदि को मानव, कृत्रिम साधनों से शुद्ध कर प्रयोग में ला रहा है।

गर्भाधानं च विध्वंसः क्रियते कृत्रिमेण च।
कोशिकया तु रूपाणि क्रियन्ते नातिखेददम्।।२७।।

आ । गर्भाधान से लेकर गर्भध्वंस तक की क्रिया यन्त्र से संचालित हो रही है। कृत्रिम पद्धति से क्लोनिंग (प्रतिकृति) पद्धति द्वारा एक तरह के अनेक जीव निर्मित किए जाने लगे हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

टि० :- सन्तानोत्पत्ति के लिए आज स्त्री को नौ माह तक गर्भ में बच्चे को धारण करने की आवश्यकता नहीं रही और न ही पुरुष के द्वारा स्त्री के गर्भ में सहवास से वीर्य स्थापन की आवश्यकता रही। यन्त्र सारी क्रिया करने में सक्षम हो गए हैं।

कृत्रिमसाधनेनाद्य नारी प्राप्नोति पौरुषम्।

पुरुषो लभते स्त्रीत्वं वर्णशंकरतेड्यते।।२८।।

कृत्रिम साधन (यंत्रों) द्वारा स्त्री-पुरुष बन रही है और पुरुष स्त्री बन रहा है। वर्णशंकर पद्धति (अलग-अलग जाति के स्त्री-पुरुष द्वारा सन्तानोत्पत्ति) ने समाज में पूज्य स्थान प्राप्त कर लिया है।

प्रकृतिं पंचतत्त्वं च प्रदूष्य मानवः सुधीः।

करोति कृत्रिमं स्वीयं पंचतत्त्वात्मकं जगत्।।२९।।

प्रकृति एवं पंचतत्त्व को प्रदूषित कर मानव कृत्रिम पंचतत्वात्मक जगत की संरचना कर रहा है।

वारि वायुर्वनं विद्युत् पादपाः प्रकृतिस्तथा।

आहारो व्यवहारश्च समाजः कृत्रिमः प्रिये।।३०।।

जल, वायु, वन, अग्नि, वृक्ष और प्रकृति ही नहीं बल्कि हे प्रिये, समाज में मानव एवं पशु का आहार-व्यवहार तक कृत्रिम हो गया है।

प्राकृतं शुद्धसंरूपं स्वयम्भूः कृतवान् ध्वनिम्।

पर्वतं गगनं भूमिमन्नं वायुं जलं जगत्।।३१।।

स्वयम्भू भगवान ने प्रकृति को तथा पर्वत, आकाश, भूमि, वायु, ध्वनि, जल एवं जगत को विशुद्ध रूप में बनाया है।

प्राकृतिकं स्वरूपं तत् सुन्दरं सुखवर्धकम्।

जायते शुद्धसंरूपे दूषितं चात्र तिष्ठति।।३२।।

सुन्दर एवं सुखवर्धक प्राकृतिक स्वरूप अपने विशुद्धरुप में ही उत्पन्न होता है, दूषित तो बाद में होता है।

ग्रहा नभो जलं वायुर्नद्यो वन्या धरा मृदाः।

स्वाभाविक-स्थितिं प्राप्य तिष्ठन्ति स्म नराः खगाः।।३३।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आज से पूर्व आकाश, ग्रह, नक्षत्र, हवा, नदियाँ, वन-संपदा, धरती और उसकी मिट्टी, मानव और पशु-पक्षी, सभी स्वाभविक स्थिति में रहते थे।

स्वकर्म साधयन्ति स्म हस्तक्षेपं विना तदा।

पर्यावरणदुष्टं न रम्यं गम्यं सुकामदम्।।३४।।

सभी तत्त्व बिना हस्तक्षेप के अपना-अपना कार्य करते थे। पर्यावरण सुन्दर, सुगम, और शान्तिप्रद था, प्रदूषण का नामोनिशान तक नहीं था।

मेघानां वर्षणं सम्यक् सूर्योष्मा सुखदायिका।

ऋतुचक्रं च तत्पूतमनुकूला नदी धरा।।३५।।

बादल समय से खूब बरसता था। सूर्य की उष्मा सुखदायक होती थी। ऋतुचक्र समय से चलता था। नदियाँ और उनकी धाराएँ पवित्र होती थी। सब कुछ प्रकृति के अनुकूल था। प्रदूषित कुछ भी नहीं था।

जलं पूतं स्थलं पूतं पूतं पवनमण्डलम्।

सुवातावरणं पूर्वं सृष्टिर्मनोहरा प्रिया।।३६।।

पहले जल पवित्र था। भूमि पवित्र थी। गगनमंडल पवित्र था। वातावरण मोहक था। सृष्टि प्रिय थी, मनोहर थी।

जङ्गलानि धरायास्तु प्राणपराणि सन्ति वै।

प्रकृतिः पुष्पिता पूर्वं पृथिवी विश्वमोहिनी।।३७।।

सुन्दर जंगल धरा के आधार थे, जीवन थे। प्रकृति हरी-भरी थी, पुष्पित व पल्लवित थी। धरा विश्वमोहिनी थी।

तटिन्यो मातरोऽस्माकं पूज्याः सेव्या अहर्निशम्।

सेव्यो वायुः सदैवासीच्छोधनं भवति स्वयम्।।३८।।

पावन नदियों को माता मान कर उनकी पूजा अर्चना की जाती थी। उनके तटों की स्वच्छता का ध्यान रखा जाता था। वायु विशुद्ध बहती थी। इनकी शुद्धि का काम स्वतः होता था।

निर्मलजलतत्त्वानि वायोस्तत्त्वानि सर्वदा।

धराग्न्याकाशतत्त्वानि सर्वाण्यासन् यथायथम्।।३९।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जल में पाए जाने वाले प्राणधारक जल-तत्त्व, वायु में पाए जाने वाले आक्सीजन आदि वायु तत्त्व, धरती - आकाश में पाए जाने वाले प्राणधारक तत्त्व यथावत रहते थे, इसलिए पर्यावरण शुद्ध व जीवनदायी होता था।

पुष्पाणां सौरभैर्नित्यं पर्यावरणकामदम्।
भवति स्म सदोद्याने पक्षिणां कूजनं वरम्।।४०।।

फूलों की खुशबू से पर्यावरण महक उठता था। वन-उपवनों में कोयलों की कूक एवं चिड़ियों की चहचहाहट अनवरत सुनाई पड़ती थी।

पुष्पाणां सौरभं नीत्वा प्रयच्छन्तः शुभं फलम्।
मधुकरा भवन्ति स्म कस्य नोन्नतिकारकाः।।४१।।

फूलों की सुगन्धी को ग्रहण करके शुभ फल देने वाले भौरें किसकी उन्नति नहीं चाहते थे।

ऋषितपोस्थलान्यासन् पुष्पितैः पर्णपूरितैः।
वृक्षैर्विलसितैः पूर्वं पावनं जनजीवनम्।।४२।।

वनवासी ऋषिमुनियों के तपस्या स्थल हरे-भरे पत्तों से और रंग-बिरंगे फूलों व फलों से लदे वृक्षों से विलसित रहते थे। सबका जीवन पावन था।

शाकुन्तलादिकाव्यानां भूमिरासीद् महावनम्।
पर्यावरणमासीदि्ध मधुगन्धादिपूरितम्।।४३।।

कविकुलगुरु महाकवि कालिदास की अमर कृति अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मेघदूत, रघुवंश आदि ने मधु और सुगन्ध से भरपूर प्राकृतिक पर्यावरण का आश्रय लेकर के ही महान होने का गौरव प्राप्त किया।

यज्ञकर्मसु संलिप्ता ऋषयो गतकल्मषाः।
प्रदूषणस्य नामापि नैवासीन्न प्रकल्पितम्।।४४।।

यज्ञ कर्म से कल्मष को दूर कर यज्ञ कर्म में लीन रहने वाले पवित्रात्मा ऋषियों ने तो इस प्रदूषण का नाम भी नहीं सुना था और न ही इसकी कल्पना ही की थी।

रम्याः सरोवरा मेघा गिरिनद्यः खगा मृगाः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कवीनां कविताधाराः कवितासु लयङ्गताः॥४५॥

कवियों की रचना के आधार माने जाने वाले सुन्दर सरोवर, मेघ, वन, पर्वत, नदी, खग, मृग, आदि आज कविताओं में ही विलीन हो गए।

यदा वनं प्रयान्ति स्म लोका रंजनहेतवे।
स्वागतं व्याहरन्ति स्म लता नताः फलैर्युताः॥४६॥

जब मानव मनोरंजन हेतु या चौथेपन में वन गमन करते थे तब वन का प्रत्येक तत्त्व उनका स्वागत करता था। फलों से लदे हुए वृक्षों की लताएँ झुककर उनका स्वागत करती थीं।

केदारा गृहशोभाश्च पादपाः पशवः खगाः।
निम्बाम्रकदलीजम्बूब्रीहिगोंधूमसर्षपाः॥४७॥

घरों की शोभा नीम, आम, केला, जामुन आदि के हरे भरे पेड़ों से, धान, गेहूँ, सरसों आदि फसलों से लहलहाते खेतों से तथा द्वार पर बंधे पशुओं और तोते आदि पक्षियों के कलरव से होती थी।

यथा मृगास्तथा सिंहाः पशवः पक्षिणो जनाः।
संतुलनं सदैवासीत् पारिस्थितिकजीवने॥४८॥

तब जितना हिरण का महत्त्व था उतना ही सिंह का था। पशु, पक्षी और मनुष्य सब संतुलित मात्रा में थे इसलिए पारिस्थितिक जीवन में संतुलन था।

जगत्स्थितिविनाशाय पारिस्थितिकजीवनम्।
जैवाऽजैवेन तत्प्राप्तं जगतः सुखहेतवे॥४९॥

संसार की सत्ता और विनाश के क्रम में व्यवधान न आने पाए इसी प्रयोजन से प्रभु ने पारिस्थितिक जीवन को बनाया है तथा संसार के सुख की कामना से, जैव और अजैव पदार्थों की रचना की है।

स्वकर्मणिरताः सर्वे प्रकृतिः प्राणिनस्तदा।
प्राप्यते स्म जलं पूतं वायुर्वाति स्म प्राणदः॥५०॥

प्रकृति और प्राणी सभी अपने-अपने कर्म में लगे रहते थे। जल शुद्ध था और वायु प्राणवान थी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रजनी राजते स्मर्क्षैर्दीप्यते द्युमणिर्दिने।

शुभ्रांशुः शोभते शुभ्रः पर्यावरणहेतवे।।५१।।

दिन का मणि सूर्य दिन में चमकता था। तो रात्रि में चन्द्रमा अपनी किरणों से शीतल चाँदनी बिखेरता था। सब कुछ पर्यावरण के अनुकूल था। तारों से सुशोभित रात्रि सर्वदा अनुपम छटा बिखेरती थी।

मार्गमुभयतो वृक्षा राजन्ते स्म सुकोमलाः।

पत्रपुष्पफलैर्नित्यं श्रान्तानां श्रान्तिमोचकाः।।५२।।

मार्ग के दोनों ओर स्थित सुन्दर और सुकोमल हरे-हरे पत्तों, फूलों और फलों से लदे हुए सुन्दर वृक्ष थके हुए यात्रियों की थकान दूर करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

ब्रूते विश्रम्यतां वृक्षः पथिक! शृणु मे वचः।

नत्वा शीतलछायायां त्वदर्थं मम जीवनम्।।५३।।

ये वृक्ष झुककर अपनी भाषा में संभवतः यह कहा करते थे कि हे पथिक! मेरा निवेदन सुनो और मेरी शीतल छाया में विश्राम करो, क्योंकि वृक्ष का जीवन है ही तुम्हारे लिए।

अपरः पादपो ब्रूत आगच्छ सेव मे फलम्।

सत्कारय फलं मेऽस्ति छायायां शीतले तरौ।।५४।।

इसी तरह दूसरा वृक्ष भी सेवाभाव से ओतप्रोत होकर प्रलोभन देते हुए कहता था कि हे पथिक, मेरी सेवा स्वीकार करो। मेरे फल का सेवन करो। मेरी शीतल छाया और फल अतिथि सत्कार के लिए ही हैं।

छायाश्रयप्रदातारो वृक्षाश्च वर्धनं यदा।

प्राप्नुवन्ति तदा तेषां जीवनं सफलं जगत्।।५५।।

वृक्ष जब अपनी छाया एवं आश्रय जन-जीवन को प्रदान करते हुए वृद्धि को प्राप्त करते हैं तभी उनका सांसारिक जीवन सफल होता है।

भवतः कामनापूर्तिं कर्तुं जातोऽस्मि भूतले।

पालय रक्ष मां नित्यं कर्तनं मम मा कुरु।।५६।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वृक्ष बताते हैं, कि हे नर! तुम्हारी कामनाओं की पूर्ति के लिए धरती पर हमारा जन्म हुआ है। इसलिए हमारा पालन-पोषण करो, हमारी रक्षा करो, हमें मत काटो।

उपकृतो मनुजः परितुष्यति
तरुवनैः फलदैर्जलनिर्मलैः।
झटिति ते कथयन्ति ध्रुवं त्यज,
न कुरु कर्तनकर्म प्ररक्ष नः॥५७॥

वृक्षों, वनों एवं निर्मल जल से उपकृत मानव खुश होकर किये हुए पर इतराता है जबकि व्यथित वृक्ष कहते हैं कि हे नर! हमें काटो मत, हमारी रक्षा करो।

मयि गते प्रदाता न वायोः प्राप्स्यसि भूतले।
शुद्धस्य प्राणदस्येहाभावो स्थास्यति सर्वदा॥५८॥

पेड़ कहते हैं कि हमारे नहीं रहने पर पृथ्वी पर प्राणदायक पवन देने वाला भी कोई नहीं बचेगा।

टि० :- वृक्ष की हम सब को यह चेतावनी है कि वृक्ष की अंधा-धुंध कटाई से कार्बन-डाइ ऑक्साइड को ग्रहण कर शुद्ध ऑक्सीजन युक्त हवा देने वाला कोई नहीं बचेगा।

मेघानां वर्षणं काले भविष्यत्यत्र संशयः।
वर्षाभावे जलाभावो जलाभावे प्रदूषणम्॥५९॥

पेड़ों के न रहने पर बादल बरसेगा, इसमें संदेह है। फिर तो वर्षा के अभाव में जल का अभाव होगा और जल के अभाव में प्रदूषण फैलेगा।

टि० :- आज धरती का जलस्तर उत्तरोत्तर घटता जा रहा है जो हमारे लिये चिन्ता का विषय है।

अन्नौषधेरभावं च द्रक्ष्यन्ति पुरुषाः सदा।
जलान्नपवनाभावे हाहाकारो भविष्यति॥६०॥

फिर जल के अभाव में अनाज और औषधि का अभाव मानव अपनी आँखों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

से देखेगा शुद्ध जल, शुद्ध वायु एवं शुद्ध खाद्यान्न के अभाव में सर्वत्र हाहाकार मचेगा।

अतिवृष्टिरनावृष्टिर्भूस्खलनं क्षरणं भुवः।
भवति नाशकं सर्वं पर्यावरणदूषिते॥६१॥

पर्यावरण के प्रदूषित होने से ही कभी अतिवृष्टि तो कभी अनावृष्टि, भूस्खलन एवं भूक्षरण का भयानक सर्वविनाशक तांडव देखने को मिलता है।

जनानां वर्धमानानां प्रपूर्तौ सर्वसाधनम्।
न तथा न्यूनतां यातु पर्यावरणखण्डितम्॥६२॥

उत्तरोत्तर बढ़ती हुई जनसंख्या की बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का इतना दोहन न किया जाये कि पर्यावरण का अस्तित्व विखण्डित हो जाए।

द्रक्ष्यन्ति मूल्यदानेनाप्यप्राप्यं निर्मलं जलम्।
पृथिव्यां जीवनं सर्वं नश्यति पवनं विना॥६३॥

कीमत देकर भी शुद्ध जल और शुद्ध वायु प्राप्त नहीं किये जा सकेंगे। तब जल और वायु के अभाव में पृथ्वी पर से जीवन ही समाप्त हो जायेगा।

जलं द्रष्टुं च लब्धुं च निर्मलं प्राणरक्षकम्।
पृथिव्यां संचरिष्यन्ति लभ्यं गम्यं न तज्जलम्॥६४॥

प्राण रक्षक निर्मल जल को देखने व प्राप्त करने के लिए प्राणी पृथ्वी पर भटकते रहेंगे पर वह जल उनकी पहुँच से दूर हो जायेगा।

दूषितपंचतत्त्वानि प्रदुष्टा प्रकृतिस्तदा।
प्रदूषितां स्थितिं प्राप्य स्थास्यन्ति नाशकारिकाः॥६५॥

प्रदूषित पंच तत्व और प्रदूषित प्रकृति, प्रदूषित अवस्था में संहारक बन जायेंगे।

धरण्यप्यक्षमा ग्रामा नागरा जलप्लाविताः।
हिमाद्रेः क्षरणं सृष्टेः कारणं प्रलयस्य भोः॥६६॥

तब धरणी भी प्रदूषण के बोझ को ढोने में अक्षम हो जायेगी। हिमालय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पिघलने लगेगा। इससे नगर, नागरिक, गांव और ग्रामीण सभी डूबने लगेंगे। अन्त में सृष्टि का ही विलय हो जायेगा।

टि० :- प्रलय और सृष्टि का क्रम चलता रहता हैं फिर भी पर्यावरण को बचाना हमारा धर्म है।

प्रकृतेर्जायते प्राणी प्रकृतेः समुपासकः।

प्रकृतेराश्रयं नीत्वा मोदते लभते सुखम्॥ ६७॥

प्रकृति से ही पुरुष एवं प्राणी की उत्पत्ति होती है। इसलिए मानव और अन्य प्राणी स्वभाव से प्रकृति प्रेमी होते हैं। प्राणी प्रकृति का आश्रय लेकर प्रसन्न होते हैं और चिर स्थायी सुख पाते हैं।

पर्यङ्के पर्यटन् बालः स्वर्णेनापि विभूषिते।

प्राप्य स्ववसरं भूमिं प्रकृतिं सेवते पराम्॥ ६८॥

सोने के पलंग पर सोने वाला शिशु अवसर पाते ही प्रकृति को गोद में, धरती पर और मिट्टी में खेलने लगता है। यह है प्राणी का प्रकृति से स्वाभाविक लगाव।

प्रकृतेः सुषमा सौम्या प्रीतेर्हर्षस्य दायिका।

प्राणदा वीर्यदा पुण्या चालसस्य प्रणाशिका॥ ६९॥

प्रकृति प्रदत्त सुषमा सुन्दर होती है। वह प्रीति और प्रसन्नता प्रदान करती है। प्रकृति प्राण, वीर्य एवं पुण्य को प्रदान करती है और आलस्य का नाश करती है।

न तथा शीतलोवायुर्विद्युद्यन्त्रेण प्राप्यते।

यथा सः शीतलः पूतः प्रकृतेः प्रादपस्य च॥ ७०॥

जितनी शीतल और शुद्ध पवन प्रकृति एवं पादप प्रदान करते हैं उतना शीतल और पवित्र पवन विद्युद्यन्त्र से प्राप्त नहीं होता है।

विश्वस्तरीया संस्था या स्काउटगाइडस्य भोः।

सर्वोत्कृष्टा पुनीता सा प्रकृत्या चालिता क्रिया॥ ७१॥

विश्वस्तरीय स्काउट एवं गाइड संस्था सर्वोत्कृष्ट एवं पवित्र संस्था है। जिसकी क्रिया प्रक्रिया प्रकृति द्वारा चालित होती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकृतेर्रक्षणं तेषां धर्मः कर्म च शाश्वतम्।

प्रकृतौ जीवनं वासः प्रकृतौ क्रीडनं सुखम्॥७२॥

स्काउट एवं गाइड का धर्म शाश्वत रहने वाली प्रकृति की रक्षा करना है। प्रकृति की गोद में ही उनका वास और जीवन होता है। वे प्रकृति में मनोरंजन करके जीवन सुख पाते हैं।

वस्तूनां नूतनानां च भौतिकानां न केवलम्।

प्राकृतानां प्रयोगं ते कुर्वन्ति प्राणहेतवे॥७३॥

वे स्काउट एवं गाइड भौतिक पदार्थों के साथ-साथ प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग जीवन के लिए करते हैं।

जीवान् प्रति दयाभावो भेदभावो न दृश्यते।

शिविरः सर्वसत्वानामुन्नतेः परिवर्धकः॥७४॥

वे सभी जीवों के प्रति दया भाव रखते हैं। किसी के साथ भेदभाव नहीं रखते। इनका शिविर सभी जीवों की उन्नति करने वाला होता है।

सज्ञो भवतु भो प्राणिन् भेदभावं न दर्शय।

रक्ते-रक्ते विभेदो न शुभकार्याय केवलम्॥७५॥

हे प्राणि! भेद-भाव रहित शुभ कार्य के लिए तैयार रहो। रक्त-रक्त में भेद होते हुए भी रक्त-रक्त के काम आता है।

सज्ञो भव सदादर्शं वाक्यमस्त्यति पावनम्।

समेषामार्तजीवानां त्राणाय शुभहेतवे॥७६॥

स्काउट एवं गाइड का आदर्श वाक्य है 'सदा तैयार रहो'। यह अत्यन्त पवित्र है। दुखी जीवों के दुख दूर करने के लिए तथा सबकी भलाई के लिए वे सदैव तैयार रहते हैं।

तत्पराश्च प्रचाराय पर्यावरणपालकाः।

समुत्सुका भवेयुर्भोः पर्यावरणमुत्तमम्॥७७॥

प्राकृतिक पर्यावरण को बचाये रखने के लिए पर्यावरण प्रेमी उत्साह से तत्पर रहें तभी पर्यावरण उत्तम रह पायेगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जन्मत एव बालेभ्यो दातव्या शुभमंगला।

पर्यावरणशिक्षा सा पर्यावरणबोधिका॥७८॥

अपने बच्चों को जन्म से ही पर्यावरण का पूर्ण ज्ञान देनी चाहिए। उन्हें पर्यावरण की शिक्षा देनी चाहिए। यही शुभ और मंगल है।

आदित एव बोधव्या बाला वृद्धाश्च यौवनाः।

प्रकृतेर्रक्षिका शिक्षा पर्यावरणहेतवे॥७९॥

आरम्भ से ही बालक युवा एवं वृद्धों को प्रकृति की रक्षा से संबंधित शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि पर्यावरण सुरक्षित रह सके।

भ्रातृभावान्वितो भूत्वा भावयन्तु भवं भुवम्।

भुविभावेन भाव्यं भो भावेन भवभावनः॥८०॥

पृथ्वी, पृथ्वी के प्राणी एवं पदार्थों के साथ भाईचारे का संबन्ध रखें। भूमि पर भाववान बनें। यदि भाव शुद्ध है तो भव भी मनभावन लगता है।

प्राणदः पवनः पूतः वारि पूतं धरा सदा।

पशवः पक्षिणःपूताः प्रकृतिर्रक्षिता सदा॥८१॥

वन पर्वत एवं प्राणद प्राणवायु (विभिन्न गैसों एवं धूल कणों का समानुपातिक मिश्रण युक्त वायु) मूलतः प्राकृतिक रूप में शुद्ध रूप में रहे। पशु-पक्षी, मानव और वृक्ष भी प्राकृतिक (मूल रूप) में रहें। इस हेतु कृपा पूर्वक सच्ची निष्ठा से सयत्न सुकार्य किया जाना चाहिए।

मर्यादा रक्षणीयास्ति सुकार्यं फलदायकम्।

प्रतिज्ञा पालनीयास्ति विश्वासवर्धनं वरम्॥८२॥

सबके मर्यादा की रक्षा होनी चाहिए। अच्छा कार्य अच्छा-अच्छा फल देता है। सबको प्रतिज्ञावद्ध होना चाहिए तथा प्रतिज्ञा का पालन करना चाहिए और परस्पर विश्वास का संवर्धन करना चाहिए।

आदानं च प्रदानं च प्रकृतेः परिरक्षणम्।

सतुलनं प्रसृष्टेश्च सम्यग्वारिमुचामिव॥८३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिस प्रकार बादल धरा से जल लेकर समय पर धरा को जल वापस कर देता है उसी तरह हम लोगों की भी क्रिया प्रक्रिया आदान एवं प्रदान पर आधारित होनी चाहिए। तभी प्रकृति की रक्षा होगी और सृष्टि सन्तुलित रहेगी।

परस्पराश्रिताः सर्वे सर्वे सर्वोपरिस्थिताः।

ऋतमेतद्धृदि स्थाप्य त्वं व्यवहारिको भव॥८४॥

हमारा जीवन परस्पराश्रित है। सभी एक दूसरे पर आश्रित हैं इस सच्चाई को समझें और व्यावहारिक बनें।

अयि पुमन्! शृणु मे मधुरं वचः

भवतु पालय तज्जलजीवनम्।

प्रकृति वारि धराऽनिलशान्तिदं

मनसि धारय मा विकृतिं नय॥८५॥

हे मानव, मेरे मधुर वचन को सुनो। जल की रक्षा करो। पवन की रक्षा करो। प्राणस्वरूप पवन की रक्षा से ही हमारे प्राण की रक्षा होगी तथा वायु जल और पृथ्वी शांतिकारक होंगे। इन तथ्यों को अपने मन में धारण कर लो, इन्हें दूषित मत करो।

॥ इति श्रीजगन्नाथशुक्लसुतश्रीमदशोककुमारशुक्लविरचितः प्राकृतिक-पर्यावरणनामकः प्रथमोऽध्यायः॥

॥ इति शम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥अथ द्वितीयोऽध्यायः॥

प्राकृतिकप्रदूषणम्

प्रदूषितपदार्थानां प्राणिनां जीवने प्रभो।
तांडवो न तथा येन जीवनं मरणं भवेत्॥१॥

हे अखिलेश्वर, प्राणियों के जीवन में प्रदूषित पदार्थों का ऐसा बीभत्स तांडव न होने पाये जिससे जीवित प्राणियें का जीवन मरण बन जाए।

मनुज! कृन्तसि मे वरशाखिनं
भवसि पादपहीनहरिप्रियः।
यदि न पादपभूषितजीवनं
भुवि वरं न हरं नरजीवनम्॥२॥

हे नर, तुम मेरी टहनियों को काट रहे हो और हरिप्रिय भी बन रहे हो। पादप हीन होकर तुम हरि प्रिय नहीं हो सकते। यदि तुम्हारा जीवन पेड़ों से सुशोभित नहीं रहा तो नर जीवन वरण नहीं बल्कि हरण करने वाला बनेगा।

सृष्टौ स्थितौ विनाशे च नृविज्ञैर्बहुनाशकम्।
पंचतत्त्वविरुद्धं यत्साधितं तत्प्रदूषणम्॥३॥

संसार की सुन्दर संरचना में, उसको बने रहने देने में, तथा उसके नष्ट होने की प्राकृतिक प्रक्रिया में बुद्धिमान मानव द्वारा व्यवधान उपस्थापित करना तथा स्वार्थ सिद्धि हेतु प्रकृति के विपरीत कार्य करना प्रदूषण कहलाता है जिससे सर्वाधिक विनाश होता है।

जनंसख्यागतौ वृद्धिर्वृद्धेश्च परिपालनम्।
प्रमुखपदमाधत्ते पर्यावरणदूषणे॥४॥

जनसंख्या में लगातार बढ़ोतरी होना फिर बढ़ती जनसंख्या का पालन-पोषण करना और इसके लिए प्राकृतिक संपदा का दोहन करना पर्यावरण प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

औद्योगिका ह्याविष्कारा वाहनानि धनानि च।
प्रतिस्पर्द्धात्मिका बुद्धिः प्रदूषणस्य पोषिका॥५॥

अनेक प्रकार के उद्योग लगाना, नए-नए संसाधन जुटाना, नए-नए आविष्कार करना, यन्त्रों व वाहनों का निर्माण करना तथा प्रतिस्पर्द्धात्मक तरीके से उनका उपयोग करना, ये सभी प्रदूषण के प्रमुख कारक हैं।

दुष्टै रसायनैर्धूमैर्दुष्टो वायुर्जलं धरा।
धराया मूलतत्त्वानि नश्यन्ति प्रत्यहं भुवि॥६॥

प्रदूषित रासायनिक तत्त्वों से तथा दूषित धुआँ से वायु, जल और मिट्टी सभी प्रदूषित हो रहे हैं। धरती की मूल संरचना प्रतिदिन विकृत हो रही है।

बहुप्रकारकं ह्यस्ति प्रदूषणं भयंकरम्।
ध्वनिवायुधरानाम्ना ख्यातं जलेन संयुतम्॥७॥

प्रदूषण को मुख्यतः चार श्रेणियों में बाँटा गया है:— ध्वनि-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण, और भूमि-प्रदूषण।

अवगच्छ पुनः सम्यग् जैविकाजैविकं च तत्।
जैविकं न तथा दुष्टमजैविकं विनाशकम्॥८॥

इन प्रदूषणों को जैव प्रदूषण और अजैव प्रदूषण के रूप में भी पृथक् रूप से वर्गीकृत किया गया है। जिसमें से जैव (शाक, सब्जी आदि) उतने हानिकारक नहीं है जिसने अजैव प्लास्टिक आदि।

संयंत्रवाहनैर्यानैरौद्योगिकैर्गृहैस्तथा।
यन्त्रशालापणैस्त्यक्तमजैविकं प्रदूषणम्॥९॥

बड़े-बड़े संयन्त्रों, उद्योगों, कल-कारखानों, वाहनों , विमानों, बाज़ारों, घरों से अजैविक प्रदूषण आज पर्यावरण में फेंके जा रहे हैं।

शाकादीनां फलादीनामन्नादीनामवाञ्छितम्।
प्रक्षिप्तो दूषितो भागो जैविकं हि प्रदूषणम्॥१०॥

सब्जी, फल, अनाज आदि के अवांछित छिलके आदि तत्त्व फेंके जाने पर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रदूषण बनते हैं। ये प्रदूषित पदार्थ सड़ांध बदबू पैदा कर वातावरण को प्रदूषित कर देते हैं और अनेक बीमारियों को जन्म देते हैं।

प्राकृत-प्रक्रियाद्वारा जैविकं तत्प्रदूषणम्।
भुज्यते कृमिभिः पूर्वमुर्वरकमनन्तरम्।।११।।

जैविक प्रदूषित पदार्थों से प्राकृतिक प्रक्रिया द्वारा कीड़े-मकोड़े पैदा हो जाते हैं और प्रदूषित पदार्थों को उर्वरक में परिवर्तित कर देते हैं।

टि०— प्राकृतिक प्रदूषित पदार्थ का उर्वरक के रूप में प्रयोग तात्कालिक लाभ प्रदान करता है।

कालेन तत्सामाधानं क्रियते फलदायकम्।
दुर्गन्धदायकं नोचेत् प्ररोगजनकं भवेत्।।१२।।

समय से इन कचरों का निपटारा किया जाए तो फलदायक होते हैं अन्यथा दुर्गन्ध और रोग दोनों को पैदा करते हैं।

टि०— जैव एवं अजैव कचरों को अलग-अलग करके संशोधित किया जाय।

भुक्त्वा यान्ति च पंचत्वं दुष्प्लास्टिकमजैविकम्।
पशवोऽनुर्वरा भूमिर्जायते ज्वालिते विषम्।।१३।।

दूसरी तरफ अजैविक प्रदूषित प्लास्टिक आदि को खाने से पशु की मृत्यु हो जाती है। धरती पर फेंकने पर यह धरती की उर्वरा शक्ति को समाप्त कर देता है और यदि प्लास्टिक को जलाया जाए तो यह विषकारक रासायनिक तत्त्व वातावरण में छोड़ता है।

प्लास्टिककृतवस्तूनां वस्तुवहनहेतवे।
परित्यज प्रयोगं भो वस्त्रमाश्रय धारय।।१४।।

प्लास्टिक से निर्मित थैला आदि का उपयोग सामान ढोने के लिए करना उचित नहीं है। इनके स्थान पर कपड़े से बने थैले का उपयोग करना श्रेयस्कर है।

टि०— दूषित प्लास्टिक से निर्मित दूषित थैला में फल या सब्जी रखने पर प्लास्टिक का दूषित रासायनिक तत्त्व इन्हें विषाक्त बना देता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शोधितप्लास्टिकस्यापि प्रयोगं वीक्ष्य चोच्यते।

जीवनं प्लास्टिकं त्यक्त्वा चालयितुं न शक्यते।।१५।।

शोधित, उन्नत किस्म के प्लास्टिक के उपयोग का इतना अधिक प्रचलन हो गया है कि आज प्लास्टिक के बिना जीवन चलाना मुश्किल हो गया है।

उपभोक्ताऽनभिज्ञोऽस्ति नहि जानाति दुष्कृतिम्।

पुनश्चक्रितनिर्माता विक्रेता दण्डमर्हति।।१६।।

उपभोक्ता दूषित प्लास्टिक के उपयोग से होने वाली हानि से अनभिज्ञ है। इसलिए सरकार ने दूषित प्लास्टिक को या दूषित प्लास्टिक को गला कर पुनः उपयोग के लायक बना कर उसे बेचने वाले विक्रेता के लिए दण्ड का विधान किया है।

अतोऽहं प्रार्थये भोक्तॄन् निर्मातॄन् सादरं पुनः।

न दूषितः प्रयोक्तव्यो निर्मातव्यश्च प्लास्टिकः।।१७।।

इसलिए निर्माता एवं उपभोक्ता दोनों से ही मेरा सादर निवेदन है कि निर्माता दूषित प्लास्टिक की वस्तुओं का निर्माण न करें और उपभोक्ता उनका उपयोग न करें।

सुपर्यावरणेनाऽस्ति जगतः सुस्थितिः सखे।

जगति जायमानानां सम्भवः सम्भवो भुवि।।१८।।

हे सखे, पर्यावरण के सुन्दर रहने से ही संसार की स्थिति सुन्दर रह पायेगी, और तभी जगत् में उत्पन्न होने वाले प्राणी एवं पदार्थों की उत्पत्ति और स्थिति इस धराधाम पर संभव हो पायेगी।

पर्यावरणनाशेन नश्यन्ति सर्वजन्तवः।

पवनः दुष्टतां याति प्रकृतिर्विकृतायते।।१९।।

पर्यावरण के नष्ट होने से सभी प्राणी नष्ट हो रहे हैं। हवा प्रदूषित हो रही है और प्रकृर्ति विकृत हो रही है।

वाय्वाकाशौ जलं ज्योतिर्मेरुर्निझरिणी वनम्।

अन्नं जीवो फलं मूलं सर्वं सम्यक् प्रदूषितम्।।२०।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वायु, आकाश, जल, अग्नि (प्रकाश) झरना वन, नदी, अनाज प्राणी फल-मूल सभी पूरी तरह से प्रदूषित हो चुके हैं।

उड्डयनेन यानानां ध्वनिधूमविवर्धनम्।
जायते गगने नित्यमुष्णता परिवर्धते॥२१॥

विमान, उपग्रह आदि विशेष यानों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है जिनकी वजह से वायुमंडल में ध्वनि, धूम और ताप की वृद्धि होती जा रही है। यही कारण है कि आने वाले प्रत्येक वर्षों में पिछले वर्ष के तापमान का रिकार्ड टूट रहा है।

निर्माणं न वरं तद्धि मूलस्य प्रविनाशकम्।
प्ररक्ष परमं मूलं मूलाद्भ्रष्टस्य का गतिः॥२२॥

ऐसा निर्माण ठीक नहीं है जो मूल को ही नष्ट कर रहा हो। मूल की रक्षा करें। मूल से भ्रष्ट की दुर्गति का अंदाज लगाना मुश्किल है।

संतप्येतेऽक्षिणी तैस्तु नासिका नरकस्थितिम्।
दुष्टतत्त्वैर्युतो धूमः प्राप्तो वाहनयन्त्रकैः॥२३॥

वाहन यन्त्रों से प्राप्त दूषित तत्त्वों से युक्त धूआँ नाक को नरक स्थिति में डाल देता है। आँख में भंयकर जलन होने लगती है। इस प्रकार यह प्राकृतिक पर्यावरण को प्रदूषित करता है।

प्रदूषणं जगद्धन्तृ हन्तृ च जनजीवनम्।
जलं हन्तृ स्थलं हन्तृ हन्तृ च वायुमण्डलम्॥२४॥

यह प्रदूषण जल, स्थल, वायु के साथ-साथ जल-जीवन, जनजीवन और अंत में जगत के जीवन को भी नष्ट कर रहा है।

जले जीवा स्थले जीवा जीवाश्च धरणीतले।
आकाशे मण्डले जीवा जीवाश्च गिरिगह्वरे॥२५॥

जल में रहने वाले जीव, धरती पर या धरती में रहने वाले जीव, आकाश में और विभिन्न मण्डलों में रहने वाले जीव, पर्वत और कन्दराओं में रहने वाले जीव सभी आज प्रदूषण से प्रभावित हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्त्रीगर्भे भूमिकुक्षौ च पशुगर्भे च पक्षिषु।

स्थिता जीवा प्रणश्यन्ति रक्ष्यं तद्धि प्रयत्नतः।।२६।।

स्त्री के गर्भ में धरती के गर्भ में एवं पशु-पक्षियों के गर्भ में पलने वाले जीव प्रदूषण से नष्ट हो रहे हैं इसलिए प्रदूषण से पर्यावरण की पूर्ण रूप से रक्षा की जानी चाहिए।

अण्डोद्भवाश्च ये जीवा पिण्डजा प्राणिनः पराः।

स्वेदोद्भवाश्च ये जीवाः प्रदूषणप्रभाविताः।।२७।।

अण्डे से, पिण्ड (गर्भ) से, पसीने से और धरती से उत्पन्न होने वाले प्राणी पर प्रदूषण का दुष्प्रभाव खूब पड़ रहा है।

भूमिरापोऽनलो वायुराकाशः शब्दधारकः।

अहो तत्त्वात्मिका सृष्टिर्विनाशमुपयास्यति।।२८।।

अरे, प्रदूषण तो भूमि, जल, वायु, अग्नि, शब्द को धारण करने वाले आकाश और पंचतत्त्व से बनने वाली सृष्टि को ही समाप्त कर रहा है।

मूलं यत्नेन संरक्षेत् पत्रमायाति याति च।

क्षीणे मूले न शाखा स्यान्न तरुः फलदायकः।।२९।।

हे नर! पंचतत्त्वात्मक मूल को सुरक्षित रखो क्योंकि मूल के बचे रहने पर ही फूल, फल आदि बचेंगे। पत्तों का आना-जाना तो लगा रहता है।

प्रकृतेर्विपरीतं यो चरत्याऽप्नोति किल्विषम्।

प्रकृतेः प्रतिकूलानि न कदापि समाचरेत्।।३०।।

प्रकृति के विरुद्ध आचरण करने वाला मानव हमेशा दुःख भोगता है। इसलिए प्रकृति के विरुद्ध कोई भी कार्य अथवा व्यवहार नहीं करना चाहिए।

प्रकृतेः सर्वतत्त्वानि सन्ति सर्वस्य हेतवे।

सर्वस्यार्थं कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते।।३१।।

प्रकृतिप्रदत्त प्राणी एवं पदार्थ एक-दूसरे के हित के लिए हैं। प्रकृति ने जो कुछ बनाया है सभी किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। प्रभु की कोई भी संरचना व्यर्थ नहीं है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृत्रिमा निर्मितार्थास्तु न हि सर्वोपकारकाः।
एकत्र यदि लाभः स्याद्धानिरन्यत्र निश्चिता।।३२।।

मानव निर्मित कृत्रिम पदार्थ से सबका भला संभव नहीं है। इनमें एक ओर जहाँ लाभ होता है वहीं दूसरी ओर हानि भी होती है।

सर्वं खलु समाधातुं श्रीकृष्णेन कृतं जगत्।
अर्जुनव्यपदेशेनाप्युपदिष्टं चराचरम्।।३३।।

सभी समस्याओं का समाधान करने के लिए ही भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन के माध्यम से समस्त चेतन एवं अचेतन जगत को कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध कराया है।

मुच्येत मानवः पापात् रोगी रोगात्तु संतरेत्।
शुभस्य शुभमेव स्यादशुभस्य शुभो भवेत्।।३४।।

मानव प्रदूषण के पाप से मुक्त हो जाए, रोगी प्रदूषणजनित रोग से मुक्त हो जाए, भला करने वाले का भला तो हो ही भला न करने वाले का भी भला हो।

स्वार्थलोलुपभूतानि प्रकृत्या नाशकानि च।
दुष्कर्मणा विनश्यन्ति यथा हिंस्राः खलास्तथा।।३५।।

केवल अपना हित साधने के लिए प्राकृतिक पर्यावरण का विनाश करने वाले दुष्ट व्यक्ति अपने दुष्कर्मों से स्वतः नष्ट हो जाते हैं जैसे हिंसक पशु और दुष्ट।

पर्यावरणनाशेन विनष्टा प्रकृतिः पशुः।
कुरु पूर्ण-प्रयत्नेन पर्यावरणरक्षणम्।।३६।।

पर्यावरण के नष्ट होने से प्रकृति एवं पदार्थ सभी स्वतः नष्ट हो जाते हैं इसलिये प्रयत्नपूर्वक पर्यावरण की रक्षा की जानी चाहिये।

प्राणिनां प्राणरक्षार्थं पारिस्थितिकजीवनम्।
प्राप्तं संतुलितं सर्वं रक्षितव्यं पुनः पुनः।।३७।।

प्राणियों के प्राणभूत तत्त्वों की रक्षा के लिए जीवों की एक श्रृंखला भगवान् ने बनाई है, जिसे पारिस्थितिक जीवन कहा जाता है। इस पारिस्थितक जीवन को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संतुलित रखने के लिए प्रकृति में संतुलन आवश्यक है, जिसकी रक्षा हम सब को करनी चाहिए।

पर्यावरणधर्मं तु धरण्यां धारय ध्रुवम्।

सुस्वस्थाः सन्तु सर्वे ते मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात्॥३८॥

हे मानव! इस धराधाम पर तुम पर्यावरण धर्म का व्रत लो ताकि सभी स्वस्थ व सुखी रह सकें, कोई भी दुखी न रहे।

पर्यावरण-रक्षाया भुवि धार्यं व्रतं नरैः।

अन्यथा न भविष्यन्ति प्राणिनो लब्धजीवनाः॥३९॥

पृथ्वी के समस्त मानवों को पर्यावरण रक्षा का व्रत लेना चाहिए अन्यथा कोई भी प्राणी जीवित नहीं बचेगा।

भक्षका रक्षकाः सन्तु कर्तकास्तरुरोपकाः।

प्रफुल्लवदना माता मही संपूजिता भवेत्॥४०॥

भक्षक रक्षक बन जाएँ, वनों व वृक्षों को काटने वाले उन्हें रोपने वाले बन जाएँ और धरती माता हरी-भरी, प्रसन्नवदना बन जाए तथा सर्वत्र उसकी पूजा हो।

दया श्रेष्ठतमो धर्मस्तृणेष्वपि दयां कुरु।

दूषितव्यः पदार्थो न जीवः सन्तुलको भुवः॥४१॥

दया सबसे बड़ा धर्म है तिनकों पर भी दया करें। किसी भी पदार्थ अथवा प्राणी को प्रदूषित मत करो सभी पृथ्वी के सन्तुलन को बनाये रखने में सहायक होते हैं।

प्राणा यथा मनुष्याणां प्रियाः पूज्या गुणान्विताः।

तथा ते सर्वसत्त्वानां जीवान् प्रति दयां कुरु॥४२॥

जिस प्रकार मनुष्यों के प्राण प्रिय पूज्य व गुणों से युक्त हैं उसी तरह सभी जीवों के। इसलिए जीवों के प्रति दया करो।

वृक्षाणां कर्तनं नैव विधेहि त्वं कदापि न।

ब्रवीम्यहं समं कर्म वर्धनं रोपणं समम्॥४३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मैं यह बिल्कुल नहीं कर रहा हूँ कि वृक्षों का कर्तन एकदम मत करो। बल्कि मैं तो यह कह रहा हूँ कि तरुकर्तन, तरुरोपण और तरुवर्धन समान अनुपात में होना चाहिए।

दुग्धदाः कण्टकाकीर्णा पादपाः फलिनो विषाः।
गृहाद्दूरे च कर्तव्यास्तुलसी स्यात् गृहं गृहम्।।४४।।

दूषित दूध जिनसे निकलता हो, काँटेवाले और विष स्वरूप वृक्षों को घर से बाहर लगाना चाहिए। लेकिन तुलसी घर घर में होनी चाहिए।

आमलको वटो निम्बोश्वत्थाश्चाम्राश्च पादपाः।
शुभदाः शोधकाः शीघ्रं मृदश्च गुणवर्धकाः।।४५।।

आँवला, वरगद, नीम पीपल तथा आम के पेड़ शुभ फल देने वाले होते हैं। ये वातावरण को शुद्ध करते हैं तथा मिट्टी के गुण को बढ़ाते हैं।

वनस्पते बलं मेधां पशुं धनं फलं जलम्।
ऊर्जामायुर्यशो धैर्यं देहि तेजः नमोस्तु ते।।४६।।

हे वनस्पति, तुम अपने सेवकों को बल, बुद्धि, पशु, धन, फल, जल ऊर्जा, आयु, यश, धैर्य और तेज प्रदान करो मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

युवत्यश्च युवानश्च बालिका बालकास्तथा।
पृथिव्या रक्षकास्ते स्युः पर्यावरणपोषकाः।।४७।।

बालक-बालिका, युवा और युवतियाँ, स्त्री-पुरुष सभी पृथ्वी के रक्षक बन जाएँ तथा पर्यावरण पोषक बन जाएँ।

पर्यावरणरक्षार्थं मन्त्रालयो विनिर्मितः।
प्रदूषणनियन्त्र्यर्थं समित्यस्तत्परा प्रिये।।४८।।

हे प्रिये, पर्यावरण की रक्षा के लिए भारत सरकार ने अलग से पर्यावरण मंत्रालय बनाया है। इसके अलावा प्रदूषण को रोकने एवं उसको नियंत्रित करने के लिए अनेक समितियों, आयोगों आदि का गठन भी सरकार ने किया है।

यन्त्रं नानाविधं कृत्वा प्रदूषणस्य शोधकम्।
परीक्षणेन पद्धत्या प्रदूषणं नियन्त्र्यते।।४९।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रदूषण की जाँच करके तथा प्रदूषक शोधक एवं प्रदूषणरोधक यन्त्रों को स्थापित करके प्रदूषण को नियन्त्रित किया जा रहा है।

प्राकृतिकेन गैसेन चालितं बहुवाहनम्।

प्रदूषणप्ररोधे तद्वरं नगरजीवनम्॥५०॥

(दिल्ली) में भारी वाहनों में प्राकृतिक गैस (सी.एन.जी.) के उपयोग का सुखद परिणाम निकल रहा है। यह वायु प्रदूषण को रोकने में सक्षम है। इससे नगरवासियों का जीवन पर्यावरण प्रदूषण की दृष्टि से उत्तम हो रहा है।

टि०— सी०एन०जी का प्रयोग सर्वत्र किया जाय।

वनं पर्वतः प्राणदः प्राणवायु-

र्जलं जीवनं मूलतो निर्मलं यत्।

पशुः पक्षिणो मानवाः पादपा ये

विशुद्धाः सदा मानवैः पालनीयाः॥५१॥

जंगल, पहाड़, विशुद्ध प्राणवायु और निर्मल जल अपने प्राकृतिक विशुद्ध स्वरूप में रहें। वृक्ष, पशु-पक्षी और मानव प्राकृतिक (विशुद्ध रूप) में रहें और इन सबके विशुद्ध स्वरूप की रक्षा मानव सदैव करें।

॥ इति श्रीजगन्नाथशुक्लसुतश्रीमदशोककुमारशुक्लविरचितः प्राकृतिक-प्रदूषणनामको द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ इति शम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥अथ तृतीयोऽध्यायः॥

ध्वनिप्रदूषणम्

शब्द ब्रह्म नमस्कृत्य मुक्तिमीहे प्रदूषणात्।
ध्वनिदूषणदग्धानां प्राणिनां रक्षणं वरम्॥१॥

शब्द स्वरूप परमेश्वर को प्रणाम करके ध्वनि प्रदूषण से प्रदग्ध प्राणियों की पूर्ण रक्षा एवं प्रदूषण से पूर्ण मुक्ति की कामना करता हूँ।

पुनरहं प्रणमामि परं ध्वनिं,
तदनु काव्यमिदं मधुरं प्रियम्।
श्रुतिसुखं जगतः सुखहेतवे
विरचयामि हरे! कुरु मङ्गलम्॥२॥

पुनः मैं श्रेष्ठध्वनि को प्रणाम करता हूँ तत्पश्चात् कानों को सुख देने वाले सुमधुर एवं परम प्रिय काव्य की रचना करता हूँ। यह काव्य समस्त संसार को सुख प्राप्त कराने के उद्देश्य से लिखा जा रहा है। हे हरि, आप इस काव्य की निर्विघ्न समाप्ति सुनिश्चित करें।

ध्वनिरात्मेति काव्यस्य ध्वनिना धार्यते धरा।
ध्वनिं चित्ते निधायादौ ध्वनिं हि ध्वनयाम्यहम्॥३॥

ध्वनि काव्य की आत्मा होती है। ध्वनि को ही वाणी का रूप देकर एवं उससे विचारों का आदान-प्रदान करके मानव इस धरा पर व्यावहारिक कार्य सम्पन्न करता है। इसलिए ध्वनि को हृदय में धारण करके मैं ध्वनि के प्रभाव का वर्णन करता हूँ।

ध्वनिना वर्णरूपेण मौखिकी लेखिकी क्रिया।
साध्यते व्यवहारोऽत्र दुःखानि च सुखानि च॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मानव मुख से उच्चरित (बोली गई) ध्वनि का लिखित रूप वर्ण कहलाता है। इन्हीं वर्णों को बोलकर और लिखकर मानव सुख और दुःख को बाँटता है और सांसारिक कार्य सम्पन्न करता है।

बाइविल: कुरानश्च गुरुग्रन्थश्च जातका:।
जैनाश्चापि ध्वनिं धृत्वा धारयन्ति धरां जगत्॥५॥

बाइविल, कुरान, गुरुग्रन्थ,जातक एवं जैन ग्रन्थ आदि धार्मिक ग्रन्थ ध्वनि के माध्यम से धरा को एवं जगत् को धारण किये हुए हैं।

वाल्मीकिनापि गीतं च व्यासेन बहुचोदितम्।
पृथिवीं पावनं कृत्वा वर्धस्व भुवि भारते॥६॥

आदिकवि वाल्मीकि ने और महर्षि व्यास ने ध्वनि के माध्यम से पर्यावरण की रक्षा करने का उपदेश दिया है। पृथ्वी को पवित्र रखो, भारत को आगे बढ़ाओ एवं भारत में उन्नति करो।

ध्वनि: शत्रुश्च मित्रं च प्रयोज्य: सुधिया बुधै:।
उच्चैरभीष्टमाहन्ति मन्दं प्रीतिविवर्धक:॥७॥

ध्वनि मानव को मानव का मित्र बनाती है और ध्वनि ही मानव को मानव का शत्रु बना देती है। मधुरता से बोली गई धीमी ध्वनि कार्य की सिद्धि में सहायक होती है और प्यार को बढ़ाती है। वहीं उँची आवाज में बोली गई कर्कश ध्वनि बने हुए काम को भी बिगाड़ देती है तथा शत्रुता भी पैदा कर देती है। इसलिए बुद्धि मान व्यक्ति को चाहिए कि वह विवेकपूर्ण ढंग से ध्वनि का प्रयोग करे।

येन केन प्रकारेण ध्वनिर्य: कर्णदुर्वह:।
संप्राप्त: शोकसंतप्तो नरो नार्य: खगो मृग:॥८॥

किसी भी माध्यम से प्राप्त कानों को अप्रिय लगनेवाली ध्वनि, जिसे सुनकर नर-नारी ही नहीं अपितु पशु-पक्षी भी व्याकुल व विक्षिप्त हो जाते हैं, वह ध्वनि प्रदूषण कहलाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुर्ध्वनेर्दुष्प्रभावं यः स्मरति चेतसा नरः।
भुङ्क्ते सो दुष्फलं तस्य ध्वनेरोधाय तत्परः॥९॥

जो व्यक्ति प्रदूषित ध्वनि के दुष्प्रभाव को भुगत चुका है वही ध्वनि प्रदूषण को दूर करने की बात मन में सोचता है और इसे रोकने के लिए तत्पर होता है।

ध्वनिप्रदूषणञ्चेदं जायते ध्वनिवर्धकैः।
यन्त्रैर्विस्तारकैश्चैवाऽऽपणे मार्गे गृहे गृहे॥१०॥

यह ध्वनि प्रदूषण, ध्वनि विस्तारक यन्त्र (माइक, लाउड-स्पीकर आदि) तथा अन्य विभिन्न प्रकार के ध्वनि यन्त्रों से होता है। यह शोर-शराबा बाजारों, राजमार्गों व घरों में आजकल खूब सुनाई पड़ता है।

सभास्थले विवाहे च नृत्यगीतोत्सवे शुभे।
यानैर्वाद्यैर्जनैर्नित्यं क्रियते ध्वनिदूषणम्॥११॥

ध्वनि प्रदूषण किसी सभा-स्थल पर भाषण के दौरान, विवाहादि मांगलिक अवसरों पर नृत्य-गीत आदि के दौरान, धार्मिक स्थलों से ध्वनि विस्तारक यन्त्रों से तथा वाहनादि से होता है।

दीपावल्युत्सवे चान्ये समारोहोत्सवे शुभे।
विस्फोटकैर्ध्वनिर्दुष्टः क्रियते नोचितश्च सः॥१२॥

दीपावली या अन्य किसी पर्व - त्यौहार पर या किसी अन्य समारोह पर छोड़े गए पटाखे भी ध्वनि-प्रदूषण फैलाते हैं इसलिए इनका प्रयोग उचित नहीं है।

ध्वनिविस्तारयन्त्राणि वर्धन्तेऽनुदिनं प्रभो।
अहमहमिकया लोकैः क्रियन्ते सुखहेतवे॥१३॥

आज ध्वनि विस्तारक यन्त्र का इस्तेमाल उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। इसके प्रयोग को लेकर युवावर्ग में होड़ मची हुई है। निजी सुख अथवा लाभ के लिए ध्वनि विस्तारक यन्त्रों का प्रतिस्पर्द्धात्मक तरीके से इस्तेमाल पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है।

वर्धते भूतले भव्ये जनसंख्या यथा यथा।
वर्धते वाहनं यन्त्रं प्रदूषणं तथा तथा॥१४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जैसे-जैसे इस धरती पर जनसंख्या में बढ़ोतरी होती जा रही है वैसे-वैसे वाहन और यंत्र भी बढ़ते जा रहे हैं और इनसे प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है।

मार्गगैर्वाहनैर्यन्त्रैः क्रियन्ते कर्णदुर्वहाः।

शब्दा नानाविधा दुष्टाः पथिकाश्चाति दुःखिताः।।१५।।

मार्गों पर चलने वाले वाहनों में तरह-तरह की प्रदूषित ध्वनि करने वाले यन्त्र हॉर्न आदि लगे रहते हैं जिन्हें सुनकर पथिक विचलित, दुःखी एवं तनावग्रस्त हो जाता है।

क्वचिद् धू धू क्वचिद् धाधा क्वचिद् धं धं च दुःखदः।

क्वचित् पों पों क्वचिद् भों भों क्वचित् हूं हूं च जायते।।१६।।

किसी वाहन से धू-धू की ध्वनि सुनाई पड़ती है तो किसी से धा-धा की, किसी से धं धं की तो किसी से पों-पों या भों-भों या हूं हूं की प्रदूषित ध्वनि सुनाई पड़ती है।

क्वचिच्चूँ चूँ क्वचिट्टूँटूँ क्वचित् पूँ पूँ च चूँ च चूँ।

क्वचिद् उँ उँ उँ क्वचित्कूँ, कूँ क्वचित् कें कें च घर्घरः।।१७।।

किसी वाहन के हार्न से चूँ-चूँ तो किसी से टूँ-टूँ, किसी से पूँ-पूँ तो किसी से चूँ-चचूँ की ध्वनि सुनाई पड़ती है। किसी वाहन-यंत्र से उँ-उँ-उँ, तो किसी से कूँ-कूँ, कें-कें या फिर घर्र-घर्र की ध्वनि सुनाई पड़ती है।

एँ एँ एँ क्रन्दनं याने प्रयुऽङ्क्ते प्रहसन्नरः।

कुक्कुराणां ध्वनिं भों भों पथिकाः पीडिताः सदा।।१८।।

किसी वाहन से एँ-एँ-एँ की बच्चे के रोने की सी ध्वनि सुनाई पड़ती है तो किसी से कुत्ते के भोंकने की भों-भों की ध्वनि सुनाई पड़ती है। इनका इस्तेमाल युवा वर्ग प्रसन्नता पूर्वक करता है परन्तु पथिक सदैव पीड़ा अनुभव करता है।

विमानवाहनैः क्षिप्तो ध्वनिर्मस्तिष्कघातकः।

रक्तप्रवाहनिद्राणां हृद्गतेरवरोधकः।।१९।।

विमान व अन्य वाहनों से निकलने वाली उँची ध्वनि मस्तिष्क को भारी नुकसान पहुँचाती है। इससे रक्तप्रवाह बढ़ जाता है। और तनाव की वजह से नींद

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तक नहीं आती। इससे हृदयगति भी रुक सकती है और मानव की तत्काल मृत्यु भी हो सकती है।

दुर्ध्वनिवाय्वपामेषां वर्धनं मृत्युदायकम्।
नाशय पूर्णयत्नेन सुपर्यावरणेऽशुभान्॥२०॥

प्रदूषित ध्वनि, प्रदूषित वायु और प्रदूषित जल का निरंतर बढ़ना मृत्युदायक है। यह पर्यावरण के लिए अशुभ है। इन्हें बलपूर्वक नष्ट किया जाना चाहिए।

विमानयानयन्त्राणि वाहनानि बहूनि च।
यदा तीव्रां गतिं यान्ति ध्वनिं धूमं क्षिपन्ति च॥२१॥

विमान, जलपोत, वाहन अथवा यंत्र या संयंत्र आदि की क्षमता बढ़ाने के लिए गतिवर्धक यंत्र का इस्तेमाल करने पर वे ध्वनि और धुआँ अधिक छोड़ते हैं।

वाहनक्षमताशक्तेर्वर्धिते वर्धते ध्वनिः।
धूमप्रभवतापोऽपि विवर्धतेऽनिशं स्वतः॥२२॥

गाड़ी की क्षमता बढ़ते ही ध्वनि की मात्रा भी बढ़ जाती है। इससे धुआँ के साथ-साथ पर्यावरण का तापमान भी स्वतः बढ़ जाता है।

सुशीघ्रता प्रतिस्पर्द्धा क्रियते निशिवासरम्।
समागन्तुं यदा गन्तुं ध्वनियन्त्रं प्रयुज्यते॥२३॥

जब आने-जाने की जल्दी होती है तब चालक अन्य वाहन से प्रतिस्पर्द्धा करने लगता है और आगे बढ़ने के लिए ध्वनि यंत्र का इस्तेमाल करना शुरु कर देता है। जिससे ध्वनि-प्रदूषण होता है।

वातानुकूलायन्त्राणि दुर्वायोः क्षेपकाणि च।
विद्युज्ज्ञानि ध्वनिं धूमं संतापं जनयन्ति च॥२४॥

वातानुकूलित यंत्र, दूषित वायु फेंकने वाले यंत्र और विद्युत पैदा करने वाले जनरेटर, इनवर्टर तथा थर्मल पावर प्रोजेक्ट आदि संयत्र ध्वनि, धुआँ, विष और ताप तीनों ही छोड़ते हैं।

गृहे गृहे सुसंस्थाप्य यन्त्रं नानाविधं महत्।
नागराः सुखमेधन्ते दुःखितं जनजीवनम्॥२५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नगरवासी अपने-अपने घरों में विभिन्न प्रकार के यंत्रों का उपयोग करके सुख भोगते हैं। या फिर जीवन यापन करते हैं परन्तु आम आदमी तो इनसे दुःखी ही होता है।

खगानां कलरवस्थाने प्राप्यते ध्वनिदूषितः।
कर्णप्रियं ध्वनिं त्यक्त्वा श्रोतुं बाध्यो भवेन्नरः॥२६॥

आज पक्षियों की चहचहाहट के स्थान पर लोगों को प्रदूषित ध्वनि सुननी पड़ रही है। मधुर ध्वनि के स्थान पर कर्णकटु आवाज सुनने के लिए मनुष्य मजबूर है।

कर्णकटुं ध्वनिं श्रुत्वा, प्रत्यहं दुःखितं मनः।
पठने पाठने कार्ये चिन्तने गतिरोधकम्॥२७॥

कर्णकटु ध्वनि को सुनकर मेरा मन प्रतिदिन खिन्न हो जाता है। इससे तो पढ़ने-पढ़ाने में, अपना काम करने में, या चिन्तन करने में भी बाधा उत्पन्न होती है।

दुस्सहं दुर्ध्वनिं प्राप्य प्राणी च बधिरायते।
स्मरणं क्षरणं याति व्याकुलतोपजायते॥२८॥

असह्य प्रदूषित ध्वनि के कानों में पड़ने से प्राणी बहरा हो जाता है। इससे स्मरण-शक्ति कमजोर पड़ जाती है और बेचैनी बढ़ जाती है।

निद्रा नैव समायाति प्राप्य प्रदूषितं ध्वनिम्।
शिशवस्तु तदा भीता मातुः क्रोडमुपागताः॥२९॥

प्रदूषित असह्य ध्वनि को सुनने से बच्चों को भी नींद नहीं आती, इसलिए छोटे-छोटे बच्चे डरकर मां की गोद में लिपट जाते हैं।

रुग्णो वृद्धस्तु स्वं कालं स्मरति सादरं सुखम्।
मदीये मधुरे काले नैवासीत्स्थितिदुर्वहा॥३०॥

बूढ़ा रोगी आज की दुःस्थिति को देखकर अपने मधुर सुखमय समय को आदर के साथ याद करता है और कहता है कि हमारे समय में ऐसा असहनीय प्रदूषित वातावरण नहीं था।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्रोधमनादरं क्लेदं क्लेशं च दूषितो ध्वनिः।
शान्तिं मानं सुखं प्रीतिं ददाति मधुरो ध्वनिः॥३१॥

प्रदूषित ध्वनि क्रोध, अपमान, कष्ट और कलह को देता है जबकि सुमधुर ध्वनि शान्ति, सम्मान, सुख और प्यार प्रदान करता है।

ध्वनिविस्तारकं यन्त्रं नियन्त्रितं परीक्षितम्।
रुजमप्रीतिमातुर्यं यच्छति न परं सुखम्॥३२॥

ध्वनि-विस्तारक यंत्र लाउडस्पीकर आदि को निर्धारित मापदण्ड पर बजाया जाए, और समय-समय पर उसकी जाँच की जाती रहे तो वह रोग, कटुता और व्याकुलता के स्थान पर परम सुख प्राप्त कराता है।

वाहनयानयन्त्राणां गतिसंतुलनं सदा।
कर्तव्यं मार्जनं काले दुर्ध्वनिधूमरोधकम्॥३३॥

वाहनों में लगे एक्सेलेटर, क्लच, गेयर आदि गतिवर्धक एवं गतिरोधक यंत्रों को संतुलित रखना चाहिए तथा इन सब की नियमित सफाई की जानी चाहिए इससे ध्वनि और धुआँ में कमी आती है।

विमानयानयन्त्राणां क्षालनं मार्जनं तथा।
भवति प्राणदं नित्यं प्रदूषणप्ररोधकम्॥३४॥

विमान वाहन, यंत्र एवं संयत्रों की नियमित धुलाई व सफाई प्रदूषण को रोकने वाली होती है। इससे इन्हें जीवन मिलता है।

सुपरिशोध्य तैलञ्च ध्वनेर्नियन्त्रकं सदा।
गतिवर्धकयन्त्रञ्च प्रयोक्तव्यं धिया बुधैः॥३५॥

वाहन और यंत्रों में संशोधित तेल का तथा ध्वनि नियंत्रक यंत्र का सदैव इस्तेमाल करना चाहिए। गतिवर्धक यंत्र का इस्तेमाल विवेक से करना चाहिए।

प्रदूषणप्ररोधाय सर्वकारेण साध्यते।
नानाविध उपायो यः पालनीयः प्रयत्नतः॥३६॥

प्रदूषण की रोकथाम के लिए सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का पालन प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए तथा उन उपायों पर अमल करना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रयोक्ता कटुवाण्या हि प्रथमं याति किल्विषम्।
दाहयत्यखिलं लोकं क्रोधाग्निना दहन् स्वयम्।।३७।।

कटु वाणी बोलने वाला प्राणी स्वयं उसका प्रथम शिकार होता है। उसके बाद वह उस क्रोधाग्नि में जलकर दूसरों को जलाता है।

सुभार्याभर्तृसम्बन्धे विच्छेदे ध्वनिभूमिका।
भवति गृहविध्वंशे भ्रातृणां कलहेषु च।।३८।।

पति-पत्नी के मधुर सम्बन्ध में विच्छेद पैदा करने में, घर का नाश करने में तथा भाइयों में लड़ाई लगाने में कटुवचन की मुख्य भूमिका होती है।

बाला वृद्धा नरो नार्यः पशवः शत्रवो हरिः।
प्रेम्णा परवशं यान्ति वाण्या मधुरया स्मर।।३९।।

बालक-वृद्ध, नर-नारी, पशु-पक्षी व शत्रु ही नहीं बल्कि भगवान हरि भी मीठी वाणी से एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार से वश में हो जाते हैं।

गुरवो मातरो ज्येष्ठाः पितरो भ्रातरोऽनुजाः।
सर्वे सम्मानमिच्छन्ति शिष्टाचारसमन्वितम्।।४०।।

गुरु, माता-पिता, ज्येष्ठ, छोटे-बड़े भाई सभी शिष्टाचार से युक्त सम्मान चाहते हैं।

कार्यस्थले गृहे चापि सेवकैः स्वामिभिः सह।
मधुरा प्रीतिदा भाषा प्रयोक्तव्या हि सर्वदा।।४१।।

कार्यालय में या घर में सेवक और स्वामी के बीच हमेशा मधुर एवं शिष्ट भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

दुर्जनो यदि नायाति गिरामधुरया वशम्।
तदैव तत्समाधातुं यथा ते रोचते कुरु।।४२।।

दुष्ट यदि मधुरवाणी से वश में नहीं आता है तभी उसे वश में लाने के लिए कटुवाणी का प्रयोग करना चाहिए तथा समस्या के समाधान के लिए जो उचित हो करना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इत्थं मधुरया वाण्या सर्वं हि वशमानयेत्।
प्रदूषणप्ररोधाय जगतो हितहेतवे॥४३॥

इस तरह संसार की भलाई के लिए मधुर वाणी बोलनी चाहिए और सबको वश में लाना चाहिए और ध्वनि-प्रदूषण को दूर भगाना चाहिए।

ऋषिभिः पूर्वजैः प्राप्तान् मन्त्रान् संस्कारशोधकान्।
सङ्गीतान् परमानन्दान् सुध्वन्याधारितान् भज॥४४॥

अपने पूर्वजों एवं ऋषियों से प्राप्त संस्कार को शुद्ध करने वाले मन्त्रों को एवं संगीतों को भजो। ये सुन्दर ध्वनि पर आधारित हैं और परमानन्द को प्रदान करते हैं।

अविज्ञातमधीतं यत् पाठितं लिखितं तथा।
सुश्रुतं श्रावितं नैव व्यर्थतां यातु तत्कुरु॥४५॥

बिना समझे पढ़ा हुआ या पढ़ाया हुआ, लिखा गया, सुना या सुनाया गया विषयवस्तु व्यर्थ है। इसलिए समझ कर कार्य करो।

वेदानां प्रत्यहं पाठो मन्त्राणां स्वास्थ्यवर्धकः।
सस्वरोच्चारणं सम्यगायुरारोग्यशक्तिदः॥४६॥

प्रतिदिन नियमित रूप से वैदिक मन्त्रों का सम्यक् पाठ व सस्वर उच्चारण करने से स्वास्थ्य लाभ होता है। यह आयु, आरोग्य और शक्ति को प्रदान करता है।

ऋग्यजुः सामाथर्वणां प्रभावाः सार्वकालिकाः।
लौकिका वैदिका मन्त्राः प्रदूषणस्य रोधकाः॥४७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के मन्त्रों का प्रभाव वातावरण में सब काल में रहता है। लौकिक एवं वैदिक मन्त्र प्रदूषणरोधी हैं। इसलिए इनका प्रयोग करें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्ण्णामपि वेदानां मन्त्रान् सर्वप्रभावकान्।
पठित्वेष्टफलं सद्यो लभस्व गतिमुत्तमाम्।।४८।।

सब पर प्रभाव डालने वाले चारों वेदों के मन्त्रों को पढ़ो और शीघ्र ही मनोवांछित फल को प्राप्त करो और अंत में उत्तम गति को प्राप्त करो।

मनः पूतं वचः पूतं कर्म पूतं तनुर्धनम्।
आत्मा पूतश्च शीलश्च भूतले साधितं श्रुतौ।।४९।।

इस धरती पर मानव का मन पवित्र हो, कर्म पवित्र हो, वाणी पवित्र हो, तन पवित्र हो, धन पवित्र हो, आत्मा पवित्र हो एवं शील भी पवित्र हो इसके लिए वेद में विधान है।

बाल्यादेव वदेद्वाक्यं बालैः सह मधुरं प्रियम्।
मितं वाग्वचः सारमन्यथा मौनमाप्नुयात्।।५०।।

बाल्यावस्था से ही बच्चों के साथ भी मधुर एवं प्रियवाणी बोलें। वाक्य छोटे और सारगर्भित बोलें अन्यथा मौन को वरण करें।

अतोऽहं प्रार्थये शब्दं विमानयानचालकान्।
सामाजिकान् प्रयोक्तुं हि वैज्ञानिकाञ्छ्रुतिप्रियम्।।५१।।

इसलिए मैं वाहन एवं विमान चालकों, वैज्ञानिकों एवं सामाजिक लोगों से निवेदन करता हूँ कि वे कानों को मधुर लगने वाली ध्वनि का ही प्रयोग करें।

अतोऽहं प्राथये सर्वान् दुष्टान् सुसज्जनांस्तथा।
प्रयोक्तुं वर्धिकां प्रीतिं वाणीन्तु मधुरां प्रियाम्।।५२।।

इसलिए मैं दुर्जन एवं सज्जन सबसे निवेदन करता हूं कि वे परस्पर प्यार को बढ़ाने वाली प्रिय एवं मधुर वाणी का प्रयोग करें।

मनसि मा नय मानव मन्मतिं,
हृदि विचारय धारय सन्मतिम्।।
कुरु सुकर्म लभस्व फलं वरं
ध्वनिमुखात्कुरु पावनमोदकम्।।५३।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे नर! भले ही मेरे इस विचार को तुम वैसे मत मानो परन्तु मेरे अच्छे विचारों को मन में विचार कर तब हृदय में धारण करो और उसे जीवन में अपनाओ। तुम अच्छे कर्म करो और हमेशा रहने वाला शाश्वत सुख पाओ तथा हे नर श्रेष्ठ! हर्षजनक प्रिय एवं पवित्र ध्वनि ही अपने मुख से निकालो।

॥ इति श्रीजगन्नाथशुक्लसुतश्रीमदशोककुमारशुक्लविरचितो ध्वनिप्रदूषणनामको तृतीयोऽध्याय:॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥अथ चतुर्थोऽध्याय:॥

वायुप्रदूषणम्

मरुत्पते नमस्तुभ्यं वायो: संशुद्धिहेतवे।
प्रयच्छ भूतले बुद्धिं वायुर्न दूषितो भवेत्॥१॥

हे मरुत् देव, मैं आपको प्रणाम करता हूँ। आप धरा के समस्त मानवों को ऐसी सद्बुद्धि दें कि वे वायु को शुद्ध रख सकें और वायु प्रदूषित होने से बच जाए।

वायुर्वातु पुनातु पावनतरुं प्राणप्रदं प्राणिनं
जीवा: सन्तु निरामयाश्च रमणं कुर्यु:सदा कानने।
नैकेनापि प्रपीडितस्तरुवरश्छाया प्रदाता शुचि:
सर्वे सन्तु विलासलासरसिका वृक्षैर्वनैर्भूषिता:॥२॥

पवित्र पवन प्रवाहित होकर प्राणप्रद पावन पादप को एवं प्राणियों को पवित्र करें। सभी जीव निरोग हों और प्रकृति में रमण करें। छाया देने वाले पावन तरुओं को कोई भी कष्ट न पहुँचाये। प्रसन्नता को चाहने वाले रसिक का घर-बार वन एवं वृक्षों से विभूषित हो जाये।

रामं कृष्णं शुकं व्यासं वाल्मीकिं कविपुङ्गवम्।
चरकं सुश्रुतं नौमि सुवृक्षाश्रयिणं गुरुम्॥३॥

अपने जीवन काल में जिन्होंने वृक्षों को संरक्षण देकर पल्लवित एवं पुष्पित किया और वृक्ष जिनके जीवन के आश्रय रहे उन भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, शुक, व्यास, कवि शिरोमणि वाल्मीकि एवं चरक सुश्रुतादि गुरुओं को मैं प्रणाम करता हूँ।

निदाघं दुस्सहं सोढ्वा प्रदूषणं भयंकरम्।
छायां वायुं प्रयच्छन्तं प्रणमामि महीरुहम्॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भीषण गर्मी और भयंकर प्रदूषण को सहन करके भी विशुद्ध वायु और छाया प्रदान करने वाले तरुवर को मैं प्रणाम करता हूँ।

पत्रं, पुष्पं, फलं, मूलं यच्छति काष्ठमाश्रयम्।

औषधं गन्धवासं च तरुः कर्गदजीवनम्।।५।।

तरु, हमारे जीवन के लिए उपयोगी, पत्ते, फल-फूल, कन्द-मूल, लकड़ी, औषध, सुगन्ध, आवास, वस्त्र और कागज़ ही नहीं अपितु जीवन भी प्रदान करते हैं।

अशोकाश्वत्थसालाश्च करीरो विल्वशाल्मली।

निम्बजम्बूकदम्बाम्राः पनसवटशिंशपाः।।६।।

अशोक, पीपल, साल, बबूल, बेल, सेमर, नीम, जामुन, कदंब, आम, कटहल, बरगद, शीशम।

नारिकेलतरुस्तालो मधूकाम्रलदाडिमाः।

पादपाः पंक्तिबद्धास्ते पर्यावरणपोषकाः।।७।।

नारियल, ताड़, महुआ, आँवला, अनार आदि के पेड़ पंक्तिबद्ध होकर पर्यावरण को पोषक तत्त्व प्रदान करते हैं।

वृक्षाः सदैव सर्वेषां सुफलाय हिताय च।

दूषितान् पावनीकृत्य ददति पवनान् शुभान्।।८।।

वृक्ष हमारे जीवन के लिये ही सदैव फलते और फूलते हुए जीवन धारण करते हैं। ये प्रदूषित पवन को शुद्ध करके विशुद्ध वायु हमें प्रदान करते हैं।

पवनैः पावनैर्वृक्षा आन्दोलिता मनोहराः।

आह्लादजनका लोके सुखावहाः सुखेश्वराः।।९।।

पवित्र पवन से आन्दोलित हरित तरु समस्त संसार को प्रसन्नता प्रदान करते हैं। इसलिए मनोहर लगते हैं। सुख को देने वाले ये वृक्ष साक्षात् ईश्वर हैं।

पंक्तिबद्धाः स्थिता वृक्षा हरिताःपर्णनिर्भराः।

अपर्णा न प्रियाः प्राणाः मार्गमुभयतः स्थिताः।।१०।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पत्तों के जीवन पर ही जिनका जीवन टिका हुआ है। मार्ग के दोनों ओर स्थित ऐसे वृक्षों की दशा पत्तों के बिना वैसी ही होती है जैसे प्रिय प्राण के बिना शरीर। अथवा अपर्णा के बिना भगवान शिव।

हरिताः पर्णयुक्ताश्च पुष्पैर्विलसिता अहो।
प्रदूषणप्रभावेण पीडिता बहुचिन्तिताः॥११॥

खेद का विषय यह है कि हरे भरे, पत्तों और पुष्पों से विलसित रहने वाले ये पेड़, प्रदूषण के प्रभाव से पीड़ित अपने अस्तित्व के लिए चिन्तित हैं।

प्रक्षिप्तैर्वाहनैर्धूमैः कृष्णैः कार्बनदूषितै :।
पीडिता दुःखिता वृक्षाः सुकोमला मनोहराः॥१२॥

वाहन द्वारा छोड़े गए कार्बनयुक्त प्रदूषित काले धुएँ से अत्यंत कोमल एवं मनोहर वृक्ष सर्वाधिक पीड़ित और दुःखी हैं।

छायाकान्ती प्रदातारो द्रुमाः सुवल्लरीयुताः।
अभिशप्ता जनैर्जाताः सुपर्णा विकृतिंगताः॥१३॥

छाया और कान्ति को देने वाले हरे-भरे वृक्षों को मनुष्य ने अभिषप्त कर दिया है। जिसकी वजह से पेड़ों के सुन्दर व सुकोमल पत्ते पीले पड़ गए हैं।

संश्लेषणं प्रकाशस्य बाधितं श्वसनं तरोः।
रासायनिकतत्त्वेन दुष्टेन दूष्यते तरुः॥ १४॥

वाहनों व उद्योगों द्वारा प्रक्षिप्त दूषित रासायनिक तत्त्व आदि जब वातावरण में फैलते हैं तब वे पेड़ों के श्वसन तंत्र को तथा प्रकाश संश्लेषण क्रिया को बाधित करते हैं। जिसकी वजह से पेड़ के पत्ते पीले पड़ जाते हैं और अन्त में प्रदूषण के असह्य बोझ को ढोते ढोते असमर्थ तरु स्वतः विनष्ट हो जाता है।

केशवकेलिकाले ये कालिन्दी कुंजवर्तिनः।
गोप्यानन्दप्रदा वृक्षाः प्रणष्टा दूषणं गताः॥१५॥

केशव बाल्यावस्था में जिस यमुना के वनों में गोपियों के साथ रमण करते थे वे वृक्ष प्रदूषण के दुष्प्रभाव से प्रदूषित होकर नष्ट हो चुके हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कां गतिं प्राप्नुयामद्य स्थितिर्विस्फोटकाशुभा।
संतप्तास्तरवो जाताः सर्वलोकहितेषिणः।।१६।।

वृक्ष इस विस्फोटक अशुभ दुःस्थिति से संतप्त हैं। सबके हित की कामना करने वाले वृक्ष भी अपने अस्तित्व को लेकर चिंतित हैं।

पक्षिणः पीडिता घर्मे शुककपोतकोकिलाः।
पादपानामभावेन विक्षिप्ता वनवासिनः।।१७।।

वनवासी, शुक, कपोत, कोयल आदि पक्षी पेड़ों के अभाव में धूप से पीड़ित व विक्षिप्त हैं।

उष्णता वृद्धिमापन्ना हरिताः शुष्कतांगताः।
दहत्यङ्गानि जीवानां वृक्षाभावो दिनं दिनम्।।१८।।

पेड़ों के अभाव में गर्मी उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है हरियाली समाप्त हो रही है और जीव जल रहे हैं। फ़िर भी पेड़ों की कटाई प्रतिदिन जारी है।

यदि स्यादीदृशं सर्वं भविष्यति विनाशकम्।
प्राणिनां व्याकुलितानामार्तनादो भविष्यति।।१९।।

यदि यही हाल रहा तो सब कुछ नष्ट हो जाएगा, फिर व्याकुल प्राणी को आर्तनाद के अलावा कुछ भी नहीं मिलेगा।

लोकजीवनमुन्मूल्य तरुपुंजं समन्ततः।
भीषणस्थितिमुत्पाद्य कथं स्यान्निष्कृतिस्ततः।।२०।।

अपने चारों तरफ के पेड़ों के समूह को काट कर, लोकजीवन को उखाड़ फेंक कर और भयावह स्थिति उत्पन्न कर इसके दुष्प्रभाव से मनुष्य भला कैसे बच सकता है।

वने शान्तिः स्थले शान्तिः शान्तिर्न नगरे गृहे।
सरसि सागरे तीरे निर्झरेषु गिरौ कथम्।।२१।।

हरियाली के अभाव में न वन में शान्ति मिलेगी न स्थल में, न शहर में शान्ति मिलेगी न गांव में और न ही घर में। न तालाब में न झरनों में, न पर्वत पर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और न ही सागर में ही मानव हरियाली से प्राप्त होने वाली शाश्वत शान्ति पा सकेगा।

नरैर्हि निर्दयो भूत्वा क्रियते तरुकर्तनम्।
कर्तने कुरु गर्वं मा पर्यावरणरक्षणम्॥२२॥

आज निर्दय भाव से नर पेड़ों की कटाई कर रहा है। हे नर, पेड़ों की कटाई पर गर्व मत करो बल्कि पेड़ों की निर्मम कटाई को रोक कर पर्यावरण की रक्षा करो।

पादपानां प्रणाशेन मर्कटाः अण्डभक्षकाः।
तरुजीवी पशोर्जीवी पशुजीवी बुभुक्षितः॥२३॥

वृक्षों के नष्ट होने से वन्यजीव का भोजन नष्ट हो रहा है इसलिए शाकाहारी बन्दर आदि पशु मांस भक्षी बनकर अण्डे खाने लगे हैं, तरुजीवी पशुजीवी हो गए हैं और पशुजीवी भूख से व्याकुल हैं।

वर्धते दृश्यते नित्यं वानराणामुपद्रवः।
वनं गिरिं परित्यज्य भ्रमन्ति नगरं गृहम्॥२४॥

आज बन्दरों का उपद्रव बढ़ता जा रहा है क्योंकि भोजन के अभाव में ये वनवासी वन, पर्वत, को छोड़कर नगरों और गाँवों में भटक रहे हैं।

लीलोपकरणीभूतान् पादपान् लोकरक्षकान्।
नाशयन्तो गमिष्यामो नूनं नाशं हरिद्रुहः॥२५॥

मनोरंजन के स्थल एवं साधन वृक्ष, लोक जीवन के रक्षक हैं। वृक्षों को नाश करके हम निश्चय ही अपना नाश कर रहे हैं और भगवान का द्रोही (भगवान् से विद्रोह करने वाला) कहला रहे हैं।

किं न जानन्ति ते जीवा भौतिकसाधने रताः।
काननानां विनाशेन विनष्टं ह्यखिलं जगत्॥२६॥

वन-सम्पदा की कीमत पर भौतिक सुख का आनन्द लूटने वाले क्या यह नहीं जानते कि वनों और वन्य-जीवों के विनाश से सम्पूर्ण संसार नष्ट हो जायेगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नष्टे वृक्षे वनं मूलं न जीवा न च भूधराः।

क्षरणं प्लावनं भूम्या द्रक्ष्यन्ति पुरुषाः स्वयम्॥२७॥

पेड़ों के नष्ट होने से वन, कन्द-मूल, वायु, जीव सभी विलुप्त हो जायेंगे। तब पृथ्वी का नष्ट होना और डूबना मनुष्य स्वयं देखेगा।

वाहनैर्त्यक्तदुर्धूमग्रहणाद्व्याकुलेन्द्रियाः।

मार्गगा प्राणिनः सर्वे पीडिता बहुचिन्तिताः॥२८॥

वाहनों से निकलने वाले धुएँ के शरीर में जाते ही शरीर की इन्द्रियाँ (आँख, कान, नाक आदि) व्याकुल हो जाती हैं जिससे पथिक दुखी और चिन्तित हो जाते हैं।

प्रदूषणमुपाहारः प्राप्यते भौतिकैः सुखैः।

रासायनिकवस्तूनामुपयोगोऽपि रुक्प्रदः॥२९॥

प्रदूषण, भौतिक सुख का मानव को दिया गया परोक्ष उपहार है। भौतिक सुख के लिए रासायनिक जिन वस्तुओं का उपयोग हो रहा है वे सब रोगजनक हैं।

सुखेहया समुन्नीतमस्माभिरिह दूषणम्।

समक्षं कुफलं दृष्ट्वा रुद्यते मरणोन्मुखैः॥३०॥

हमारी सुख की चाहत ने ही इस प्रदूषण को बढ़ाया है और जब इसका बुरा फल दिखने लगा तो मृत्यु के मुख में जाने से हम कतराने, रोने व चिल्लाने लगे हैं।

सर्वेषां प्राणवायुं हि दूषयति विषोपमम्।

शिशूनां बालवृद्धानां परोक्षे प्राणघातकम्॥३१॥

विषतुल्य प्रदूषण प्राणवायु को प्रदूषित कर रहा है। यह छोटे-छोटे बच्चों, बालकों और बूढ़ो के लिए परोक्ष रूप से प्राणघातक है।

प्रक्षिप्तो वाहनैर्धूमः कृष्णो बह्वपकारकः !

दुष्टरसायनैर्युक्तो घातकः श्वासरुग्वहः॥३२॥

वाहनों से निकलने वाला काला धुआँ अत्यन्त ही हानिकारक होता है। इससे श्वास कीं भयंकर, जानलेवा बीमारी होती है। यह धुआँ अनेक प्रकार के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हानिकारक रसायनिक तत्त्वों (टौक्सिक, कार्बन मोनो आक्साइड आदि) से युक्त होता है।

कोयलेन्धनतैलाद्याः उपयुक्ता यथायथम्।
संतापजनका दुष्टाः प्रयुक्ता धूमवर्धकाः॥३३॥

जैसे-जैसे कोयला, डीजल़, तेल और लकड़ी आदि का प्रयोग बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे ताप और धुआँ में वृद्धि होती जा रही है जो कष्टदायक है।

वातानुकूलयन्त्राणि दुर्वायोः क्षेपकाणि च।
विद्युज्जनकभूतानि जनयन्ति प्रदूषणम्॥३४॥

वातानुकूलित यंत्र, प्रदूषित वायु फेंकने वाले यंत्र (एग्जास्ट फैन) एवं विद्युत उत्पन्न करने वाले जनरेटर आदि यंत्र प्रदूषण फैलाते हैं।

औद्योगिकास्तु वारीणां वायोर्दूषणकारकाः।
कम्प्यूटरादिभिर्नित्यं क्रियते दूषणं महत्॥३५॥

उद्योग जल एवं वायु दोनों को दूषित करते हैं। कम्प्यूटर इंटरनेट, ई मेल आदि भी परोक्ष रूप से बहुत अधिक प्रदूषण फैलाते हैं।

संचारसाधनं सर्वं दूरोपग्रहप्रेषितम्।
दर्शनं दूरभाषं च प्रदूषणप्रभावितम्॥३६॥

अधुनातन संचार के साधन, छोड़े गये उपग्रह आदि सर्वाधिक प्रदूषण फैलाते हैं। दूरदर्शन एवं दूरभाष पर भी प्रदूषण का दुष्प्रभाव देखा व अनुभव किया जा सकता है।

प्रक्षेपास्त्रप्रतिस्पर्द्धा वर्धते या दिन दिने।
परमाणवस्त्रसंयुक्ता पर्यावरणदूषिका॥३७॥

तरह तरह के प्रक्षेपास्त्रों का परीक्षण एवं नूतन का निर्माण, परमाणु अस्त्र से युक्त प्रक्षेपक्रों का निर्माण पर्यावरण को प्रदूषित करने वाला कृत्य है।

प्रक्षेपास्त्रप्रतिस्पर्द्धा चोपग्रहक्षेपणक्रिया।
आग्नेयास्त्रस्य शस्त्रस्य निर्माणं घातकं भुवि॥३८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रक्षेपास्त्र एवं उपग्रह प्रक्षेपण की प्रक्रिया में इतनी अधिक प्रतिस्पर्द्धा हो गई है कि आग्नेयास्त्रों एवं शस्त्रों का निर्माण पृथ्वी पर सर्वसंहारक होता जा रहा है।

विश्वयुद्धस्य लीला या विनाशिका भयावहा।
सन्दृष्टा यानुभूता च कथं न नर तां त्यजेत्॥३९॥

विश्वयुद्ध की विनाशक एवं भयानक लीला को देखकर तथा उसके दुष्प्रभाव का अनुभव करके भी मनुष्य संहारक परमाणु अस्त्रों के निर्माण से विमुख नहीं हो रहा है।

टि०— संहारक परमाणु अस्त्रों का निर्माण सभी को बन्द कर देना चाहिए।

औद्योगिकैः समुद्धूतो धूमः पवनदूषकः।
संस्थाप्य निर्जने कार्यं पर्यावरणरक्षणम्॥४०॥

औद्योगिक कल-कारखानों से निकलने वाला धुआँ वातावरण को प्रदूषित करता है। इन प्रदूषणकारक उद्योगों को निर्जन स्थान पर स्थापित करके पर्यावरण की रक्षा की जानी चाहिए।

ईदे दीपोत्सवे बालैर्ध्वनिधूमविवर्धकैः।
स्फोटकैरेध्यते तत्त्वं पर्यावरणघातकम्॥४१॥

दीपावली, ईद, आदि उत्सवों पर बच्चों द्वारा छोड़े जाने वाले पटाखे, ध्वनि और धुआँ दोनों को छोड़ते हैं। इनसे निकलते वाला विषाक्त तत्त्व पर्यावरण के लिए अत्यन्त हानिकारक होता है।

नासिका वदनं नेत्रे कण्ठं कर्णावुरस्त्वचम्।
धूमः प्रविश्य नो हन्ति नीरूपा इषवो यथा॥४२॥

यह प्रदूषित धुआँ रूप रहित बाण की तरह चुपके से आँख, कान, नाक, गला, हृदय और त्वचा में प्रवेश करके प्राणी मात्र को नष्ट कर देता है।

तापविद्युद्गृहात् प्रासस्तापः संतापवर्धकः।
विद्युदुत्पादकस्तापः पर्यावरणदूषकः॥४३॥

तापविद्युत गृह से (थर्मल पावर प्रोजेक्ट) से उत्पन्न ताप वातावरण के ताप को बढ़ाता है। विद्युत उत्पन्न करने के लिए जिन ताप जनक, तत्त्व, यन्त्र तन्त्र का

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उपयोग किया जाता है के सभी पर्यावरण के तापमान को बढ़ाकर पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं।

वर्धितेनातितापेन चोष्णता परिवर्धते।

ऋतुचक्रं च्युतं चास्मात् शैत्यं शिथिलतां गतम्॥ ४४॥

अधिक ताप के बढ़ने से वातावरण में उष्णता उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। जिसकी वजह से ऋतुचक्र का चक्र परिवर्तित होने लगा है। शीत ऋतु की अवधि कम होने लगी है। नगरों से वर्षा का पलायन हो गया है।

टि०— तापप्रदूषण के दुष्प्रभाव के कारण जाड़ा, गर्मी और बरसात के स्थान पर सिर्फ गर्मी का ही बोलबाला हो गया है।

अतिवृष्टिरनावृष्टिरतिशैत्यं तथोष्णता।

ग्रीष्मस्य दर्शनं नूनं शैत्यवृष्ट्योः पलायनम्॥ ४५॥

अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि, अधिक ठंड और अधिक गर्मी यह सब मानव की देन बनते जा रहे हैं। मैदानी इलाकों में तो शीत और वर्षा ऋति, का पलायन सा होता जा रहा है। सर्वत्र केवल भीषण ग्रीष्म प्राप्त हो रहा है।

हिमस्तरलतां याति संवर्धयति सागरम्।

तटीयाः सर्वदेशाश्च क्षिप्रं प्रलयगामिनः।. ४६॥

भीषण गर्मी एवं प्रदूषण के कारण हिम पिघल रहे हैं और सागर का जल स्तर बढ़ने लगा है। सागर तटीय सभी देश शीघ्र ही डूब सकते हैं यदि प्रदूषण को रोका न गया।

रेडियोधर्मितायास्तु दुष्प्रभावः विनाशकः।

चर्मास्थिरुधिरं मांसं मेदां बुद्धिं विनाशकः॥ ४७॥

एक्सरे, सी. टी स्कैन एम आर आई आदि जाँच पद्धति से निकलने वाली रेडियो धर्मिता का दुष्प्रभाव भी विनाशक होता है। चर्म, अस्थि, रक्त, मांस, मेदा बुद्धि आदि पर इनका दुष्प्रभाव पड़ता है। ये रोगी के साथ साथ परिचालक को भी हानि पहुँचाती है।

क्रन्दनं वर्धते तस्य नान्तं समधिगच्छति।

फलपुष्पयुतो वृक्षस्त्रस्तः शुष्को वनस्पतिः॥ ४८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रदूषण की वजह से परेशान होकर फल पुष्प से लदे हुए परोपकारी वृक्ष क्रन्दन कर रहें हैं। उनकी परेशानी का अन्त नहीं हो पा रहा है। वृक्ष आज भयभीत हैं। वनस्पति सूख रहा है।

न कोऽपि भोजकस्त्वस्य वृक्षस्य सुवनस्य च।
संजातो हिंसको जीवः शोषको दोहकस्तरोः॥४९॥

सुन्दर वन एवं वृक्षों का लालन पालन करने वाला कोई नहीं है। मानव वृक्षों के शोषक और दोहक बन गये हैं।

प्ररोपणं पदार्थानां प्रापणीयं च चक्रवत्।
तदैवोर्वरा भूमिर्भविष्यत्यन्नतुष्टिदा॥५०॥

चक्रानुसार पदार्थो का रोपण और कर्तन होता रहे तो भूमि उर्वर रहेगी और खद्यान्न देगी। तभी सभी धरा से सन्तुष्ट रहेंगे।

यन्त्रप्रयोगजन्यैर्मा दूषणैर्दूषिता धरा।
भूतं भव्यं भविष्यं च पर्यावरणपावनम्॥५१॥

दूषित यन्त्रों के प्रयोग से धरा का वातावरण प्रदूषित न हो ऐसा उपाय करो। हमारा अतीत पावन था इसलिए वर्तमान और भविष्य का पर्यावरण भी पावन हो ऐसा उपाय करो।

पुरातनश्च चैतिह्ये मध्यो मह्यां गतो रसः।
आधुनिकागतेऽपूते सुखिनो दुःखिनो नरा॥५२॥

आज भारत की प्राचीन संस्कृति इतिहास बनकर रह गई है। मध्यकालीन मिश्रित संस्कृति भी समाप्त हो चुकी है। कृत्रिम आधुनिक भौतिक संस्कृति को प्राप्त करके सुखी प्राणी भी स्वतः को दुखी पा रहा है।

मानवो मानवाद्भीतो मानवाय प्रकल्पते।
बहुविध उपायो यो हानिकरो हि केवलम्॥५३॥

एक मानव दूसरे मानव से भयभीत होकर उसे नष्ट करने के लिए मानव संहारक नानाविध उपाय कर रहा है। यह सब केवल हानिकर ही है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकृतितो वयं दूरं गच्छामः कृत्रिमं स्थलम्।
रासायनिकवस्तूनि प्रयुज्य प्राप्नुमो रुजम्॥ ५४॥

समस्त दुःखों का मूल है सबका प्रकृति से विमुख होना और कृत्रिमता को गले लगाना। कृत्रिम रासायनिक वस्तुओं का इस्तेमाल करके हमसब नित नूतन बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं।

प्रकृतेः पंचतत्त्वेषु साम्यं तु सुखदायकम्।
वैषम्यं नाशकं नूनं त्यज लभस्व शं सुखम्॥ ५५॥

प्रकृति के पाँचों तत्त्वों में संतुलन सुखदायक और विषमता निश्चय ही प्रणाशक है। इसलिए विषमता को त्यागकर कल्याण और सुख को प्राप्त करो।

गगने ध्वनिना चोच्चैर्धूमाधिक्येन दूषणम्।
वायौ गैसीयतत्त्वानां न्यूनाधिक्येन मा भवेत्॥ ५६॥

गगन में ऊँची ध्वनि से एवं धूम से तथा गैसीय तत्त्वों को वायुमण्डल में असंतुलित मात्रा में होने से प्रदूषण फैल रहा है। ऐसा न होने पाये इस तरह का उपाय करो।

परितश्चातितापस्य रोधकस्तलरक्षकः।
परतः पूर्णतायातु भानोः सयत्नवान् भव॥ ५७॥

सूर्य के भीषणतम ताप को रोककर धरा के जीवों को सुरक्षित जीवन प्रदान करने वाले परत (ओजोन लेयार) में प्रदूषण की वजह से जो छिद्र हो गया है उसे भरने का उपाय यथा शीघ्र किया जाना चाहिए। अन्यथा जीव जगत् भस्म हो जायेगा।

विदां सदा वचः स्मृत्वा व्यवहारेऽनुचिन्तय।
नाशिका मशकानां तु चौषधिर्नरनाशिका॥ ५८॥

पर्यावरणविदों के वचनों को सादर स्मरण करें और व्यवहार में लाएँ। कीट नाशक औषधियाँ नर का ही नाश करती हैं।

चतुश्चक्री द्विचक्री वा त्रिचक्रियन्त्रवाहनम्।
सुखपूर्णमपि त्याज्यं धूमाद्धि हानिकारकम्॥ ५९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दो पहिए, तीन पहिए या चार पहिए वाले वाहन यद्यपि सुखकारक हैं परन्तु इनसे निकलने वाला प्रदूषित धुआँ हानिकार होता है। इसलिए इनका प्रयोग आवश्यकता पड़ने पर ही करना चाहिए।

टि०— व्यक्तिगत वाहन के स्थान पर सार्वजनिक वाहन का उपयोग अधिक करें। वाहन का मिलकर प्रयोग करें।

चरकसंहितास्तु वचनं स्मर भो नर।

न दुष्टयानमारोहेन्न कालमतिपातयेत्॥ ६०॥

हे मनुज, चरक संहिता के वचन को स्मरण करो जिसमें दुष्टा वाहनादि का प्रयोग वर्जित है। अपने प्राप्त समय को व्यर्थ में मत गँवायें।

मान्यन्यायालयेनापि लोकहितमनीषया।

पालय दत्तमादेशं सर्वं प्रदूषणान्तकम्॥ ६१॥

माननीय न्यायालय द्वारा जनहित में दिए गए आदेशों का पालन करो। ये आदेश प्रदूषण को समाप्त करने वाले होते हैं।

भारतसर्वकारेण संचारमाध्यमेन च।

पर्यावरणरक्षार्थं दिशा निर्दिश्यते सदा॥ ६२॥

भारत सरकार विभिन्न संचार माध्यमों से पर्यावरण की रक्षा के लिए दिशा-निर्देश जारी करती रहती है।

आनन्दो न निरानन्दो भवेद्भव्योत्सवे विभे।

न किंचिदपि कर्तव्यं तथा दूषणकारकम्॥ ६३॥

हे विभे! उत्सव का आनन्द, निरानन्द में न बदल जाए, इसलिए हमें ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए जिससे पर्यावरण प्रदूषित हो।

प्राणशक्तिस्वरूपं त्वं पावनं पवनं विभुम्।

प्ररक्ष प्राणरक्षायै प्राणिनां तद्गतात्मनाम्॥ ६४॥

हे नर, प्राणशक्ति स्वरूप पवित्र पवन की रक्षा अपने प्राण की रक्षा के लिए भी करो। इस ब्याज से अन्य प्राणियों की रक्षा भी हो सके।

वृक्षाणां रोपणे वृद्धौ वर्धने रक्षणे सदा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भाव्यं हि तत्परैः सर्वैर्वृक्षाः सर्वोपकारकाः॥ ६५॥

वायु प्रदूषण को नियन्त्रित करने के लिए तथा प्रदूषण को समाप्त करने के लिए पेड़ों को लगायें, बढ़ायें, उन्हें पुष्ट करें तथा उनकी रक्षा करें क्योंकि वृक्ष सभी प्राणियों के लिए उपकारक है।

पक्षिणः पंक्तिबद्धास्ते विचरेयुः सरोवरे।
नदो नदी वनं भूमिः प्रसूनैः पुष्पिता भवेत्॥ ६६॥

पंक्तिबद्ध होकर पक्षी सरोवरों में विहार करें। नद-नदियाँ, वन-पर्वत एवं पृथ्वी फूलों से खिल जाएँ।

प्रवहेन्निर्मलो वायुर्वृक्षैर्विलसिता धरा।
धारयेत् सर्वसत्वं हि निर्मला जलबिन्दवः॥ ६७॥

सर्वत्र विशुद्ध वायु बहे, जल की एक-एक बूँद निर्मल हो, पृथ्वी पेड़ों से पट जाए और प्रसन्न होकर सभी प्राणियों को धारण करने में सक्षम हो जाए।

प्रदूषणस्य नामापि शृणुयान्न च कामयेत्।
वायुप्रदूषणञ्छीघ्रं संगच्छेत् प्रलयं मुखम्॥ ६८॥

प्रदूषण का नाम भी सुनाई न दे और न ही कोई मन में भी इसकी कामना करें। इस प्रकार वायु प्रदूषण शीघ्र ही काल के गाल में समा जाए।

त्यजतु यन्त्र! वरं भुवि मारुतं
वहतु वाहन! पावनमारुतम्।
न खलु धूमलवह्निविषोपमः
भवतु जीवनपावनमोदकम्॥ ६९॥

यन्त्र-संयन्त्र इस पृथ्वी पर विशुद्ध वायु को छोड़ें। वाहन विशुद्ध वायु को वहन करें। अग्नि विषाक्त धुआँ से युक्त न होने पाए। प्राणियों का जीवन पावन हो और प्रसन्नता से भर जाए।

॥ इति श्रीजगन्नाथशुक्लसुतश्रीमदशोककुमारशुक्लविरचितो
वायुप्रदूषणनामकश्चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ इति शम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥अथ पंचमोऽध्याय:॥

जलप्रदूषणम्

जलं तु जगदाधारो जलेन पूरितं जगत्।
जल-जातं जगत्सर्वं जलं हि जनजीवनम्॥१॥

जल जगत् का आधार है। जल से जगत् पूर्ण है। जल से ही जगत की उत्पत्ति होती है। जल ही हमारा जीवन है।

पय:पते पुनातु पातु न: पुनातु केवलं
कलौ कलंककुत्सितं करोतु नाशकेवलम्।
पय: प्रवाहरोधित: प्रदूषितो न केवलं
भवेत् स्वकीयहेतवे नरै: कदापि केवलम्॥ २॥

हे अपाम्पति वरुण हमें आप पवित्र करें और हमारी रक्षा करें। कलियुग के पर्यावरण प्रदूषण रूपी कलंक को तथा कुत्सित कर्म को नष्ट कर दें। पय का प्रवाह प्ररोधित और प्रदूषित न हो। प्राणी केवल अपने हित के लिए जल को प्रदूषित न करे।

पय: समस्त भूतले भवेत् सुनिर्मलं महत्
सयत्नवान् नरो भवेत् करोतु तन्न दूषितम्।
प्रदूषिता प्रपूरिता मलैर्जलैर्नरैर्नदी
विनाशिका नृनाशिका प्रणाशिका न सा सदा॥ ३॥

समस्त धरती पर जल अत्यन्त निर्मल हो। मानव जल को प्रदूषित न होने दे। नदी मानवों के मलजल से भरकर व प्रदूषित होकर मानव सहित जगद् विनाशिका कहीं न हो जाये।

वरुणं सादरं नत्वा दुर्लभं जलजीवनम्।
रक्षितुं प्रार्थये येन कामदा प्रकृतिर्भवेत्॥ ४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वरुण देवता को सादर नमस्कार करके उनसे यह विनती करता हूँ कि वे दुर्लभ जल जीवन की रक्षा करें ताकि प्रकृति अनुकूल हो सके।

अन्ने फले पदार्थे च प्राणिषु स्तनधारिषु।

रसेन रक्तरूपेण जलं दुग्धेन तिष्ठति॥५॥

अन्न में, फल-फूल में प्राणी व अन्य पदार्थों में यह जल ही रस, रक्त और दुग्ध के रूप में विद्यमान रहता है।

आपो रसोऽमृतं तत्त्वं श्रुत्युक्तं स्मृतिसम्मतम्।

अद्भ्यो रसाः समे जाताः संसारस्य हिताय च॥६॥

हमारे श्रुति एवं स्मृति ग्रन्थों ने जल तत्त्व को रस और अमृत तत्त्व की संज्ञा दी है। जल से ही लोक कल्याण के लिए नाना प्रकार के रसों की रचना प्रभु ने की है।

प्रातरुत्थाय सेवेत प्रथमं जलममृतम्।

निशायां शयनात् पूर्वं नीरोगो जायते नरः॥७॥

अमृत तत्त्व स्वरूप जल को सुबह उठकर और सोने से पहले जो भी पीता है वह नर सदा निरोग रहता है।

जलमात्रं पिबन्तस्ते पूतात्मानो महर्षयः।

जीवन्ति स्म तपस्यन्तो भारते सर्ववन्दिते॥८॥

पूज्य भारत में ऐसे अनेक पवित्रात्मा मुनि हुए हैं जो केवल शुद्ध जल पीकर तपस्या करते हुए अपना काल पूरा करते थे।

प्राप्यतेऽद्यापि सम्पूतं जलं पीत्वा तपस्तपन्।

मुनीशो यापयन् कालं भव्ये भारतभूतले॥९॥

तपः पूत परायण ऋषि मुनियों के देश इस भारत में आज भी अनेक मुनि ऐसे हैं जो केवल पवित्र जल पीकर अपना जीवन बिता देते हैं।

नित्यक्रियानिवृत्यर्थं जगत्संचालनाय च।

आहाराय विहाराय जलं सर्वैरपेक्षितम्॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नित्य क्रिया की निवृत्ति से लेकर जगत के जीवन को चलाने तक के लिए जल की महती आवश्यकता होती है। यहाँ तक कि प्राणी का आहार विहार भी जल के बिना संभव नहीं है।

प्रथमं सेवते प्राणी पावनं पवनं पुनः।
द्वितीयं सेवते प्राणी जलममृतजीवनम्।।११।।
तृतीयं सेवते प्राणी भोजनं पुष्टिवर्धकम्।
चतुर्थं सेवते प्राणी वसनमंगरक्षकम्।।१२।।
पंचमं सेवते प्राणी वासं सुखविवर्धकम्।
प्राप्तेषु पंचस्वेतेषु प्राप्यते गतिरुत्तमा।।१३।।

जीवन धारण करने के लिए प्राणी सबसे पहले शुद्ध प्राणवायु ग्रहण करता है। उसके बाद शुद्ध जल ग्रहण करता है। फिर पौष्टिक आहार ग्रहण करता है। तदुपरान्त तन की रक्षा के लिए वस्त्र धारण करता है। उसके बाद सुविधा-सम्पन्न आवास चाहता है। इस तरह इन पाँचों (वायु, जल, भोजन, वस्त्र, आवास) के प्राप्त हो जाने के बाद ही प्राणी जीवन का सही आनन्द ले पाता है।

सर्वेषां हि पदार्थानां विशुद्धी रक्षिता भवेत्।
उपायः तादृशः कार्यः पर्यावरणमुत्तमम्।।१४।।

हम सब अनवरत यह प्रयास करें कि इन जीवन तत्त्वों की शुद्धता की रक्षा हर हाल में होती रहे तभी उत्तम पर्यावरण बना रह सकता है।

स्वार्थे रताः समस्ता ये जना हि जलदूषकाः।
न केवलं जलं शुद्धं जीवनं दूषयन्ति ते।।१५।।

स्वार्थ सिद्धि में रत आज के लोग न केवल जल को प्रदूषित कर रहे हैं बल्कि जगत के साथ-साथ अपने जीवन को भी प्रदूषित कर रहे हैं।

नदीनां जलदात्रीणां दृष्ट्वैवं जलदुर्दशाम्।
किं कर्तव्यविमूढस्य मनो मे खिद्यते परम्।।१६।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समस्त प्राणियों को पेय जल प्रदान करने वाली नदियों और उनके जल की दुर्दशा को देखकर मेरा मन अत्यन्त खिन्न हो रहा है। मेरा मन किंकर्तव्यविमूढ हो गया है।

न ह्येषा दुर्दशा दृष्टा न मया कल्पना कृता।
दृश्यते चाद्य नेत्राभ्यामश्रूणि निपतन्त्यहो।।१७।।

जल की जिस दु:स्थिति को मैं आज अपने नेत्रों से देख रहा हूँ, इसकी तो मैंने कल्पना भी नहीं की थी। इस दु:स्थिति को देखकर मेरी आँखों से आँसू गिर रहे हैं।

नैकं मया जलस्थानं दृष्टं नाद्य प्रदूषितम्।
नलकूपो नदी कूप: प्रपात: सागर: सर:।।१८।।

आज कोई भी जलदायक ऐसा नहीं रहा जो प्रदूषित न हो। चाहे वह नलकूप हो, कूप हो, नदी हो, तालाब हो, झरना हो या सागर हो।

नैका नदी मया दृष्टा नरैर्या न प्रदूषिता।
कृष्णा गोदावरी गंगा कावेरी नर्मदा तथा।।१९।।

आज कोई भी नदी ऐसी नहीं बची है जिसे मनुष्य ने प्रदूषित न कर दिया हो। चाहे वह गंगा हो, या गोदावरी, कृष्णा हो या कावेरी अथवा नर्मदा सभी आज पूर्णत: प्रदूषित हैं।

तुंगभद्रा विपाशा वा चन्द्रभागा च शारदा।
नद्यो महानदा: सर्वे सन्ति सम्यक् प्रदूषिता:।।२०।।

तुंगभद्रा, व्यास, चन्द्रभागा, सरस्वती आदि नदियाँ तथा ब्रह्मपुत्र स्वर्णभद्र आदि महानद आज पूरी तरह से प्रदूषित हैं।

यन्त्रशालापरित्यक्तैर्नगरदूषितद्रवै:।
नदीनदौ समुद्राश्च प्रक्षिप्तैर्दूषणं गता:।।२१।।

फैक्ट्रियों द्वारा छोड़े गए प्रदूषित रासायनिक जल एवं औद्योगिक कचरों को तथा नगरवासियों के मलमूत्र व कचरों को नदों एवं नदियों में प्रवाहित कर दिया जाता है जिससे ये तो प्रदूषित होते ही हैं, अन्त में ये ही समुद्र में मिलकर उसे भी प्रदूषित कर रहे हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाकशाला परित्यक्तं शौचालयात् समागतम्।
स्नानागारात् समानीतं वारि नाल्यां प्रवाहितम्।।२२।।
नाल्या च कुल्यया नित्यं नदीनदेषु पातितम्।
दुष्कृतं दुर्वहं वारि नदीं नाली करोति च।।२३।।

बड़ी-बड़ी पाकशालाओं, शौचालयों तथा स्नानागारों से निकलने वाले प्रदूषित पदार्थ जब नालियों और नालों के द्वारा नदियों में प्रवाहित कर दिए जाते हैं तब वे प्रदूषित पदार्थ व प्रदूषित पानी नदियों को नाली बना देते हैं।

कृष्णा भवतु गंगा वाऽपेया मलवाहिनी।
स्वां स्वां क्रियां परित्यज्य कुर्वन्ति मलिनां क्रियाम्।।२४।।

कृष्णा नदी हो या गंगा नदी सभी आज अपेय हो गई हैं। वे मल ढोते-ढोते मलिन हो गई हैं। ये नदियाँ मलापहा न हो कर मलवाहिनी बन गई हैं।

प्रक्षिप्ताः सुपरित्यक्ता रासायनिकदुर्द्रवाः।
जले सम्मील्य ते नित्यं कुर्वन्ति जलदूषणम्।।२५।।

नदियों व जलाशयों आदि में फेंके गए दूषित रासायनिक तत्त्व पानी में मिलकर उसे प्रदूषित कर रहे हैं।

जीवानां जलतत्त्वानां नाशेन जायते जलम्।
मलिनं रक्षका नित्यं नश्यन्ति दूषिते जले।।२६।।

जल जीवों के तथा जल में पाये जाने वाले तत्त्वों के नष्ट होने से जल मलिन होता जा रहा है। जिसकी वजह से जल रक्षक तत्त्व नित्य नष्ट हो रहे हैं।

वैष्णवीं हृदये ध्यात्वाऽर्द्धकुमारीं महेश्वरीम्।
बाणगंगां ततो नत्वा स्नात्वा दृष्ट्वा लिखाम्यहम्।।२७।।

माता वैष्णवी को हृदय में ध्यान करके तथा अर्धकुंआरी देवी का स्मरण करके और बाण गंगा नदी में स्नान करके उसकी दुर्दशा का वर्णन कर रहा हूँ।

स्वपत्न्या विभया साकं सुतयाऽपर्णया सह।
सार्धमभूतपूर्वेण पुत्रेण वैष्णवीं गतः।।२८।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विगत वर्ष अपनी पत्नी विभा, पुत्र अभूतपूर्व और पुत्री अपर्णा को लेकर माता वैष्णवी के दर्शन के लिए वैष्णवी देवी के दरबार में गया।

कुमार्यापर्णया पृष्टः कथं गंगा समागता।
कृशतनुः कथं जाता मया प्रोक्ता तदा सुता॥ २९॥

मेरी आत्मजा कुमारी अपर्णा ने मुझसे प्रश्न किया कि यह गंगा गंदी इतनी क्यों है ? यह कृश काय क्यों है ? तब मैंने अपनी प्रिय पुत्री से कहा।

पिपासाशमनायेयं बाणेन प्रकटीकृता।
बाणगंगा तदाख्याता वैष्णव्या सुकुमार्यया॥३०॥

कहा जाता है कि अपनी प्यास और जगत की प्यास को बुझाने के लिए कुमारी माता वैष्णवी ने अपने बाण से इस नदी को प्रकट किया इसलिए इसका नाम बाणगंगा पड़ा।

पर्वताद् वहमानैषा पाययित्वा तु दर्शकान्।
स्नपयित्वा जनान् भक्तान् मलिना शुष्कतांगता॥३१॥

माता वैष्णवी के पर्वत से निकलकर यह अपने भक्तों और दर्शकों को जल पिलाती हुई तथा उनके मल को धोती हुई स्वयं ही मलिन हो गई है। यह मलिन ही नहीं हो गई बल्कि सूख सी भी गई है।

फेनकेन तथाप्यत्र भावनया विशुद्धया।
स्नान्ति नरा मलोत्सर्गं कुर्वन्तो निशिवासरम्॥३२॥

बाण गंगा के तट पर लोग विशुद्ध भावना से, दिन-रात नित्य क्रिया से निवृत्त होने के उपरांत साबुन लगाकर शारीरिक मल धोते हैं और अपने पाप का इतिश्री समझ कर विदा ले लेते हैं।

लोकसेव्यं तटं सर्वं विष्ठया परिपूरितम्।
स्वपादस्थापनं तत्र संजातमतिदुष्करम्॥३३॥

जनसेवा पर टिका हुआ (बाणगंगा का तट) इस प्रकार विष्ठा से पटा हुआ था कि स्नान करने या जलसेवन के लिए वहाँ पर पैर रखना भी दुष्कर था।

तथापि श्रद्धया भक्ताः स्नान्ति यान्ति स्वमन्दिरम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भक्तिभावान्विता गंगां प्रपूज्य प्राप्य शं सुखम्।।३४।।

फिर भी भक्ति भाव से भरकर भक्त बाणगंगा में स्नान करते हैं, इसकी पूजा करते हैं, माता के मन्दिर में जाते हैं और मनोकामना पूरी करके सुख प्राप्त करते हैं। दूसरे अर्थ में माता के दर्शन के उपरान्त मनोकामना पूरी होने की खुशी में स्नान करके प्रसन्नतापूर्वक अपने घर को लौट आते हैं।

तथैव कामदा पूता यमुना मलहारिणी।
तटिनी शुष्कतां याता मलिनतातिवर्धिता।।३५।।

उसी तरह मनोकामनाओं को पूर्ण कर अभिलषित फल को देने वाली तथा मल को दूर करने वाली यमुना भी आज प्रदूषित हो गई है। इसका किनारा सूख गया है।

कृष्णा कृष्णायते नित्यं नाली संजायते नदी।
राजधान्यां हि देहल्यां प्रभ्रष्टा विकृतिं गता।।३६।।

कृष्णा (यमुना) नदी का तो स्वरूप ही कृष्ण हो गया है, नदियाँ प्रदूषित पदार्थ को स्वीकार करते-करते कृष्णा (काली) बन गई हैं। भारत की राजधानी दिल्ली में यमुना का स्वरूप इतना विकृत हो गया है कि इसने बड़े नाले का रूप ले लिया है।

सूर्यषष्ठी व्रतं कर्तुं व्रती याति तटं यदा।
स्नातुमर्घ्यं प्रदातुं च यमुना लज्जते तदा।।३७।।

सूर्य षष्ठी (छठ) का व्रत करने वाला व्रती जब अर्घ्य देने के लिए यमुना के तट पर जाता है तब यमुना स्वयं को लज्जित महूसस करती है।

यमुना कृष्णा हि देहल्यां नाला संजाता नदी।
मन्त्रिन् नेतृगणैर्युक्तं महानगरदूषितम्।। ३८।।

यमुना नदी भारत की राजधानी दिल्ली में ही काला नाला बन कर रह गई है। मंत्री एवं नेतागण से युक्त महानगर आज दूषित है।

नालामेव नदीं मत्वा योषिदेका हि सादरम्।
पूजावशिष्टवस्तूनां कृतवती विसर्जनम्।। ३९।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाला और नदी में भेद करना बहुत मुश्किल हो गया है। मेरे समक्ष एक युवती ने एक बड़े नाले को नदी समझकर हाथ जोड़ कर पूजावशिष्ट सामग्री को नाले में प्रवाहित की।

भावाधीनं जगत्सर्व भावे तिष्ठन्ति देवताः।

भावेन प्राप्यतेऽभीष्टं तस्माद्भावान्वितो भव॥४०॥

भाव के अधीन ही जगत् की स्थिति और विस्तार है। देवता का निवास भी भाव में ही होता है। भाव से ही मनोवाञ्छित फल मिलता है इसलिए तुम भाववान बनो।

न जीवनं वरं वेरण्यवृत्तयः प्रवृत्तयो

न वारिवायुपावकाः प्रणाशका सुदूषिताः।

जगद्धिताय जीवनं जगत्प्रभुः प्रणीतवान्

कथं करोति कैतवे कृतिं नरः प्रदूषिताम्॥४१॥

न श्रेष्ठ मानव जीवन और न उसकी प्रवृत्ति, न वारि, न वायु और न पावक, दूषित व प्रणाशक हों। जगत्प्रभु ने जगत् के हित के लिए जीवन बनाया है। फिर मनुष्य धूर्तता पूर्ण तरीके से प्रदूषित क्रिया द्वारा परमात्मा की कृति का विनाश क्यों कर रहा है?

नर निर्मलतायास्तु ध्यानं कृत्वा नदीस्थलम्।

मन्दिरे गमनं युक्तमायुरारोग्यप्रीतिदम्॥४२॥

हे मनुज! सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता का ध्यान करके ही वहाँ जाओ या उनका सेवन करो, तभी ये नदी, मन्दिर, स्थल आदि तुम्हें आयु, आरोग्य और प्यार प्रदान करेंगे।

मा कार्षीरिह कोलालं दुष्टं स्नानादिना नर।

अमृतं स्त्रवते नित्यं लोकजीवनहेतवे॥४३॥

हे नर! स्नानादि के द्वारा पवित्र निर्मल जल को दूषित मत करो क्योंकि जन-जीवन के लिए ही नदियाँ अमृत तुल्य जल प्रदान करती हैं।

गंगायाः प्रदूषणम्

त्रिपथगे शुभगे हरिवल्लभे,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भुवन तारिणि शैलसुते प्रिये।

यदि कृपा मयि नास्ति मलापहे,

न मम जीवनमस्ति नमोऽस्तु ते।।४४।।

तीनों लोकों में विचरण करने वाली सुन्दर स्वरूप धारण करने वाली, त्रिभुवन तारिणी, मलमोचिनी, विष्णुप्रिया हिमालय कीं पुत्री हे गंगा, तुम्हारी कृपा के बिना मेरा जीवन जीवन नहीं है। तुझे मेरा प्रणाम है।

स्रष्टुर्या प्रथमाः सृष्टिः कलिकलंकनाशिनि।

त्रिपथगे हरेर्भार्ये भर हरापदो मम।।४५।।

विधाता की प्रथम सृष्टि, कलि-कलंक नाशिनि, तीनों लोकों का उद्धार करने वाली हे हरिप्रिये गंगे मेरी आपदाओं को हरो और कामनाओं को पूर्ण करो।

विष्णोः पादोदके गंगे शंकरशिखरे स्थिते।

पुनातु प्रत्यहं लोकानुषित्वा भारते भुवि।।४६।।

भगवान् विष्णु के चरणोदक से उत्पन्न होकर भगवान् शंकर की जटाओं में सिमटकर भारतभूमि पर अवतरित होकर प्रवाहित होने वाली हे गंगे, हम भारतवासियों को पवित्र करो।

धन्यो राजा बलिर्यस्य प्रसादात् पादसेवनात्।

विष्णोः प्रियोदकं ब्रह्मा कमण्डलौ हि लब्धवान्।।४७।।

राजा बलि धन्य हैं कि जिनकी कृपा से प्रभु पाद-सेवन का अवसर ब्रह्मा जी को मिला। ब्रह्मा जी ने भगवान् वामन के चरणोदक को अपने कमण्डलु में धारण किया जो कालान्तर में गंगा के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुई।

सगरजान् सुतान् गंगा श्रापग्रस्तान् प्रपीडितान्।

भगीरथस्य यत्नेन तारयितुं समागता ।।४८।।

राजा सगर के पुत्रों को ऋषि गौतम के शाप से मुक्त करने के लिए महान अभियंता तपस्वी भगीरथ ने कठोर तप किया। उनके सत् प्रयत्न से गंगा धरती पर अवतरित हुई।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आगता जह्नुजा जाता शंकरशिखरे स्थिता।
भुव्यानीता पुनीता या पुनातु पावनं जलम्॥४९॥

जिस जाह्नवी गंगा को कालान्तर में भगवान् शंकर ने अपनी जटाओं में धारण किया। वह पवित्र गंगा पृथ्वी के जल को पवित्र रखे।

टि०—गंगा की कल-कल, छल-छल धारा ने ऋषि जह्नु के तप में व्यवधान उपस्थित कर दिया। ऋषि जह्नु ने क्रोध में उसे पी लिया परन्तु निवेदन करने पर गंगा को अपने जह्नु (जांघ) से प्रकट किया, इसीलिए गंगा को ऋषि जह्नु की पुत्री जाह्नवी भी कहा जाता है।

जगदुद्धारिका गंगा विमला विमलोदका।
कृता कलुषीतास्माभिः कालुष्येन कुकर्मणा॥५०॥

समस्त जगत् को अपने विमल जल से पवित्र करने वाली गंगा स्वयं में अत्यन्त पवित्र है, परन्तु आज मनुष्य ने अपने कलुषित कर्म से उसे प्रदूषित कर दिया है।

पतितान् पाविता पूताऽपूता न स्यात् कथञ्चन।
पातितैः पतितैः क्षिप्तैर्दूषितैर्दूषणं गता॥५१॥

पतितों को पवित्र करने से गंगा अपवित्र नहीं हुई है। बल्कि पतितों द्वारा फेंके गए प्रदूषित पदार्थों से वह प्रदूषित हुई है।

आहुगलेर्हरिद्वारं गंगा भारतमध्यगा।
कृष्णोदकैरपूता च भवत्यौद्योगिकैर्मलैः॥५२॥

हुगली से लेकर हरिद्वार तक भारत के मध्यभाग में बहने वाली गंगा औद्योगिक मल-जल से अपवित्र हुई है।

नद्यो नदाः पुरा पूताः पेयाः पूज्या गुणान्विताः।
कामदा मोक्षदा रम्या गम्या सेव्याश्च सर्वदा॥५३॥

आज के कल-युग से पूर्व सभी नद एवं नदियाँ परम पावन थी, पेय थी इसलिए पूज्य थी और गुणों की खान थीं। ये सभी कामनाओ की पूर्ति करती थी, मोक्ष प्राप्त कराती थी, नदियाँ सुन्दर थीं, इसलिए श्रेय और प्रेय थी, नदियाँ सेवन के योग्य थी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भागीरथ्यास्ततटं वारि दुष्टद्रव्येणदूषितम्।
मलिनं पंकयुक्तं तद् दुर्गन्धं दुर्गतिं गतम्।।५४।।

गंगा का तट एवं गंगा का जल दोनों ही दूषित पदार्थों से दूषित, पंकयुक्त हो गए हैं। कहीं-कहीं तो गंगा के तट के दुर्गन्ध की भी दुर्गति हो रही है।

बक्सरस्य नदीतीरं स्नातुं श्रद्धायुतो गतः।
क्वाहं स्नामि कुतो यामि पृच्छामि स्वात्मना स्वयम्।।५५।।

बक्सर में गंगा के तट पर स्नान करने के लिए श्रद्धापूर्वक गया परन्तु गंगा नदी की दुर्दशा को देखकर स्वयं से प्रश्न करने लगा कहाँ स्नान करुँ, कहाँ जाऊँ?

प्राप्य परवशं दुःखमाप्नोति श्रेष्ठमानवः।
माता पुत्रेण संत्रस्ता निरुपायाभवत्तदा।।५६।।

अपने निर्मल जल पर गर्व करने वाली गंगा माता मानवपुत्र से दुःखी है। वह निरुपाय हो गई है। पराधीन होकर श्रेष्ठ मानव भी दुःख प्राप्त करता है।

तटिन्यो मातरोऽस्माकमवरोधो वरो न सः।
पुष्पदीपार्ध्यदानेन पूजय निर्मलाः कुरु।।५७।।

नदियाँ हमारी माता है। पुष्प, दीप, अर्ध्य, दान से इनकी पूजा करो, पर इनके जल को मलिन मत होने दो, इनके स्वच्छन्द प्रवाह में अवरोध उपस्थित कर इन्हें प्रदूषित मत करो।

प्रत्यहं पूजनीयास्ताः स्नानीयाः पापनाशिकाः।
अदग्धाञ्छवशेषान्तु मा क्षिप न च पीडय।।५८।।

नदियाँ पापनाशिनी हैं, पूज्य हैं। इनके पावन जल में स्नान करो परन्तु आधे जले हुए शव को या पूर्ण शव को नदी में मत प्रवाहित करो।

अवशिष्टान् पदार्थान् वा गुरुगृहादवाञ्छितान्।
जले निर्गमने मार्गे मा क्षिप रुन्ध्दि तान् सदा।।५९।।

बड़ें-बड़ें भवनों से फेंके गए अवाञ्छित पदार्थों को जल में या जल की निकासी पर मत फेंकों। इसे रोको।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जलगमनमार्गे ये प्रक्षिप्ता दूषितद्रवाः।
प्रवाहस्यावरोधेन पर्यावरणदूषकाः।।६०।।

जल के निगर्मन मार्ग पर फेंके गए प्रदूषित पदार्थ, उसके प्रवाह में अवरोध उत्पन्न करते हैं और पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं।

मशकजननी चैषा दुर्गन्धदायिकाऽशुचिः।
अशुभाऽप्रीतिदा सर्वा क्रिया संतापवर्धिका।।६१।।

प्रदूषित जल वाली नदी अपवित्र व अशुभ होती है। वह दुर्गन्ध देती है। इसमें मच्छर पैदा होते रहते हैं। प्रदूषित नदी की सारी क्रिया संताप वर्धक होती है।

पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा पीत्वा तु दूषितं जलम्।
प्रत्यहं प्राणिनो मृत्युं प्राप्नुवन्ति च ते रुजम्।।६२।।

प्रदूषित जल को बार-बार पीने से प्राणी रोगी हो रहे हैं और मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं।

जीवानां जलतत्त्वानां नाशेन जायते जलम्।
अपेयं नाशकं नित्यं पक्षिणश्च पलायिताः।। ६३।।

जल तत्त्वों और जल जीवों के नष्ट होने से जल अपेय एवं विनाशक बन गया है जिसकी वजह से पक्षियों का पलायन नदी तटों से देखा जा सकता है।

प्रदूषितं पयः कृष्णं प्राणिनामुपकारकम्।
पातुं न यतते प्राणी पिपासितोपि पीडितः।। ६४।।

प्राणियों का उपकार करने वाले प्रदूषित काले पानी को पाकर प्यास से पीडित प्राणी भी उस पानी को पीने का प्रयास नहीं करता।

कष्टानि प्रहसन् सोढ्वा कीर्तिमाञ्जायते नरः।
धैर्येण धनमाने सः प्राप्नोति फलमुत्तमम्।। ६५।।

हँसते हुए कष्ट सहने वाला मानव ही यशस्वी होता है। वह धैर्य से धन, मान और उत्तम फल प्राप्त करता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अहिंसायाः प्रतिष्ठायां न वैरो न च रूक्षता।

प्रदूषणं परा हिंसा हिंसको नर मा भव॥६६॥

अहिंसा को प्रतिष्ठापित किया जाये तो न दुश्मनी, न कड़वाहट ही होगी। प्रदूषण एक हिंसक कर्म है। हे नर, तुम हिंसक मत बनो।

नद्यो नदाश्च कूपाश्च पूताः पेयाः सरोवराः।

कामदाः मोक्षदाः प्रीतेर्वर्धकाः हितसाधकाः॥६७॥

नद, नदियाँ, कूएँ और सरोवर यदि पूत हैं, पेय हैं, तो कामद मोक्षद प्रीतिवर्धक और हित साधक हैं।

सरित् सरोवरः मेघः कूपो नलश्च सागरः।

जीवन्ति वारभिश्चैते मृयन्ते ते जलं विना॥६८॥

नदियाँ तालाब, कूएँ, नल, समुद्र और मेघ जल से ही जीवन धारण करते हैं। और जल के बिना मृत्यु को प्राप्त करते हैं।

प्रददाति पयः पुष्पं पावनं पवनं पयः।

प्रवनं प्रवरं पुण्यं प्राणदं प्राणिपालकम्॥६९॥

जल पवित्र पवन पुष्प, दुग्ध, सुन्दर व श्रेष्ठ वन और जल जीवन को प्रदान करता है। जल प्राणी पालक होता है।

जलं हि मानवाधारो जलेन जीवितं जगत्।

जलोर्जा सुलभा लोके सागरो जलदः पथः॥७०॥

जल मानव का आधार है। जल से ही जगत जीवित है। जल ऊर्जा सर्वत्र सुलभ है। सागर जल का और जलमार्ग का प्रदाता है।

तस्मात् पूर्णप्रयत्नेन त्यजापेयं मलं विषम्।

निरोगो भव शान्तिं च लभस्व परमं फलम्॥७१॥

इसलिए हे नर, अपेय को पीने से बचें। अपेय रासायनिक दूषित पेय को न पियें। तभी आप सब निरोग रह सकेंगे और सुख-शान्ति को पा सकेंगे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ओषधिना नृ संशोध्य यन्त्रेण वसनेन वा।

पक्त्वा तु निर्मलं वारि पिब भुवि सुखी भव॥७२॥

हे मनुज! औषधि से, या यन्त्रों से या साफ कपड़े से छानकर उबले हुए शुद्ध जल को पियो। और हमेशा सुखी रहो।

गृहे समागतान् सर्वानतिथीन् मित्रमण्डलींम्।

पाययित्वा जलं शुद्धं प्रीतिं वर्धय सर्वदा॥७३॥

अपने घर आए हुए अतिथि को तथा मित्र-मण्डली को शुद्ध जल पिलाकर परस्पर प्यार बढ़ाओ।

शिक्षय त्वं सदा पातुं निर्मलं शोधितं जलम्।

न कोऽपि स्याज्जलं पीत्वा रुग्णो हि धरणीतले॥७४॥

सभी को निर्मल शोधित जल पीने की शिक्षा दो ताकि प्रदूषित जल पीकर कोई भी प्राणी इस धरती पर रोगी न होने पाये।

नदी सरोवरः कूपः सागरो वनपर्वते।

वनस्पतिः फलं मूलमन्नं जलेन जीवति॥७५॥

नदी, तालाब, कुआँ, समुद्र, वन, पर्वत, वनस्पति,फल-फूल, मूल और अन्न सभी जल से ही जीवित रहते हैं।

जलेन वर्धते तेषां हरितिमा मनोरमा।

दर्शनं स्पर्शनं ह्यस्य सेवनं सुखदायकम्॥७६॥

जल से ही पेड़-पौधों की हरियाली कायम रहती है। धरती और धरती के पदार्थ सभी जल से ही मनोरम लगते हैं। शुद्ध जल का तो स्पर्श, दर्शन और सेवन सब सुखदायक होता है।

वारिदो वारि वै नीत्वा प्रदूषितं विषौषधम्।

भूमिं संदूष्य मा हन्यादुपायं कुरु शाश्वतम्॥७७॥

कीट नाशक, रासायनिक तत्त्वों के निरन्तर प्रयोग करने से यह पानी को प्रदूषित करता है और भूमि को भी प्रदूषित करता है। जब यही वाष्प बन कर आकाश में जाता है तो इससे विष वर्षा होती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संशोधनाय चैतेषां वायोर्वारिणः प्रभाम्।
यज्ञविधिः समानीता प्रवरैः पूर्वजैः पुरा॥७८॥

वायु प्रदूषण तथा जल के प्रदूषण को समाप्त करने के लिए हमारे वरेण्य पूर्व पुरुषों ने यज्ञविधि को प्रतिष्ठित किया।

हानिकारककीटानां नाशः यज्ञेन निश्चितः।
जलमन्नं सदा पूतं पर्यावरणपावनम्॥७९॥

हानिकारक कीटों का नाश यज्ञ से अवश्य होता है। इससे अन्न जल सभी पवित्र होते हैं और कोमल पर्यावरण को बनाये रखते हैं।

पूतं पयः सदा पीत्वा पाययित्वा सुनिर्मलम्।
निरोगो जीवने भूत्वा मानवं परमं कुरु॥८०॥

निर्मल विशुद्ध जल पिलाकर और स्वयं भी पीकर रोग से छूटकारा पाओ तथा दूसरो को व्याधि विनिर्मुक्त करो।

जलस्यापव्ययो मास्तु संचयोऽस्तु दिनं दिनम्।
क्षरणं न वरं लोके जलस्तरं प्रक्ष भोः॥८१॥

अनावश्यक रूप से जल को मत बहाओ। प्रतिदिन जल का संचय करो। पानी की बर्बादी ठीक नहीं है, इसे रोको और (वर्षा के) जल को रोककर धरती का जलस्तर बढ़ाओ।

सुजले बालका बाला नरो नार्यः परस्परम्।
नृत्यन्ति प्रहसन्ति च गायन्ति मधुरैः स्वरैः॥८२॥

स्वच्छ जल में आनन्द विभोर होकर बालक-बालिकाएँ, एवं नर-नारी नृत्य करते हैं, विहार करते हैं और मधुर स्वर में गाते हैं।

टि०—जल मनोरंजन का साधन भी है।

प्रार्थ्यन्ते सादरं सर्वे पर्यावरणपोषकाः।
पाठयितुं सुतान् राष्ट्रं रक्षितुं जलजीवनम्॥८३॥

पर्यावरणविदों, गुरुजनों, माता-पिता एवं अभिभावकों से मेरा विनम्र निवेदन है कि वे अपनी सन्तान को, शिष्यों को व देश के नागरिकों को जलजीवन की रक्षा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

का पाठ अवश्य पढ़ाएँ।

सागर प्रदूषणम्

जगत्पतिं जगन्नाथं नत्वा सरित्पतिं पुनः।
सुसागरतटस्यापि दुःस्थितिं वर्णयाम्यहम्।।८४।।

जगत्पति जगन्नाथ को और सरित्पति सागर को प्रणाम करके समुद्र के सुन्दर तट की दुःस्थिति का भी मैं वर्णन कर रहा हूँ।

नदीभिश्च समानीतं सागरो दूषितं जलम्।
गृह्णाति शान्तभावेन यच्छत्यभ्राय पावनम्।।८५।।

नदियों द्वारा लाए गए दूषित जल को शान्तभाव से स्वीकार करके, सागर पवित्र जल मेघ को देता है ताकि धरती को शुद्ध जल मिल सके।

सम्पन्नाः सागरं गत्वा क्रीडां कुर्वन्ति यात्रिणः।
स्नानं ध्यानं तथाहारं विहारं दूषणेन किम्।।८६।।

सम्पन्न यात्री गण सागर तट पर जाकर स्नान, ध्यान एवं आहार-विहार करते हैं, परन्तु सागर तट की स्वच्छता का वे ध्यान नहीं रखते। यदि तट प्रदूषित होते हैं तो होते रहें उन्हें इससे क्या ?

अवशिष्टान् पदार्थान् ते प्रक्षिपन्ति त्यजन्ति च।
तटं संदूष्यतां याति भारं वहति सागरः।।८७।।

वे मनोरंजन या पूजा अनुष्ठान के उपरान्त शेष बचे हुए कूड़े-कचरे का ढेर वहीं तट पर छोड़ देते हैं या फिर समुद्र में फेंक देते हैं जिससे सागर तट दूषित हो जाता है जिसका खामियाजा सागर को भुगतना पड़ रहा है।

क्षिप्तैरौद्योगिकैर्द्रव्यैः पारावारः प्रदूषितः।
यानैरुपग्रहैः पोतैः प्रक्षेपास्त्रैः परीक्षणैः।।८८।।

आज सागर को सब तरफ से सर्वाधिक प्रदूषण का बोझ सहना पड़ रहा है। बड़े-बड़े उद्योगों व फैक्ट्रियों के दूषित पदार्थ समुद्र में फेंके जा रहे हैं। सभी प्रकार के परीक्षण समुद्र में ही किए जा रहे हैं। प्रक्षेपास्त्रों का परीक्षण वही से हो रहा है। उपग्रह भी सागर तट से ही छोड़े जा रहे हैं। सामुद्रिक व्यापारी जल-पोत द्वारा समुद्र मार्ग से ही व्यापार कर रहे हैं और तटीय देश सागर से ही अपने देश

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

की रक्षा कर रहे हैं। परमाणु कचरे या औद्योगिक कचरे सागर में ही फेंकें जा रहे हैं।

टि०— उद्योगों, यानों, जलपोतों एवं उपग्रहों द्वारा प्रक्षिप्त कचरों से सागर दूषित है।

तैलादि वहनं देशैर्मार्गैः सामुद्रिकैर्यदा।
क्रियते जलपोतैस्तु सागरो दूष्यते तदा॥८९॥

समुद्र मार्ग से जब तेल आदि का व्यापार होता है तब जलपोतों के खण्डित होने से सागर प्रदूषित हो जाता है।

पोते विखण्डिते जाते तैलं तरति सागरे।
संदूष्य सागरं सर्वं मत्स्यान् हन्ति ततोऽपरान्॥९०॥

तेलवाहक पोत के टूटने से समुद्र प्रदूषित हो जाता है। मछलियों की मृत्यु हो जाती है। इसका असर अन्य जल-जीवों और मत्स्यजीवियों पर भी पड़ता है।

समुद्रमन्थनं पूर्वं वारमेकं सुरासुरैः।
समुद्रमन्थनं नित्यं क्रियते स्वार्थहेतवे॥९१॥

आदिकाल में जगत के हित के लिए देव और दानव ने मिलकर सिर्फ एक बार सागर का मन्थन किया था, परन्तु आज तो हर कोई ही अपने-अपने हित में समुद्र का मन्थन कर रहा है और समुद्र को प्रदूषित कर रहा है।

तैलं द्रवं महद्द्रव्यं लब्धुं गुप्तं महद्धनम्।
वैज्ञानिका रताः शोधे समुद्रदूषणेन किम्॥९२॥

आज वैज्ञानिक समुद्र की सुरक्षा एवं संरक्षा की परवाह किए बिना ही तेल आदि अनुपलब्ध वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए समुद्रमन्थन कर रहे हैं और सागर प्रदूषित हो रहा है।

कथयन्ति जना देशाः स्वदेशरक्षणं परम्।
समुद्ररक्षणं नोचेत् स्वदेशरक्षणं कथम्॥९३॥

आज लोग तथा राष्ट्र यह कह रहे हैं कि वे अपने राष्ट्रहित में समुद्र मन्थन कर रहे हैं परन्तु समुद्र रक्षा के बिना देश की रक्षा कैसे संभव है?

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यदि परस्परं प्रीतिर्भ्रातृभावः समानता।

सामुद्रिकसुरक्षायाः प्रश्नो नापि समुदियात्॥९४॥

यदि सभी राष्ट्र सह अस्तित्व और समानता के भाव से प्यार एवं सौहार्द से रहें तो समुद्र की सुरक्षा का प्रश्न ही नहीं उठता।

प्रेम्णा धिया धृतिद्वारा क्षमयाऽहिंसया भुवि।

मानवजीवनं पुण्यं कर्तव्यं सिद्धिदायकम्॥९५॥

आओ हम सब अपने प्रेमपूर्ण व्यवहार से बुद्धि से, धैर्य से, क्षमा और अहिंसा से इस धरती पर मानव जीवन को सफल बनायें।

प्रदूषणमिदं सर्वं नूनं प्रकृतिनाशकम्।

विज्ञानवैज्ञानिकान् नेतॄन् समाधातुं निवेदये॥९६॥

यह प्रदूषण निश्चय ही प्रकृति का नाश करने वाला है, इसलिए मैं समस्त विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों और प्रधान नेताओं से प्रदूषण की समस्या का स्थायी समाधान करने का निवेदन करता हूँ।

क्षारं जलं सुसंशोध्य पास्यन्ति प्राणिनो प्रियम्।

सागरो हि जलाभावे जलजीवनदायकः॥९७॥

एक समय आयेगा जब प्राणी सागर के खारा पानी को शुद्ध करके पियेंगे तब सामान्य जल के अभाव में सागर ही हमारा जल जीवन दाता बनेगा।

जनसंख्या यथा वृद्धिमाप्नोति प्राणिनां कृते।

सागरः सर्वसम्पन्नः स्थास्यति सर्वसेवकः॥९८॥

जनसंख्या के उत्तरोतर बढ़ने पर सर्वशक्ति सम्पन्न सागर ही सबका सेवक बनकर कार्य करेगा।

हरिद्वारतटे सायमारार्तिकं प्रशस्यते।

तथैव यदि सर्वत्र शोभनं पुष्टिदायकम्॥९९॥

जिस प्रकार हरिद्वार में गंगा माता के तट पर शाम को गंगा की भव्य आरती उतारी जाती उसी तरह अन्य नदियों व सागर के तटों पर भी आरती पूजन हो तो नदी और सागर की शुद्धता के प्रति जन जन के मन में श्रद्धा भाव उत्पन्न होगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थलपद्मेन पूजां ते कुर्वन्तु पंकजेन च।
अर्चनापि तथा पूता यया शुद्धिर्विवर्धताम्॥१००।

गुलाब और कमल के फूल से पूजा की जाए। अर्चना ऐसी हो जिससे नदी जल की शुद्धता बढ़ती जाये।

सलिलमस्तु वरं भुवि पावनं
सलिलमस्तु वरं धरणीतले।
सलिल! नास्ति जगत्सलिलं विना
सलिलमस्तु वरं जनहेतवे॥१०१॥

इस पृथ्वी पर पवित्र जल विद्यमान रहे, धरती के भीतर पवित्र जल विद्यमान रहे। हे जल! आपके बिना संसार की स्थिति संभव नहीं है। इसलिए जन-जन के लिए आप सदा पावन बने रहें।

॥ इति श्रीजगन्नाथशुक्लसुतश्रीमदशोककुमारशुक्लविरचितो जलप्रदूषणनामकः पंचमोऽध्यायः॥

॥ इति शम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥अथ षष्ठोऽध्यायः॥

भूमिप्रदूषणम्॥

भूर्देवीं मातरं ध्यात्वा विश्वम्भरां वसुन्धराम्।
सर्वंसहां रसां पूर्णां करोमि कविताकलाम्॥१॥

समस्त विश्व को धारण करने वाली, धृत का पालन-पोषण करने वाली, उनके लिए सुख समृद्धि को धारण करने वाली, उनके दूषित कर्मों को सहने वाली, रसवती माता भू देवी को हृदय में धारण करके मैं काव्य-कला को प्रकट कर रहा हूँ।

संशुद्धिमनुयातु भूमिरचला कार्यं जगज्जीवकं
सर्वैः सत्वरसैः सदा शुभफला माता सदा चोर्वरा।
शक्तिरस्तु सदा सुमंगलकरी मानेन सम्पूरिता
बुद्धौ शुद्धिरिहास्ति तत्र भवतात् भावान्विता मानवाः॥२॥

मानव के दुष्कर्मों से पीड़ित अचलाभूमि विशुद्ध हो जाये। पृथ्वी माता सत्व रस से पूर्ण प्राणियों व पदार्थों से पूरित ऊर्वरा होकर सबका मंगल करने वाली बन जाये। सभी धरा का आदर करें और उसके महत्व को समझें। मननशील मानव की शक्ति शुभ कार्य करने वाली और सम्मान पाने वाली बन जाये। बुद्धि में शुद्धि इस लोक में और परलोक में बनी रहे। ताकि मानव शुद्ध भाव से भर जायें।

सरला बोधगम्या सा पर्यावरणपालिका।
कविकण्ठात्समुद्भूता प्रदूषणस्य नाशिका॥३॥

कवि कण्ठ से निकली हुई यह कविता सरल और सुबोध है। यह प्रदूषण का नाश करके पर्यावरण को सुरक्षित रखने वाली है।

धरा वसुन्धरायास्तु विकृता दुर्गतिंगता।
रूपं नष्टं तथा भ्रष्टं धरित्री बहुपीडिता॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वसुन्धरा के सभी तल आज प्रदूषित हो चुके हैं। धरा की सर्वत्र दुर्गति हो रही है जिसकी वजह से सबको धारण करने वाली (धरित्री) बहुत कष्ट में है।

वैज्ञानिका विशेषज्ञा भौतिकसाधने रताः।

दोहनं शोधनं कृत्वा पृथिवीं दूषयन्त्यहो।।५।।

बड़े दुख की बात है कि भौतिक संसाधन जुटाने में तल्लीन वैज्ञानिक और विषय-विशेषज्ञ पृथ्वी का दोहन और शोधन करके इसे ही दूषित कर रहे हैं।

पृथिव्या दूषिते जाते दूषितं सर्वजीवनम्।

ऋतुचक्रं च्युतं स्थानाज्जलवायुः प्रदूषितम्।।६।।

पृथिवी के प्रदूषित होने जाने से हमारा जीवन ही प्रदूषित होता जा रहा है। ऋतुचक्र और जलवायु पर भी प्रदूषण का प्रभाव देखा जा सकता है।

विकासाय विनाशो हि दृश्यते स्वार्थहेतवे।

नरश्रेष्ठस्तु सानन्दो निरानन्दो जगत्पतिः।।७।।

आज स्वार्थ-सिद्धि हेतु विकास के नाम पर विनाश देखा जा सकता है। श्रेष्ठ मानव प्रसन्न है परन्तु जगत्पति अप्रसन्न हैं।

सुपारिस्थितिकानाञ्च सम्यक् संतुलनप्रदाम्।

दुर्लभानां पदार्थानां धनाय हननं भुवि।।८।।

प्रकृति को संतुलित करने के लिए पारिस्थितिक तत्त्वों को प्रभु ने बनाया है। इन दुर्लभ पदार्थों का धन प्राप्ति हेतु धरा पर हनन हो रहा है जो उचित नहीं है।

मृगेन्द्राणां मृगाणाञ्च कपोतश्येनपक्षिणाम्।

धेनूनां शूकरादीनां मण्डूकानां वधो नरैः।।९।।

मृग-मृगेन्द्र गाय, सूअर, मेढक, कबूतर, बाज आदि का वध मानव के द्वारा विभिन्न उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जा रहा है।

वृक्षाणां चन्दनादीनां वनानां वनसम्पदाम्।

भूधराणां विनाशो हि क्रियते सुखहेतवे।।१०।।

अपने भौतिक सुखों के लिए मानव चन्दनादि वृक्षों, वन-संपदाओं एवं पृथ्वी के संतुलन को बनाये रखने वाले पर्वतों का विनाश कर रहा है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नागरा सुखमेधन्तां नराणामुन्नतिर्भवेत्।

वनानां वनजीवानामदर्शनेन तेन किम्॥११॥

नगरवासी सुखी रहें, मानव की उन्नति होती रहे। वन और वनजीव लुप्त हो रहे हैं तो होते रहें।

विनष्टे च वने वन्याः प्राणिनो वनजीविनः।

विलुप्ता यान्ति यास्यन्ति नराणां नरकस्थिति॥१२॥

वन के नष्ट होने से वनजीव और वन की संपदा एवं वन पर निर्भर करने वाले प्राणी सब लुप्त हो रहे हैं। और जो बच गए हैं वे भी लुप्त हो जाएँगे। ऐसी स्थिति में नर को नारकीय जीवन जीना पड़ेगा।

नष्टे वने च वृक्षे च गिरिनिर्झरभूषिते।

प्लावनं क्षरणं भूमौ संतुलनं प्रभावितम्॥१३॥

पर्वत एवं पहाड़ों से विभूषित वन और वन-वृक्ष के नष्ट होने से पृथ्वी के उर्वरक परत का क्षरण होने लगा है तथा भू-भाग भी डूबने लगे हैं। जिससे पृथ्वी का संतुलन बिगड़ रहा है।

जाते भूक्षरणे त्वेत्थं भूमिरनुर्वरान्नदा।

भवतीन्धनहीना सा प्रदूषणेन चिन्तिता॥१४॥

भू-क्षरण से अन्नदात्री भूमि अनुर्वर हो रही है। पृथ्वी से इंधन समाप्त हो रहा है। इन सब बातों को लेकर धरा चिन्तित है।

वनगिर्योः प्रणाशेनाऽसंतुलनं प्रजायते।

प्रकृतेर्मूलतत्त्वानां प्रणाशः विश्वनाशकः॥१५॥

वन-पर्वत के नाश होने से असंतुलन पैदा हो रहा है। प्रकृति के मूल तत्त्वों का नाश विश्व विनाशक होता जा रहा है।

प्रदूषणप्रवृद्धौ यत् कारणं प्रथमं स्मृतम्।

यत्नतः प्रतिरोधव्यं जनानां परिवर्धनम्॥ १६॥

प्रदूषण की प्रवृद्धि में प्रथम कारण जनसंख्या में चारों तरफ वृद्धि बताया गया है जिसे सप्रयत्न रोका जाना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विधिना नूतनेनाद्य क्रियया च चिकित्सया।
जनसंख्या प्ररोधव्या स्त्रियश्च पुरुषाः समाः॥ १७॥

नतून विधि, क्रिया एवं चिकित्सकीय क्रिया द्वारा जनसंख्या वृद्धि को रोका जाना चाहिए। स्त्री और पुरुष दोनों के साथ समान भाव रखना चाहिए।

भवितव्यो भेदभावो न लिंगे जीवे च भूतले।
सर्वः समानभावेन सून्नतिमधिगच्छतु॥ १८॥

भूतल पर लिंग और जीव के आधार पर भेद भाव नहीं होना चाहिए। सर्वत्र सबकी समान भाव से उन्नति हो यह ध्यान रख़ना चाहिए।

जनसंख्या यथा वृद्धिमाप्नोति धरणीतले।
दोहनं शोषणं भूम्या जायते जनहेतवे॥ १९॥

धरती पर जैसे जैसे जन की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है वैसे वैसे भूमि के दोहन और शोषण में भी बढ़ोतरी हो रही है।

विवर्धन्ते यथा लोका न तथान्नं तरू रसः।
भूम्यपि निश्चिता पूता चानुर्वराफला क्रिया॥ २०॥

जिस अनुपात में जनसंख्या बढ़ रही है उस अनुपात में वृक्ष, खाद्यान्न एवं रस नहीं उत्पन्न हो रहे हैं। उर्वर भूमि भी निश्चित मात्रा में है। जो अनुर्वर भूमि है उस पर की गई क्रिया अफला साबित होती है।

वनानां वन्यजीवानां रक्षणं पालनं परम्।
सन्तुलकं सर्वसत्वानां सुफलस्य प्रदायकम्॥ २१॥

वन एवं वन्य जीवों का रक्षण तथा पालन श्रेष्ठ कर्तव्य है। इससे धरती पर सन्तुलन बना रहता है और शुभ फल की प्राप्ति होती है।

क्षरणं न वरं भूमेः बीजस्य पादपस्य च।
उर्वरनाशकं नूनमुत्पादनस्य नाशकम्॥ २२॥

बीज, वृक्ष तथा भूमि के अपरदन एवं क्षरण से उर्वरा शक्ति का विनाश हो रहा है तथा इससे उत्पादन में कमी भी आ रही है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जलं वायुं च संशोध्य यच्छति परमौषधम्।
वृक्षो नूनं वरो भूम्यां पर्यावरणशोभनम्॥ २३॥

जल वायु एवं धरा को संशोधित करके वनस्पति प्रदान करने वाला वन निश्चय ही भूमि पर श्रेष्ठ कृति है। पेड़ों से ही पर्यावरण सुशोभित होता है।

अस्वच्छता हि रोगाणां जननी क्लेशकारिणी।
स्वच्छतारोग्यदा माता संप्रीतेर्वधिका विभे॥ २४॥

अस्वच्छता (गंदगी) जहाँ रोगों को जन्म देने वाली व दुख देने वाली होती है वहीं स्वच्छता आरोग्य देने वाली मातृ स्वरूपा होती है। हे प्रिय पत्नी विभे, स्वच्छता प्रसन्नता एवं प्यार को भी बढ़ाती है।

भूम्यां च वर्धनं नित्यं नगराणां च दृश्यते।
भूमिः संदूषिता तेन न ते न ताश्च चिन्तिता॥ २५॥

भूमि पर नगरी करण की वजह से नगर बढ़ रहे हैं जिनकी वजह से भूमि प्रदूषित हो रही है परन्तु न तों पुरुष वर्ग इस पर ज्यादा ध्यान दे रहा है और न ही स्त्री वर्ग।

विकासशीलदेशाश्च देशा विकसितास्तथा।
विकासव्यसनेव्यस्ताः प्रदूषणेन पीडिताः॥ २६॥

विकसित एवं विकासशील देश और अधिक विकास को अपना व्यसन मान कर उसमें व्यस्त हैं। यह बात अलग है कि उससे जनित प्रदूषण से पीड़ित वे भी हैं।

पुरुषाणां समुन्नत्यै मर्दनं मार्जनं तथा।
पाटनं खननं भूम्याः कर्षणं भूमिदूषकम्॥ २७॥

मनुष्य भौतिक समुन्नति हेतु भूमि का मर्दन कर्षण, मार्जन, खनन्न एवं पाटन करता रहता है। ये सभी कृत्य भूमि को ही प्रदूषित करते हैं।

लाभाय नगरे क्षेत्रं प्रायशो भिद्यते जनैः।
कठोरा क्रियते भूमिर्मृदुता क्षरणं गता॥ २८॥

निजी लाभ के लिए नगरवासी भूमि का अक्सर भेदन करते रहते हैं। कोमल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमि को स्वच्छता के नाम पर सीमेंट से पक्का करते जा रहे हैं जिसकी वजह से धरा की कोमलता भी नष्ट होती जा रही है और हरित प्रदेश भी नष्ट हो रहे हैं।

भवनानां विनिर्माणं मार्गाणां भूमिदूषकम्।
प्रदेशो हरितो नूनमुद्योगानां मुखं गतम्॥२९॥

ऊँचे ऊँचे भवनों तथा चौड़े व लम्बे राज मार्गों के निर्माण ने भूमि को प्रदूषित कर दिया है। धरती के हरित प्रदेश तो उद्योगों के मुख में समाते जा रहे हैं।

विद्युदुत्पादनार्थं हि बन्धो विक्रियते वने।
प्रवाहे ह्यवरोधश्च गिरिध्वंसो न सो वरः॥३०॥

विद्युत उत्पादन करने के लिए वनों में पर्वतों को तोड़कर बाँध बनाया जा रहा है तथा नदियों के प्रवाह को रोका जा रहा है। यह उचित नहीं है।

महिधरो धरण्या हि धारको रक्षकोऽर्णवः।
पवित्रः पवनः प्राणो जलं हि जीवनं भुवः॥३१॥

पर्वत पृथ्वी को स्थायित्व प्रदान करता है तो समुद्र पृथ्वी की रक्षा करता है। पवित्र पवन पृथ्वी का प्राण है तो जल पृथ्वी का जीवन है।

जलमधो धरण्या यद् धरण्या धार्यते जलम्।
धरण्यास्तज्जलं धृत्वा वर्षति वारिदः हले॥३२॥

हे सखे, धरणी के नीचे जो जल है, धरणी जिस जल को धारण करती है धरणी के उसी जल को धारण कर बादल धरा पर बरसता है।

भूमिस्थितं गतं वारि भवति विकृतं धरा।
प्रयोज्यते यदास्माभिरौषधः कीटनाशकः॥३३॥

भूमि में तथा भूमि पर स्थित जल और भूमि प्रदूषित तब और हो जाते हैं जब जन कीटनाशक दवाओं का उपयोग (फसल पर) करते हैं।

एतादृशौषधानां च दुष्प्रभावो न नश्यति।
दिवं गत्वा समागत्य दूषयन्ति महीं पुनः॥३४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इन कीटनाशक दवाओं का दुष्प्रभाव चिरकाल तक रहता है। ये वाष्पीकरण द्वारा बादल बनकर आकाश में चले जाते हैं और फिर वर्षा के जल के साथ आकर धरती को प्रदूषित करते हैं।

दूषितमवरुद्धं च मलिनं जैविकं जलम्।
चूषणस्यन्दनद्वारा भूगतं हि रुजः प्रदम्॥३५॥

प्रदूषित रुका हुआ पानी, गन्दा पानी कीटाणुओं से युक्त पानी रिस - रिस कर धरती में चला जाता है। अथवा धरती जब ऐसे पानी को सोख लेती है तब भूमिगत प्रदूषित यह पानी अनेक बीमारियों का प्रदाता बन जाता है।

जलस्रोतसमक्षं यन्मलमूत्रविसर्जनम्।
वस्त्रप्रक्षालनं स्नानं जलदूषणवर्धकम्॥३६॥

जल-स्रोत के समीप मल-मूत्र त्यागने से कपड़ा धोने से अथवा स्नानादि करने से जल प्रदूषण बढ़ता है।

पृथिवीं परितो वारि पृथिवीं शस्यशालिनीम्।
करोति दुष्कृतं वारि शाकादीनां च नाशनम्॥३७॥

पृथ्वी के चारों तरफ यदि शुद्ध जल हो तो वह पृथ्वी को फसल से हरा-भरा कर देता है। और यदि पृथ्वी के चारों तरफ दूषित जल हो तो वह फसल, सब्जी आदि को नष्ट कर देता है। उसे अखाद्य बना देता है।

नलकूपे तडागे वा कूपे नद्यां सरोवरे।
फेनकेन कृतं स्नानं क्षालनं भूमिदूषकम्॥३८॥

कुआँ, नलकूप, नदी-तालाब या सरोवर में साबुन आदि लगा कर स्नान करने से या फिर वस्त्र प्रक्षालन करने से भूमि प्रदूषित होती है।

दूषितं तज्जलं पीत्वा प्राणिनो मृत्युगामिनः।
भवन्ति दुःखिता रोगैः प्रदूषणेन पीडिताः॥३९॥

उस दूषित जल को पीकर प्राणी मृत्यु को भी प्राप्त हो जाते हैं। प्रदूषित पानी को पीने से मानव आंत्रशोथ आदि अनेक बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूजलस्तरक्षीणं च जायते प्रत्यहं पुमन्।
व्यर्थ वारि न वृष्टेः स्यादुपायं तादृशं कुरु॥४०॥

हे नर, पृथ्वी का जलस्तर प्रतिदिन घटता जा रहा है। इसलिए ऐसा उपाय करो कि पृथ्वी का जलस्तर बना रहे और वर्षा का जल बेकार न जाए।

धूमपानं नरः कुर्वन् कुर्वन् ताम्बूलचर्वणम्।
मद्यपानं तथा कुर्वन् प्रकुरुते प्रदूषणम्॥४१॥

मद्यपान, धूम्रपान तथा ताम्बूल भक्षण करके व्यक्ति भूमि को तथा पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है।

टि०— आज अनेक प्रकार के तंबाकू उपलब्ध हैं, जिन्हें खाकर लोग इधर उधर थूकते हैं, जिससे प्रदूषण फैलता है।

फलान्नोत्पादनं मूलं पुष्यं प्रदूषितं पुनः।
उर्वरकं यदा भूम्यां प्रयुज्यतेऽन्नवर्धकम्॥४२॥

अत्यधिक मात्रा में खाद्यान्न पैदा करने के लिए भूमि में जब उर्वरक का उपयोग उत्तरोत्तर बढ़ने लगता है तब उर्वरक उस भूमि को अनुर्वर (बंजर) बना देता है। इतना ही नहीं वह रासायनिक खाद फल-फूल और मूल को भी प्रदूषित कर देता है। इससे उत्पादन भी प्रभावित होता है।

उद्योगैर्वाहनैः क्षिप्तैर्धूमैर्दुष्टै रसायनैः।
यन्त्रैर्दुर्ध्वनिभिर्भूमौ प्रकुर्वते प्रदूषणम्॥४३॥

कल-कारखानों, यन्त्रों एवं वाहनों द्वारा छोड़े गए धुएँ, रासायनिक तत्त्वों एवं दूषित ध्वनि से भी भूमि प्रदूषित होती है।

निम्बादिपत्रभष्मानां गोमयानां निरन्तरम्।
प्रयोगं कुरु वर्धस्व प्रापयान्नं रसं कृषिम्॥४४॥

नीम आदि पेड़ों के पत्ते, राख, गोबर आदि प्राकृतिक पदार्थों का निरन्तर उपयोग करना चाहिए। इससे खेती अच्छी होगी अनाज सुस्वादु होगा खूब होगा। और सबके लिए उपलब्ध होगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हल्या भूमिः सदा तिष्ठेदुर्वरा जनभोजिका।
रसायनं परित्यज्य साधय गोमयं हली॥४५॥

कृषक खेतों में रासायनिक खाद के स्थान पर गोबर आदि पारंपरिक खाद का उपयोग करें ताकि भूमि कृषि योग्य बनी रहे। भूमि उपजाऊ और सबको भोजन देने वाली बनी रहे।

मृदोऽन्नं कुसुमं वृक्षो बीजं मूलं फलं रसः।
रसैर्हि जीवनं पुण्यं मृतस्य मृदिपाटनम्॥४६॥

शुद्ध मिट्टी से शुद्ध बीज, फूल, फल और रस प्राप्त होते हैं जिनसे यह पुण्य जीवन प्राप्त होता है जो मृत अर्थात् नष्ट होने के बाद मिट्टी में मिल जाता है। व्यर्थ कुछ नहीं जाता। मिट्टी की काया मिट्टी में मिल जाती है।

टि०-यह संसार सूक्ष्म रूप में मिट्टी का ही विस्तृत रूप है।

उपवनं च मार्गं च कुक्कुरं भ्रामयन् भ्रमन्।
नागरा मलमूत्रं हि क्षिपन्ति कारयन्ति च॥४७॥

नगरवासी कुत्तों को उद्यान व मार्ग में घुमाते हुए एवं खुद घुमते हुए मलमूत्र विसर्जित कराते हैं।

कुक्कुराणां कृते भूमौ व्यवस्था तादृशी भवेत्।
प्रेया न दूषकाः सन्तु न च ते दुःखदायकाः॥४८॥

प्रिय कुत्तों के शौच आदि के लिए भी पृथक व्यवस्था होनी चाहिए ताकि ये पर्यावरण को प्रदूषित न कर सकें और न ही आम व्यक्ति को इनसे कष्ट पहुँच सके।

टि०- जब श्वानप्रिय अपने प्रिय कुत्ते के साथ घर से बाहर निकलकर टहलते हैं या उसे टहलाते हैं तब कुत्ता शौचादि करके मार्ग को प्रदूषित कर देता है जिसका वे परवाह नहीं करते पर पथिक विचलित अवश्य हो जाता है।

कुक्कुराणां कृते चापि व्यवस्था शोभना भवेत्।
भूमिप्रदूषणं नैते प्रकुर्युः स्वामिरक्षकाः॥४९॥

कुक्कुरों के लिए अलग से शौचालय आदि की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे उनके स्वामी भूमि को दूषित न करा सकें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यच्छ्वानोद्य यानं शेते प्राप्नोति फलमुत्तमम्।
पदवीं सुसुखं नान्यः खगः पशुर्न मानवः॥५०॥

जिस सम्मान जनक स्थान को सुख को, और प्रतिष्ठा को कुत्ता उच्च वर्ग में प्राप्त कर रहा है और जिस वाहन पर वह सवारी करता है वह सब आम मानव को या खग को या पशु को प्राप्त नहीं हो रहा है।

कुर्यात् कोऽपि नरो रथ्यां मार्गे स्थले न निर्जने।
व्यवस्था शासनं कुर्यात् मलमूत्रविसर्जनम्॥५१॥

सरकार स्थान-स्थान पर स्वच्छ मूत्रालय एवं स्वच्छ शौचालय की व्यवस्था करे ताकि व्यक्ति गली में, राजमार्ग पर, निर्जन स्थान पर मल-मूत्र का परित्याग न कर सके।

टि०— महानगरों में सार्वजनिक शौचालयों का समुचित रखरखाव उचित कदम है।

प्रदूषणस्य मुख्यं यत् कारण कष्टकारकम्।
संप्राप्तं वाहनैर्यन्त्रैरुद्योगैः दूषितं विषम्॥५२॥

प्रदूषण का प्रमुख कष्ट कारक कारण है वाहन-यन्त्र संयत्र एवं उद्योगों से परित्यक्त प्रदूषण विष।

डीजल कोयलेत्येतौ प्रयुक्तौ सुखवर्धकौ।
विषादाजनकावेतौ पर्यावरणदूषकौ॥५३॥

डीजल एवं कोयले का प्रयोग व्यावहारिक जगत् में सुख देते हैं परन्तु कालान्तर में विषाद जनक होते हैं क्योंकि पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं।

जनरेटरयन्त्रं यत् सुखं प्राप्तुं जलं भुवः।
विद्युदुत्पादनार्थं यद्ध्वनिधूमेन पीडकम्॥५४॥

जनरेटर तथा अन्य पम्पिंग सेट आदि डीजल द्वारा चलित यन्त्र जब जल एवं विद्युत प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं तब उनसे निकलने वाली ध्वनि तथा धुआँ कष्ट कारक होते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पार्श्वस्थाः प्राणिनः क्षिप्तं दुष्टं गृह्णाति प्रत्यहम्।
क्वचिच्छिक्का क्वचित्कासः रक्तचापश्च विद्रधिः॥५५॥

उद्योगों वाहनों एवं यन्त्रों द्वारा परित्यक्त दूषित पदार्थ को जब पार्श्वस्थ प्राणी ग्रहण करता है तब वह अनजाने में छिंक, खाँसी, रक्तचाप, एवं कैसर आदि रोग का शिकार हो जाता है।

भूम्याः प्रदूषणेनाद्य जलं भूम्यां प्रदूषितम्।
नागरैर्वर्जितं वारि पिबति नागरो मुदा॥५६॥

नगरवासियों द्वारा भूमिं को सर्वाधिक प्रदूषित किया जा रहा है। आज भूमि के प्रदूषित पानी को नगरवासी प्रसन्नता से पी रहे हैं क्योंकि दूषित जल भी दुर्लभ होता जा रहा है।

जायते दुस्सहं नूनं ग्रीष्मे वायोः प्रदूषणम्।
भूमिः संतप्यते तापैः कृषकोऽपि प्रदुःखितः॥५७॥

गर्मी के मौसम में भीषण ताप से भूमि संतप्त होती जा रही है। धरती पर वायु प्रदूषण दुस्सह होता जा रहा है। फसल बर्बाद होने से कृषक अत्यन्त दुःखी होते जा रहे हैं।

आत्महत्यां प्रकुर्वन्तो दृश्यन्ते कृषका भुवि।
विक्रयस्य व्यवस्थापि दृश्यते नैव तादृशी॥५८॥

किसान आज आत्महत्या करते हुए देखे जा सकते है क्योंकि फसल न हुई तो वे परेशान। यदि अधिक फसल हुई तो वे परेशान। फसल विक्रय की उचित व्यवस्था न होने से भी कृषक परेशान हो उठते हैं।

कृषकः परितः कष्टं सहते भूमिभोजकः।
प्रदूषणेन सो दग्धो नास्ति कोऽपि सहायकः॥५९॥

भूमि प्रदूषण का शिकार सबसे ज्यादा किसान होता है क्योंकि फसल चौपट हो जाने पर कोई भी उसकी सहायता नहीं करता।

यदि न क्रियते कार्यं पर्यावरणरक्षकम्।
नियमो रक्ष्यते नैव खण्डितं भुवि जीवनम्॥६०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यदि पर्यावरण रक्षक उपाय नहीं किये गये, पर्यावरण रक्षा से संबंधित नियमों का पालन नहीं किया गया तो धरती पर जीवन क्षत विक्षत हो जायेगा।

संचयेन न नद्याः स्यात् प्रवाहो ह्यवरोधितः।

मलनिर्मोचनं सम्यक् स्यादुपायं तथा कुरु॥ ६१॥

जल संचय इस प्रकार किया जाये जिससे नदी का प्रवाह बाधित न हो। तथा वर्षा के जल से स्वच्छता भी होती रहे।

भूजलस्तररक्षार्थं कर्तव्यो जलसंचयः।

वृष्टेर्वारिः फलं दद्याल्लसितं जनजीवनम्॥ ६२॥

भूजलस्तर की रक्षा के लिए स्थान स्थान पर जल भंडारागार बनाकर वर्षाके जल का संचय करना चाहिए। ताकि वर्षा का जल बाद में भी लाभदायक हो और जनजीवन खुशहाल हो।

टि०— राजस्थान प्रदेश में अधिकाधिक जलाशय निर्माण कार्यक्रम का सुखद परिणाम मिल रहा है।

गोमयस्योपयोगः स्यादुर्वरकस्य वर्धकः।

ग्रामात् समागताः शेषाः पर्यावरणपोषकाः॥ ६३॥

जानवरों के गोबर का तथा गाँवों के घरों से निकलने वाले कूड़ा आदि का उपयोग उर्वरक के रूप में किया जाना चाहिए। क्योंकि यह प्राकृतिक जैव उर्वरक पर्यावरण पोषक होता है।

कृष्टे भूमौ जनस्थाने शस्ये वासे तरौ जले।

मार्गे तीर्थे पयःस्त्रोते कुर्यान्न मलमोचनम्॥ ६४॥

जोते हुए खेत में, सार्वजनिक स्थल पर, फसल पर, रहने की जगह पर, पेड़ों के पास, जल में, रास्ते में, पवित्र स्थान पर और जल के उद्गम स्थान पर मलमूत्र का परित्याग नहीं करना चाहिए।

ष्ठीवनं वा पुरीषं वा मलं मूत्रं च मासिकम्।

वसनं मलिनं नैव मार्गे क्षिप जले स्थले॥ ६५॥

मल मूत्र व थूक को मार्ग में व जल में या यहाँ वहाँ न फेंके। स्त्रियाँ रजोनिवृत्ति काल में प्रयुक्त मलिन वस्त्र मार्ग में अथवा नदी में न फेकें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मलिनं वसनं गर्ते प्रक्षिप निर्जने स्थले।

शौचालये जलं वायुं भूमिं पूतं शुभं कुरु॥६६॥

मलिन वस्त्रों को गड्ढों में निर्जन स्थान पर डालो। मत्र मूत्र को शौचालय में फेंको। जल, वायु और भूमि को स्वच्छ और शुभ फल देने वाला बनाओ।

जातस्य पालनं नित्यं मृतस्य मृदिपाटनम्।

जायते दुष्करं भूम्यां स्थानाभावो दिनं दिनम्॥६७॥

जिसने जन्म लिया है उसका पालन करना और मरे हुए को मिट्टी में मिलाना (जलाना या दफनाना) इस भूमि पर मुश्किल कार्य होता जा रहा है। क्योंकि नित्य-प्रति स्थान का अभाव होता जा रहा है।

स्थानाभावस्य पूर्त्यर्थं वासस्तु परिकल्प्यते।

अन्तरिक्षे समुद्रे च सुतले गगने ग्रहे॥६८॥

स्थान के अभाव की पूर्ति के विकल्प के रूप में वैज्ञानिक अन्तरिक्ष में, आकाश में, ग्रहों पर, पृथ्वीतल में तथा समुद्र में गृह-निर्माण को साकार रूप देने में लगे हैं।

सर्वत्र न्यूनतां चाद्य प्रदूषिते परिस्थितौ।

आहारो व्यवहारश्च शेष: शेषो न तिष्ठति॥६९॥

प्रदूषित परिस्थिति में सब कुछ में न्यूनता आ गई है। आहार और व्यवहार में भी न्यूनता आ गई है। आज विशेष भी विशेष नहीं रहा।

रक्षका भक्षका जाता: प्राणिनश्च प्रपीडिता:।

किंकर्तव्यविमूढेयं निरुपाया मही गता॥७०॥

रक्षक ही भक्षक बन गए हैं जिससे मानवेतर प्राणी सर्वाधिक पीड़ित है। इस दु:स्थिति से यह पृथ्वी निरुपाय हो गई है, धरा किंकर्तव्यविमूढ हो गई है।

भारतीयसमाजे या परिवारस्य भूमिका।

प्रशस्या सर्वदेशै: सा गृहस्था: सुखिन: सदा॥७१॥

भारतीय समाज के परिवार की भूमिका की सभी देश प्रशंसा कर रहे हैं। यहाँ गृहस्थ अपने परिवार में सदा सुखी रहते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धर्मेणार्थं ततः कामं कामाद्धि फलमुत्तमम्।

गृहस्थाः प्राप्य भुञ्जन्ते कर्मणा सुफलां गतिम्।।७२।।

सत्कर्म द्वारा धनोपार्जन करके अपने काम की पूर्ति गृहस्थ करते हैं तथा अन्त में सद्गति को प्राप्त करते हैं।

सर्जनकर्म नास्ति वै तथा सुसरला शुभे।

योगो ज्ञानं यथा ध्यानं चिन्तनं चाप्यपेक्षते।।७३।।

हे शुभे, रचना कार्य उतना सरल नहीं होता। इसमें योग, ज्ञान, ध्यान और चिन्तन की अपेक्षा रहती है।

योजनाबद्धरूपेण नराणां वसतिर्भवेत्।

भूम्याः सदुपयोगोऽस्ति सदैव हितसाधकः।।७४।।

योजना बद्ध तरीके से भूमि का सदुपयोग किया जाये तथा नगरों को बसाया जाये तो निश्चय ही यह सर्वहित साधक कार्य हो।

ऋतुचक्रानुसारं हि रोपणं वपनं वरम्।

भूम्याश्चोर्वराशक्तिर्रक्षिता भवतु सदा।।७५।।

ऋतु चक्र के अनुसार बीज वपन एवं रोपण का कार्य किया जाना चाहिए। इससे भूमि की उर्वरा शक्ति की रक्षा होतीं है। यही उचित भी है।

टि०:- भारतीय सामाजिक पद्धति कितनी वैज्ञानिक थी इसका उदाहरण देखें। वर्षा ऋतु सर्वाधिक उपजाऊ ऋतु है इसलिए बीज बोने का कार्य या पौधे लगाने का कार्य वर्षा ऋतु में ही किया जाता था। वहीं नवविवाहिता नव यौवना की प्रजनन क्षमता वर्षा ऋतु में बढ़ जाती है इसलिए उन्हें माता-पिता के घर जाने का सामाजिक नियम बनाया गया ताकि जन्मदर को नियंत्रित किया जा सके।

वृक्षाणां शुष्कपर्णानां पातेन भूमिपोषणम्।

गोमयादि पदार्थानां क्षेपणं कृषिवर्धकम्।।७६।।

पेड़ों के सुखे पत्ते जब खेतों में गिरते हैं तथा गोबर आदि पदार्थों को सड़ाकर खेतों में डाला जाता है तो इससे भूमि पुष्ट होती है तथा कृषि में बढ़ोतरी होती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नेतव्यं हि यथा भूम्याः प्रदातव्यं तथा सदा।
निष्कासनं वरं नैव भूम्याः कोशाच्च केवलम्॥७७॥

भूमि से जितना ले रहे हो उतना उसे दो भी क्योंकि भूमि से तथा खजाने से केवल निकालते रहना संभव नहीं है और न ही यह उचित है। जमा किया हुआ ही निकाला जा सकता है।

गमनागमनं सृष्टेः प्रक्रिया परमोत्तमा।
आदानेन प्रदानेन जीवनं जायते वरम्॥७८॥

आना-जाना, लेना-देना सृष्टि की परमोत्तम प्रक्रिया है। आदान एवं प्रदान से जीवन अच्छा बनता है।

पशूनां पादपानां च प्रयोगः परिकल्पितः।
शोषणं न वरं तेषां सत्ता सर्वोपकारिका॥७९॥

पशुओं एवं वृक्षों का शोषण उचित नहीं है। उनके उपयोग को प्रकृति ने निर्धारित किया हुआ है। पशु एवं द्रुमों की सत्ता सर्वोपकारक है।

प्रदूषणसमस्या न केवलं भारतस्य भोः।
प्रत्येकस्य च राज्यस्य वर्गस्य भीषणा भुवि॥८०॥

प्रदूषण समस्या न केवल किसी एक देश की है बल्कि सभी राज्य सभी वर्ग की है। यह समस्त संसार की भीषणतम समस्याओं में से एक है।

विद्वांसश्च विशेषज्ञा आवरणविदा बुधाः।
चर्चन्तु चेतसा च्यूतो नरो नारी न तत्कृतिः॥८१॥

विद्वान, विशेषज्ञ पर्यावरणविद् सुधीजन इस समस्या के समाधान के लिए विचार करें। कोई ठोस उपाय ढूढ़ें ताकि परमेश्वर की परम कृति नर एवं नारी स्वस्थान से पतित न हों।

प्रकृतौ सुखिनः सर्वे जीवनं प्रकृताश्रितम्।
प्रकृतिं पूजयत्पूर्वा जीवन्ति स्म स्वजीवनम्॥८२॥

प्राकृतिक वातावरण में ही सभी सुखी रह सकते हैं। हमारा जीवन प्रकृति पर आश्रित है। हमारे पूर्वज प्रकृति में रमण करके अपनी पूर्ण आयु को सानन्द पूर्ण करते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न वरं जीवनं नृणां मरणं प्रकृतिं विना।
जीवनं मरणं भूमौ कृत्रिमं प्रकृताश्रितम्॥८३॥

प्रकृति के बिना मानवों का न मरण सम्भव है और न ही जीवन। जीवों का जीवन और मरण धरती पर प्रकृति के अधीन है। यहाँ तक की मानव की कृत्रिम गतिविधि भी प्रकृति पर ही आश्रित है।

वैदेर्निगदितं पूर्वं यज्ञे सर्वं समाहितम्।
यज्ञमपि तथा कार्यं दूषणवर्धकं न तत्॥८४॥

वेदों में यज्ञ को प्रदूषणरोधी बताया गया है। परन्तु प्रदूषित सामग्री का उपयोग किया गया तो इनसे भी दूषण बढ़ सकता है। इसलिए विशुद्ध सामग्री एवं समिधा से ही यज्ञ हवनादि करना चाहिए।

हवनं वृहदाकारं सुसुमिधासमेधितम्।
तिलाक्षतयवैराज्यैः कृतं सर्वोपकारकम्॥८५॥

यज्ञ हवनादि में प्रयुक्त समिधा तिल अक्षत जौ, घी, शक्कर, धूप शुद्ध हो तो सर्वोपकारक होते हैं।

सर्वे ते शोधकाः सन्ति पर्यावरणपावकाः।
शुचिं स्वास्थ्यं रुचिं मेधां तेजः स्मृतिधृतिप्रदाः॥८६॥

ये सभी हवनादि कृत्य मानव को एवं पर्यावरण को शुद्ध करते हैं तथा पवित्रता, स्वास्थ्य, रुचि, बुद्धि, तेज स्मृति और धैर्य प्रदान करते हैं।

भूम्याः सदुपयोगः स्याज्जनसंख्या नियन्त्रिता।
तत्त्वानां शोधनं सम्यग् वितरणं प्रसेवनम्॥८७॥

भूमि का समुचित उपयोग हो। जनसंख्या नियन्त्रित हो। सभी तत्त्वों का शोधन, वितरण एवं सेवन भी समुचित तरीके से हो।

स्वस्थाः सन्तुलिताः सन्तु संसारे सर्वसेतवः।
सूर्यः सरोवरः साधुः सुष्ठुः सागरसेवकौ॥८८॥

संसार के तारन हार सूर्य, सरोवर, सेतु, सज्जन, सेवक और स्वामी सन्तुलित और सुन्दर हों।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देहली दीपवत् काव्यं जिह्वाग्रे प्रभवेन्नृणाम्।
आभ्यन्तरं च वाह्यं च प्रकाशेत न दूषयेत्।।८९।।

देहली के दीपक की भाँति यह काव्य मानव के जिह्वाग्र पर सदा निवास करे। इस पर्यावरण काव्य का प्रकाश उसके दोनों और फैले। यह मानव के आन्तरिक एवं वाह्य जगत् को प्रदूषण के अधंकार से शुद्ध पर्यावरण में पहुँचाए।

प्रतिष्ठापयितव्यं हि पर्यावरणमुत्तमम्।
मानवो मानवो भूत्वा संरक्षेद्धरणीं विभे।।९०।।

हे प्रिय पत्नी विभे, इस उत्तम पर्यावरण को इस धरा पर अवश्य प्रतिष्ठापित करना चाहिए ताकि मानव मानव बनकर धरती को संरक्षित रख सके।

पर्यावरणधर्मं हि धरण्यां धारय ध्रुवम्।
सगार्हस्थ्यं सुखी भूत्वा सफलं कुरु जीवनम्।।९१।।

हें नर, इस धराधाम पर यदि रहना चाहते हो तो पर्यावरण धर्म का पालन अवश्य करो। तुम परिवार सहित सुखी जीवन यापित करो और मानव जीवन को सफल बनाओ।

पर्यावरणरक्षायाः सुशिक्षा प्रसरेद् भुवि।
कुरु कार्यं वरो प्राणी गृहस्थो गृहस्वामिनी।। ९२।।

पर्यावरण रक्षा सम्बधी शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार पृथिवी पर फैले। इस हेतु कार्य करो, ताकि पशु पक्षी, गृहस्थ, गृहणियाँ सभी उत्तम जीवन जी सकें।

भुवि सुधा प्रवहेच्छुभमङ्गला,
भुवि कदापि भवेन्न हि दूषणम्।
भुवि भवेन्नरकर्मसुरक्षकं,
भुवनभास्कर देहि धियं भुवि।।९३।।

हे भुवन भास्कर! आप धरती पर ऐसा विवेक बिखेरें कि भूमि पर शुभ और मंगलकारी अमृत की धारा बहे। मानव के कर्म भूमि को सुरक्षित रखने वाले हों और प्रदूषण रहित भूमि सुपर्यावरणपूरित हो जाये।

।। इति श्रीजगन्नाथशुक्लसुतश्रीमदशोककुमारशुक्लविरचितो
भूमिप्रदूषणनामकः षष्ठोऽध्यायः।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

।।अथ सप्तमोऽध्यायः।।

समाजिकपर्यावरणम्

प्राकृतिकं स्वरूपं तन्निगदितं पुरा मया।
सामाजिकं स्वरूपं हि वक्ष्यामि हितकाम्यया।। १।।

पर्यावरण के दो स्वरूपों प्राकृतिक पर्यावरण और समाजिक पर्यावरण में से प्राकृतिक स्वरूप का वर्णन करने के उपरान्त अब मैं सामाजिक स्वरूप का वर्णन कर रहा हूँ ताकि प्राकृतिक और सामाजिक स्वरूप को समझकर पाठकगण अपना हित साध सकेंगे।

समाजे सत्त्वस्थाः सकल मनुजा जीवजगतो
जनानां संवासा जगति हरितास्ते रुचिकराः।
स्वरूपं संरम्यं प्रकृतिरतिपूता बलयुता
सुरम्ये संस्थाने भवतु परिहासः रतिकृतिः।। २।।

समाज में जगत् के सभी जीव, विशेष रूप से मानव सत्वगुण से युक्त होकर अपने अपने समाज में रहें। समाज का स्वरूप बहुत ही सुन्दर हो और घरों का प्राकृतिक व सामाजिक वातावरण अत्यन्त विशुद्ध और मजबूत हो। धरा पर हास एवं परिहास तथा सृष्टि संरचना का कार्य मनोरम स्थान पर हो। संसार का स्वरूप सुन्दर हो। मानवीय स्थल हरा भरा और रुचिकर हो।

सामाजिकं स्वरूपं तत् सुन्दरं सुखवर्धकम्।
समाजेभ्यः कृतं रम्यं पर्यावरणनिर्भरम्।। ३।।

सृष्टि के आरम्भ में सामाजिक स्वरूप अत्यन्त ही सुन्दर और सुखवर्धक था। सब कुछ समाज के हित को ध्यान में रखकर किया गया था। सभी का जीवन सामाजिक पर्यावरण पर निर्भर था।

(टि०): सामाजिक स्वरूप एक विशुद्ध (प्रदूषण रहित) सामाजिक व्यवस्था है इसलिए सुन्दर और सुखद है। इसमें अनावश्यक अनपेक्षित हस्तक्षेप या पश्चात्य प्रभाव में पड़कर संचार माध्यमों द्वारा अनुपयुक्त बदलाव अव्यवस्था फैलानेवाला है। इससे सामाजिक पर्यावरण प्रदूषित होता है। हर देश की अपनी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अलग संस्कृति होती है। हर देश की अपनी अलग-अलग परिस्थितियां होती हैं, भिन्न-भिन्न जलवायु होती है। ध्रुवीकरण के इस दौर में विभिन्न वेशभूषा व संस्कृतियों का अन्धानुकरण करके अपनाना बहुत हद तक तर्क-सम्मत नहीं कहा जा सकता है। जीवन में और समाज में बदलाव जरुरी है, नयापन भी समय की मांग है परन्तु अपनी संस्कृति, अपनी पृष्ठभूमि को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। किसी भी देश के समग्र विकास के लिए परमावश्यक है अपनी भाषा और संस्कृति से जुड़े रहना। सभ्यता का आधार भी अपना होना चाहिए।

सृष्टेः संरचनामत्र वेदपुराणसम्मतम्।

जानीयुः पाठकाः पूर्णामास्तिका ज्ञानहेतवे॥४॥

ईश्वर की सत्ता में और वेद-पुराणों में विश्वास करने वाले आस्तिक पाठक वेद और पुराण सम्मत सृष्टि संरचना को जानें।

सृष्टिस्थितिविनाशानां चक्रं चलत्यनादितः।

प्रलयानन्तरं सृष्टिः सृष्टेरनन्तरं लयः॥५॥

सांसारिक सृष्टि का, उसके बने रहने तथा उसके नष्ट होने का एक क्रम है जो चक्र अर्थात पहिये की भाँति अनादिकाल से चलता आ रहा है, इसलिए आगे भी चलता रहेगा। इसमें सृष्टि के बाद प्रलय और प्रलय के बाद सृष्टि होती रहती है। यही क्रम है।

टि० —(१) लय या प्रलय की स्थिति में सब कुछ जलमग्न हो जाना शास्त्रों में बताया गया है।

टि —(२) प्रदूषण की अधिकता से बढ़ती हुई भीषण गर्मी के कारण बर्फ पिघलकर इस धरती को जलमग्न कर देगी। प्रलय की प्रक्रिया शुरु हो चुकी है। बर्फ खण्ड पिघलने लगे हैं और समुद्र का जलस्तर धीर-धीरे बढ़ने लगा है। धरती का तापमान भी बढ़ने लगा है।

सर्गादौ सर्वभूतेशः प्रधानपुरुषो हरिः।

विष्णुर्व्यसृजदाकाशमाकाशाद्वायुरुत्तमः॥६॥

सृष्टि के आरम्भ में सभी जीवों के मालिक प्रधान पुरुष, सर्वव्यापक भगवान् विष्णु ने सबसे पहले आकाश को रचा। आकाश के बाद उसी परमेश्वर ने उत्तम वायु की सृष्टि की।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वायोरग्निस्ततो आपोऽद्भ्योहरिता वसुन्धरा।

पंचतत्त्वानि रम्याणि संजातानि पृथक् पृथक्।।७।।

उस भगवान् हरि ने वायु के बाद अग्नि की सृष्टि की। अग्नि के बाद उन्होंने जल की सृष्टि की। जल के बाद उन्होंने हरी-भरी व सबको धारण करने वाली वसुन्धरा का निर्माण किया। इस प्रकार उस पुराण पुरुष ने आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पाँचों तत्त्वों का अलग-अलग निर्माण किया।

टि०— ''तस्माद्वा एतस्मादात्मनः आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी '' यह तैत्तिरीय उपनिषद् का वचन है।

नारायणो जगत्स्वामी लक्ष्म्या सेवितो हरिः।

पंचतत्त्वानि रम्याणि दृष्ट्वा हृष्टोऽभवत्तदा।।८।।

तदन्तर लक्ष्मी द्वारा सेवित संसार के स्वामी भगवान् नारायण अपनी पंच तत्त्वात्मक सुन्दर संरचना को देखकर हृदय से प्रसन्न हुए।

प्राप्यन्ते पंचभूतेषु तन्मात्राणि तद्गुणाः।

शब्दः स्पर्शो रसो रूपं गन्धोऽपंचीकृतान्यथ।।९।।

इन सभी पाँचों तत्वों में पाँच गुण पाये जाते हैं जिन्हें पंच तन्मात्रा कहा गया है। जैसे आकाश का गुण है शब्द। वायु का गुण है स्पर्श। जल का गुण है रस। तेज का गुण है रूप और पृथ्वी का गुण है गन्ध।

नैतस्य कारणं कार्यं विद्यते ब्रह्मणोऽपरम्।

ब्रह्मप्रकृतिजीवात्मा तस्यैव त्रिविधा स्थितिः।।१०।।

इस सृष्टि और प्रलय का कारण और कार्य दोनों साक्षात परमेश्वर है। उसी की तीन स्थितियाँ—ब्रह्म, प्रकृति और जीवात्मा है।

रजस्तमस्सुत्त्वानां साम्यावस्थोच्यते हि सा।

प्रकृतिः सर्वसत्त्वानां जननी जायते सदा।।११।।

रजो गुण, तमोगुण और सत्वगुण की एक समान स्थिति में रहना 'प्रकृति' कहलाती है। यही प्रकृति सभी जीवों की जननी अर्थात उत्पत्ति का कारण बनती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऊर्णनाभो यथा तन्तुं सृजति लीयते ततः।

अनन्यगोचरं ब्रह्म सृजति लीयते जगत्॥१२॥

जिस प्रकार ऊर्णनाभ (मकड़ी) इच्छा मात्र से अपने आप जाल बनाकर उसमें खेलती है और जब चाहे उसे समेट लेती है। उसी प्रकार अखिल ब्रह्माण्ड नायक निर्गुण निराकार सगुण साकार गोविन्द की जब इच्छा होती है अपना विस्तार जगत् की सृष्टि के रूप में मकड़ी की जाल की तरह करते हैं और जब इच्छा होती है इस सृष्टि को अपने में समेट लेते हैं।

टि०— यह प्रक्रिया चलती रहती है। जगत् का अर्थ है गतिशील। जो चलता रहे वही जगत् है। जो सरकता रहे वही संसार है। इसके पीछे प्रभु का क्रीडा भाव भर है और कुछ नहीं। निष्काम कर्म करते रहने में कृष्ण को अनवरत प्रसन्नता मिलती है।

"यथोर्णनाभः सृजते गृह्यते च" यह उपनिषद् वचन है। अर्थात् जैसे मकड़ी जाल बनाकर खेलती है और उसे समेट लेती है।

गुणानां सात्विकांशेभ्यो ज्ञानेन्द्रियाणि सुस्थितौ।

श्रोत्रत्वङ्नेत्रजिह्वाश्च जायन्ते नासिकास्तथा॥१३॥

तीन गुणों (सत्व, रज, तम) में से सत्वगुण से प्राणियों की पाँचों ज्ञानेन्द्रियों आँख,कान, नाक, जीभ और त्वचा का निर्माण होता है।

व्योमादीनां रजोंऽशेभ्यः कर्मेन्द्रियाणि सुस्थितौ।

उपस्थाख्यानि जायन्ते वाक्पाणिपादपायवः॥१४॥

आकाशादि पंचतत्त्वों के रजो गुण से मुख, हाथ, पैर, लिंग और गुदा इन पाँच कर्मेन्द्रियों की रचना होती है।

प्राणापानस्तथा व्यानः उदानश्च समानकः।

वायवः पंचधाः सन्ति प्राणिनां प्राणहेतवे॥१५॥

प्राणियों के प्राण धारण हेतु शरीर में पाँच प्रकार की वायु विद्यमान रहती है। प्राणवायु, अपान वायु, व्यान वायु, उदान वायु और समान वायु। ये सभी शरीर में अलग-अलग स्थानों पर रहकर अलग-अलग कार्य करती हैं। जिनकी सम्यक् स्थिति से ही प्राणी का प्राण धारण करना संभव होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राणो घ्राणाग्रवर्त्यस्त्यपानश्च पायुशिश्नयोः।
व्यानोऽखिलशरीरस्थः उदानो नाम कण्ठगः॥१६॥

प्राणवायु नासिका के अग्रभाग पर रहती है। प्राण धारण इसके बिना संभव नहीं है इसलिए इसे प्राणवायु कहा जाता है। उदान वायु कण्ठ (गले) गुदा और लिंग भाग में विद्यमान रहती है। व्यान वायु समस्त शरीर में व्याप्त रहती है।

समानो नाम भुक्तान्नं पाचयति समीक्रियाम्।
करोति रसरक्ते च शुक्रं वर्ज्यं विसर्जनम्॥१७॥

समान वायु गृहीत भोजन को पचाकर एक रूपता प्रदान करती है। वही रस और रक्त में मिलकर और फिर शुक्र और वीर्य बन कर शारीरिक कार्य निष्पादित करती है। यह वायु अवशिष्ट को मल एवं मूत्र मार्ग से मल एवं मूत्र के रूप में बाहर निकालने में सहायता प्रदान करती है।

एतेभ्यः पञ्चभूतेभ्यो लोकाः पर्वतजीवनम्।
अन्नं वनं द्रवो द्रव्या जायन्ते विश्वहेतवे॥१८॥

इन पंचतत्त्वों (भूतों) से ही संसार की सृष्टि होती है। वन, पर्वत, खाद्यान्न, ठोस, एवं तरल द्रव्य सब संसार के जीवन् के लिए ही बनते हैं।

पृथिव्या ओषधिर्जाता ओषधेश्चान्नदेवता।
अन्नाद्रेतस्ततो जाता नराः शरीरधारिणः॥ १९॥

पृथिवी से औषधियों (वनस्पतियों) की उत्पत्ति होती है। औषधियों से अन्न की उत्पत्ति होती है। (अन्न भी एक प्रकार की औषधि ही है)। अन्न से रज, वीर्य बनते हैं। रज, वीर्य से शरीर की उत्पत्ति होती है।

टि०— पृथिव्या ओषधयः। ओषधिभ्योऽन्नम्। अन्नाद्रेतः। रेतसः पुरुषः। तैत्तिरीयोपनिषद' का वचन है।

(२) प्रलय काल में भी इन पाँचों तत्वों (पृथ्वी, जल, वायु, आकाश और अग्नि) में से कोई न कोई तत्त्व बच अवश्य जाता है। तब अगली सृष्टि का आरम्भ उसी से होता है। शास्त्रों में कही आकाश से ती कहीं अग्नि से तो कहीं जल से सृष्टि की उत्पत्ति मिलती है। आप्तवचन इसका प्रमाण है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अमैथुनी तदा सृष्टिर्मैथुनी तदनन्तररम्।
यजुः प्रमाणमत्रास्ति त्रिविष्टपे नरोद्भवः॥ २०॥

परमेश्वर ने अमैथुनी (बिना संभोग के) सृष्टि के द्वारा पुरुष एवं स्त्री (युवा-युवती) की सृष्टि की। (उत्तम कर्मों के आधार पर मनु सदुपा आदि की अमैथुनी सृष्टि हुई)। इन श्रेष्ठ युगलों के संयोग से मैथुनी सृष्टि द्वारा सृष्टि की प्रक्रिया आगे बढ़ी। सबसे पहले मनुष्य की उत्पत्ति तिब्बत (त्रिविष्टप) में हुई। इसका प्रमाण यजुर्वेद है।

मानवाश्च ततो जाताः प्रमाणमत्र च श्रुतिः।
युवत्यश्च युवानश्च मैथुनीसृष्टिहेतवे॥ २१॥

तत्पश्चात् संभोगात्मक (मैथुनी) सृष्टि के लिए युवकों एवं युवतियों की सृष्टि प्रभु ने एक साथ की। इसका प्रमाण स्वतः प्रमाण वेद है।

टि०— स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम उल्लस में यह श्रुति वाक्य उद्धृत किया है। 'मनुष्या ऋषयश्च ये, ततो मनुष्या अजायन्त'। यजुर्वेद की यह पंक्ति इस सत्यता का प्रमाण है कि आरंभ में सर्वसमर्थ प्रभु ने युवक एवं युवतियों की उत्पत्ति की। मैथुनी सृष्टि के लिए युवावर्ग ही उपयुक्त होता है।

पृथिव्यां प्रथमं धाता दुर्लभं मानुषीं तनुम्।
व्यसृजच्छ्रेष्ठबुद्धिं च दुःखानि च सुखानि च॥ २२॥

विधाता ने इस धराधाम पर सर्वप्रथम दुर्लभ मनुष्य तन की ही रचना की है। उसे श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त किया है तथा कर्मों के आधार पर सुख और दुःख भोगने के लिए विवश किया है।

जरायुजाण्डजोदि्भश्च जाताश्च स्वेदजास्तथा।
चतुर्विधशरीराणि जातानि पृथिवीतले॥ २३॥

इस धरती पर शरीरधारी जीवों की उत्पत्ति चार प्रकार से बताई गई है। जरायुज (गर्भ से), अण्डज (अण्डे से) उदिभज् (मिट्टी से) और स्वेदज (पसीने से)।

मनुज प्रक्रिया सूक्ष्मा चोत्पत्तिर्वर्णिता मया।
ज्ञानविवर्धनं सम्यगस्तु प्रकामना मम॥ २४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे मनुज, सृष्टि संरचना की सूक्ष्म प्रक्रिया का वर्णन आप सब के ज्ञान संवर्धन के लिए मैंने किया है। इससे आपके ज्ञान की अभिवृद्धि हो यही मेरी प्रकृष्ट कामना है।

पंचतत्त्वानि रम्याणि कामदा प्रकृतिस्तदा।

सुगन्धः शीतलो वायुर्वाति स्म वारि निर्मलम्॥२५॥

उस समय प्रभु प्रदत्त पाँचों तत्त्व अपने-अपने सुन्दर स्वरूप में थे। प्रकृति कामनाओं को पूर्ण करने वाली थी। शीतल व सुगन्धित वायु बहती थी। और निर्मल जल अपनी स्वच्छन्द गति से प्रवाहित होता था।

क्षीरसागरशायीशः विनोदार्थमकल्पयत्।

पंचतत्त्वात्मिकां सृष्टिमतनोत् स तनुं विभे॥२६॥

हे विभे! क्षीर सागर में शयन करने वाले फणीश्वर ने अपने मनोविनोद के लिए इस पंच तत्त्वात्मक जगत की सृष्टि की है। यह जगत उनके सूक्ष्म शरीर का ही विस्तार मात्र है।

तपसा प्राप्नुवन्मन्त्रान् मन्त्रद्रष्टार उच्चकैः।

ऋषिभ्यः प्राप्नुवन् शिष्याः श्रुतिपरम्परा धिया॥२७॥

ब्रह्मा जी की निरन्तर तपस्या करके, अपने तपोबल के प्रभाव से ऋषियों ने उन वेद मन्त्रों का साक्षात्कार किया। तदनन्तर ऋषियों से श्रवण करके श्रुति परम्परा से उनके शिष्यों ने अभ्यास द्वारा इन वैदिक मन्त्रों को प्राप्त किया।

यज्ञज्ञानं तपोज्ञानं ज्ञानं सामाजिकं तदा।

आदानस्य प्रदानस्य ज्ञानं शीलं प्रशंसितम्॥२८॥

आचार्य अपने अन्तेवासी (समीप रहने वाले) शिष्यों को यज्ञकर्म का ज्ञान, तप का ज्ञान एवं सामाजिक ज्ञान अर्थात समाजोपयोगी ज्ञान प्रदान करते थे। समाज में ज्ञान का ही आदान और प्रदान होता था। इनमें भी उत्तम व्यवहार करने का ज्ञान सर्वाधिक प्रशंसा योग्य होता था।

हरेर्भक्त्यां रताः सर्वे संस्कारेण समन्विताः।

विद्याभ्यासं प्रकुर्वन्तः प्रदृश्यन्ते स्म बालकाः॥२९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राचीन काल में विद्यार्थी अच्छे संस्कार में पले-बढ़े होते थे। परमात्मा का ध्यान करना और स्वाध्याय करना और पढ़े हुए का अभ्यास करना विद्यार्थी का परम कर्तव्य होता था।

धर्माधारो धरण्याश्च धर्मेण धार्यते धरा।
धर्मभ्रष्टो ध्रुवं नष्टो धर्मं धारय भोः सुधीः॥३०॥

धर्म (सत्कर्म) धरती का आधार था क्योंकि धर्म करके ही धरा पर जीवन धारण करना संभव था। धर्मभ्रष्ट निश्चय ही नष्ट हो जाता था। इसलिए हे मननशील बुद्धिमान मानव, तुम भी धर्म को धारण करो (अर्थात शुभ सोचो और शुभ करो)।

मनुर्महीक्षितामाद्यः प्रणवः छन्दसां यथा।
रामः कृष्ण हरिश्चन्द्रो व्यासो धर्मा अनुव्रताः॥३१॥

जिस तरह वेदमंत्रों में प्रथम 'ओम्' है उसी तरह राजाओं में प्रथम महाराज वैवस्वत मनु थे। महाराज मनु, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र, मर्यादा पुरुषोत्तम राम भक्तवत्सल भगवान् कृष्ण और भगवान् व्यास ये सभी धर्म-स्वरूप होते हुए भी धर्म का सदैव अनुपालन करने वाले थे।

धर्मस्तेषां परित्राणं परा प्रीतिः परस्परम्।
धर्ममाधृत्य विद्रोहो नासीत् संदृश्यते यथा॥३२॥

आपस में प्रेम भाव से रहना और सज्जनों की रक्षा करना सबका सामाजिक धर्म (कर्तव्य) होता था। उस समय धर्म (कथित सम्प्रदाय) के आधार पर विद्रोह नहीं होता था और न ही दिखाई पड़ता था।

(टि०)— धर्म और सम्प्रदाय के अन्तर को समझें। सम्प्रदाय एक समुदाय, एक वर्ग का नाम है। इस वर्ग में लोगों की संख्या कितनी भी हो सकती है। परन्तु किसी सम्प्रदाय द्वारा अपनाया जाने वाला अच्छा कर्म या अच्छा सिद्धान्त ही धर्म है, जो पीड़ादायक नहीं होता।

इसे ईस प्रकार समझें। धर्म वह परिधान है जिसे सम्प्रदाय रूपी व्यक्ति धारण करता है। धर्म धारण किया जाता है। सम्प्रदाय धर्म को धारण करता है। इसलिए सम्प्रदाय अलग-अलग होते हुए भी धर्म सबका समान हो सकता है।

धर्म जोड़ता है तोड़ता नहीं। जबकि सम्प्रदाय जोड़ता भी है और तोड़ता भी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अहं मुख्योऽहमुच्चैश्च भावना संभृता यदा।
लोकोऽयं प्रविभक्तश्च नामानि च यथा तथा।। ३ ३।।

जब मानव में, मैं मुख्य हूँ, मैं ऊँचा हूँ का भाव पैदा होने लगा तब समाज टूटने लगा और यही मानव समाज बँटकर विभिन्न सम्प्रदाय, समुदाय के नाम से जाना जाने लगा।

टि०— (१) सृष्टि के आरम्भ में हमारी एक ही जाति थी और वह थी मनुष्य की जाति। कालान्तर में मनुष्य दो वर्गों में बँटा आर्य वर्ग और दस्यु वर्ग। ऋग्वेद का वचन है 'विजानीयादार्यऽन्ये च दस्यवः'। अर्थात् मानव को आर्य और दस्यु के नाम से जाना जाये।

(२) अच्छे स्वभाव वाले परोपकारी श्रेष्ठ, सज्जन सुर आर्यवर्ग में रखे गए और दुष्ट प्रकृति वाले, आततायी असुर, दस्यु वर्ग में रखे गए। तत्पश्चात् इस आर्य समाज का एक और विभाजन हुआ। जिसके अनुसार द्विज (विद्वान्) आर्य वर्ग में रखे गए और मूर्ख अनाड़ी अनार्य शूद्र वर्ग में रखे गए। इसका प्रमाण है ऋग्वेद का वचन जिसे स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में उल्लिखित किया है—

'उत शुद्रे उतार्ये' अर्थात् शूद्र वर्ग या आर्य वर्ग।

इस समाज का पुनः विभाजन हुआ और यह विभाजन कर्म को परम्परागत जाति से जोड़कर किया गया। तब ज्ञान ग्रहण करने व बांटने वाले वर्ग को ब्राह्मण जाति, राज्य व धर्म की रक्षा करने वाले वर्ग को क्षत्रीय जाति, धनोपार्जन और उसका संरक्षण का कार्य करने वाले वर्ग को वैश्य जाति और सेवाभाव रखकर कार्य करने वाले अनाड़ी वर्ग को शूद्र जाति की संज्ञा दी गई।

जातिमाश्रित्य वर्गा न कर्माश्रित्य तदाभवन्।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो लोकस्य हेतवे।। ३ ४।।

वंशानुगत कर्म को आधार मानकर आर्यावर्त के समाज को ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार जातियों में बाँट दिया गया ताकि किसी वर्ग का किसी वर्ग से आजीविका को लेकर क्लेश न हो (जैसा कि आज हो रहा है) और समाज सुचारु रूप से चलता रहे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

टि०— इस विभाजन को प्रभु का शरीर मानकर किया गया विभाजन बताया गया है। जिस प्रकार शरीर में प्रत्येक अंग का महत्व है उसी प्रकार समाज में हर वर्ग का महत्व था और है। यजुर्वेद का मन्त्र देखें—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।

उरुतदस्ययद्वैश्यः पद्भयां शूद्रोऽजायत॥

अर्थात् उस सर्वनियन्ता रचयिता का मुख भाग ब्राह्मण है, बाहु (भुजा) भाग क्षत्रिय है, वक्षस्थल भाग वैश्य है और पद भाग शूद्र है।

टि०— इस मन्त्र का उद्देश्य समाज में इन चारों वर्गों के सामाजिक महत्व को प्रतिपादित करना तथा सह अस्तित्व को बनाये रखना है।

चार आश्रम और चार जातियों में विभाजित समाज हजारों वर्षों तक सामाजिक समरसता के साथ चलता रहा। इस जाति व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह का ही परिणाम है आज अल्प वर्षों में विभिन्न समुदायों का बनना और विखंडित होना। कोई भी ऐस समुदाय नहीं है जिसमें अनेक जाति व्यवस्था न हों और वे आपस में लड़ते-झगड़ते न हों। परन्तु आज वे ही समुदाय एक-दूसरे के सिद्धान्तों को अपने सिद्धन्त और स्वार्थ के विरुद्ध मानकर सामुदायिक एवं साम्प्रदायिक विद्वेष पैदा कर रहे हैं। इससे आज सामाजिक पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है।

आज सब कुछ टूट रहा है। आदर्श टूट रहे हैं, सिद्धान्त टूट रहे हैं, समाज टूट रहा है, परिवार टूट रहा है, लोग टूट रहे हैं और टूटते जा रहे हैं। वह दिन दूर नहीं जब पुत्र-पुत्री को अपने माता पिता को पहचानने के लिए मशक्कत करनी पड़े। भक्ति मुक्ति नहीं भुक्ति का माध्यम बन रही है। पशुवत आचरण मनुष्य का आचरण बनता जा रहा है। भोग और नाश, यही मानव की नियति बन रही है जिसकी वजह से जन्म लेते ही मरने की तैयारी शुरु हो रही है।

न कोऽपि कस्याचिद्धन्ता न कोऽपि कस्यचिद्रिपुः।

स्वकर्मणि रताः सर्वे ग्रामिणो नागरास्तदा॥३५॥

उस समय कोई किसी का हन्ता नहीं था क्योंकि कोई किसी का शत्रु नहीं था। सभी ग्रामवासी और नगरवासी अपने-अपने काम में लगे रहते थे।

वर्गश्चाप्युपवर्गेषु प्रजातिषु विभाजिताः।

वर्गमाश्रित्यकर्माणि कर्तव्यानि तदाभवन्॥३६॥

कालान्तर में इन वर्गों में से भी अनेक वर्ग और प्रजातियाँ उत्पन्न हो गई।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लोगों ने मूल वंश को आधार बनाकर उस ऋषि के नाम पर पृथक वर्ग व जाति बना ली और उस वर्ग के काम को अपना पारिवारिक व समाजिक काम मानकर करने लगे।

विप्राणां कर्म विद्याया दानमर्जनरक्षणम्।
क्षत्रियाणां तदा कर्म राष्ट्रधर्मस्य रक्षणम्।।३७।।

ब्राह्मण का काम ज्ञानार्जन करना, ज्ञान देना और ज्ञान की रक्षा करना था। क्षत्रियों का काम देश और धर्म की रक्षा करना था।

वैश्यानां कर्म वाणिज्यं धनानां परिरक्षणम्।
शूद्राणां कर्म सेवासीत् पालनीयं प्रयत्नतः।।३८।।

वैश्यों का काम कृषि करना, व्यापार करना और समाज के लिए धन संग्रह करना तथा खद्यान्न की उपज और उसकी रक्षा करना था। शूद्रों का काम सेवा करना था। सभी वर्ग अपना-अपना काम सामाजिक दायित्व मानकर परिश्रमपूर्वक करते थे।

सर्वे स्वधर्ममाश्रित्य कुर्वन्ति स्म क्रियां विधिम्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः प्रेयः पूज्यं तदाभवत्।।३९।।

सभी अपने कर्म को अपना धर्म समझ कर करते थे। अपने कर्म को श्रेष्ठ, प्रिय और पूज्य मानकर करते थे। उसी कर्म को करते हुए मृत्यु का वरण करना उचित समझते थे क्योंकि वह उनका वंशानुगत कर्म होता था।

ममानुयायिनः सन्तु जनैर्यत्नो यदा कृतः।
वर्गभेदः समारब्धः शस्त्रास्त्रं निर्मितं तदा।।४०।।

जब लोग अपने-अपने वर्गों उपवर्गों के प्रधान बनने की तथा अपने-अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ाने की होड़ में लगने लगे तब आपस में युद्ध होने लगा और उसके लिए अस्त्रों एवं शस्त्रों का निर्माण शुरु हो गया।

सेनानां घटनं जातं राजा नेता जनाः प्रजाः।
राज्यस्य राजधर्मस्य रक्षको नृपतिः स्वयम्।।४१।।

तब सेना की संरचना आरम्भ हुई। नेता राजा बना और लोग प्रजा। क्षेत्र रक्षक सैनिकों के सेनापति बनने लगे। राज्य और राजधर्म का रक्षक राजा स्वयं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बन बैठा।

समृद्ध्यर्थं समाजस्य प्रजानां पालनाय च।

राज्यस्य राजधर्मस्य रक्षको नृपतिर्विभे ॥४२॥

हे विभे, समाज सुव्यवस्थित हो, राज्य में समृद्धि आए, प्रजा का अच्छी तरह से पालन हो, सबको खाने के लिए अन्न, पहनने के लिए वस्त्र, और रहने के लिए आवास मिले, इसके लिए राजा ने अपना प्रशासन शुरु किया।

वर्गानुसारमद्यापि व्यवस्था सैव शाश्वती।

समाजैः स्वीकृता दीव्या व्यवसाये समानता॥४३॥

आज भी वही शाश्वत वर्गाधारित व्यवस्था भारतीय समाज में चल रही है। आज भी उस दिव्य व्यवस्था को समाज ने स्वीकार किया है। केवल व्यवसाय में अन्तर अवश्य दिखाई दे रहा है।

टि०— आज व्यवसाय बदलने या चुनने के लिए सभी वर्ग स्वतन्त्र हैं।

धर्मध्वजा ध्वजं नीत्वा गच्छन्ति स्म सुखेहया।

उपदेशान् प्रयच्छन्तः प्राणिनां सुखहेतवे॥४४॥

तब धर्माचार्य, धर्म रूपी ध्वजा को हाथ में लेकर शुद्ध मन से, बिना किसी पक्षपात के प्राणी मात्र के सुख के लिए उपदेश दिया करते थे।

यशोधना जना आसन कर्मसु निरताश्च ते।

धर्मार्थकाममोक्षश्च जगतो जनकामना॥४५॥

सभी लोग यश को ही वास्तविक धन मानते हुए अपने कर्म में रत रहते थे। धर्म करके, धन कमाना, धन कमा कर कामनाओं की पूर्ति करना और अन्त में मोक्ष प्राप्त करना, यही लोगों के जीवन के उद्देश्य थे। मानव को जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष (भगवत् प्राप्ति) था।

त्यागः क्षमा दमोऽस्त्येयं शौचमिन्द्रयनिग्रहः।

अक्रोधः शान्तिभावश्च सत्यं निष्ठा सहिष्णुता॥४६॥

ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठा रखना, निर्बल को क्षमा कर देना, मन को नियन्त्रण में रखना, चोरी न करना, शुद्ध आचरण करना, इन्द्रियों को वश में रखना, क्रोध न

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करना, शान्ति भाव स्थापित करना, सत्य बोलना, सब कुछ सहन करना, ये मानव धर्म थे।

यज्ञाध्यायनदानानि तपः परोपकारिता।
मातुः पितुश्च सम्मानः पालनीयः प्रयत्नतः॥४७॥

इतना ही नहीं प्रतिदिन यज्ञ (हवनादि) करना, अध्ययन करना, दान देना, तपस्या करना, दूसरे जीव के लिए भलाई का काम करना, माता-पिता का सम्मान करना, ये सभी धर्म (सत्कर्म) थे जिनका पालन प्रयत्नपूर्वक किया जाता था।

टि०—प्राचीन काल में धर्म से मानवीय गतिविधियों को जोड़ने का कारण था प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण को शुद्ध रखना।

संस्कृतिर्भारतस्येयमास्ति संस्कारसेचिता।
भारतीयाः सदैवासन् परार्थे सर्वदुस्सहा॥४८॥

भारत की यह संस्कृति शुद्ध संस्कारों से सींची हुई संस्कृति है। हमारी भारतीय संस्कृति शुरु से ही पर हित में सभी दुःखों को सहन करने वाली त्यागमयी सर्वसह्या संस्कृति रही है।

सत्यावादी हरिश्चन्द्रः रामश्च धार्मिकः शिविः।
ऋषिरस्तु दधीचिर्वा विक्रमस्तु सनातनः॥४९॥
त्यागस्य मूर्तयश्चैते पूर्वजा भारतस्य भोः।
आर्यावर्तस्य सम्मान्या आयेर्भ्योऽस्तु नमो नमः॥५०॥

जिसने अपना सर्वस्व दान देकर और कष्ट सह कर भी सत्यव्रत का पालन किया वह सत्यवादी परमदानी राजा हरिश्चन्द्र, पितृवचन का पालन करने के लिए अयोध्या की राजगद्दी को त्याग कर वन-वन में भटकने वाले राजा राम, परम धार्मिक करुणा में अद्वितीय राजा शिवि, जिसने शरण में आए हुए एक कबूतर की रक्षा के लिए एक बाज को अपने शरीर का मांस तक काट कर देने में हर्ष का अनुभव किया। महर्षि दधीचि जिसने वृत्रासुर का वध करने के उद्देश्य से वज्रायुद्ध बनाने हेतु इन्द्र को अपनी शारीरिक अस्थियाँ प्रदान कर गर्व का अनुभव किया, राजा विक्रमादित्य जिसके समान प्रजारंजक राजा हुआ ही नहीं, इन त्याग की प्रतिमूर्ति, आर्यावर्त के श्रेष्ठ आर्यों को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

टि०—ये हमारे प्रिय भारत के अतीत के गौरव हैं। ये पूर्व पुरुष भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं। भारत की पहचान है, हम सब की शान हैं।

आर्यास्तु वयमेव स्मो ज्येष्ठाः श्रेष्ठा धरातले।

सगर्वं भारतीया भो, वदन्तु नागताः कुतः।।५१।।

इस धरती पर ज्येष्ठ और श्रेष्ठ आर्य हम भारतीय ही हैं। हम किसी अन्य देश से नहीं आए हैं। इस सत्य को गर्व से सभी भारतीय बोलें व स्वीकार करें।

टि०— महाकवि जयशंकर प्रसाद जी ने भी इसी सत्य को समुद्घाटित किया है—

१. हमारी जनभूमि थी यही, नहीं कहीं से हम आए

२. वही हम दिव्य आर्य संतान

अग्निं प्रज्वाल्य लोकास्तं सेवन्ते स्म दिवानिशम्।

विनिमयो विचारस्य भवति स्म परस्परम्।।५२।।

शीतकाल में लोग आग जलाकर उसके चारों ओर बैठकर ठण्ड को दूर करते थे और विचारों का आदान-प्रदान भी करते थे, जिससे एक-दूसरे के सुख-दुख की जानकारी मिलती थी। आज इसका अभाव सा हो गया है।

क्षेत्राणां कर्षणे बीजे वपने रोपणे तथा।

हृदयेन भवन्ति स्म कृषकास्ते सहायकाः।।५३।।

खेत को जोतने का कार्य हो, बीज बोने का कार्य हो या फिर धान के पौधे रोपने का कार्य, किसान मिलकर एक-दूसरे के काम में हृदय से हाथ बँटाते थे। इससे प्रीतिभाव और अपनापन बढ़ता था।

राष्ट्रभावनया कार्यं प्रकुर्वन्ति स्म मानवाः।

समाजस्य स्वराष्ट्रस्य रक्षकास्ते सदाभवन्।।५४।।

सभी जन राष्ट्र-भावना से भरकर अपना-अपना कार्य करते थे। राष्ट्र और समाज दोनों के रक्षक मनुष्य स्वयं थे।

गृहस्थः स्वगृहं त्यक्त्वा सेवते स्म यदा वनम्।

लभते स्म तदानन्दं रामं कृष्णं सदा स्मरन्।।५५।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गृहस्थ चौथेपन में अपने घर को छोड़कर जब वन में वास करने लगते थे तब वहाँ राम और कृष्ण का स्मरण करते हुए परमानन्द को प्राप्त करते थे।

सुदृढा सा व्यवस्थासीत् धनं धान्यं प्रतिगृहम्।

समाजे भयराहित्यं निर्भया पशवो जनाः॥५६॥

सामाजिक व्यवस्था सुदृढ़ थी। प्रत्येक घर धन-धान्य से भरा रहता था। समाज में सभी जन निर्भय जीवन यापन करते थे और पशु-पक्षी भी निर्भय रहते थे।

ग्रामाणां गृहशोभासन् गोमहिषाश्वहस्तिनः।

गोमयेन गृहद्वारः शुद्धिमर्हन्ति सर्वदा॥५७॥

गाँवों के घरों की शोभा गाय-बैल, भैंस, घोड़े व हाथी आदि पशुधन से होती थी। गाय के गोबर से घर और द्वार को लीप कर शुद्ध किया जाता था।

नित्यकर्म समाप्त्यर्थं प्रत्यहं ग्रामवासिनः।

क्षेत्रं प्राकृतिकं रम्यं सेवन्ते स्म नदी वनम्॥५८॥

नित्यक्रिया (दन्तधावन, स्नान, पूजा आदि) निवृत्ति का कार्य ग्रामवासी नदी तट पर, वनों में झील-झरनों के तट पर प्रकृति के सुन्दर वातावरण में सम्पन्न करते थे।

ईक्षोः रसस्य गूडस्य सेवनं सुखदायकम्।

वितरणं वरं ग्रामे प्रीतिभोजश्चप्रतीदिः॥५९॥

गन्ने तैयार होने पर प्रत्येक ग्रामवासी एक दूसरे के यहाँ जाकर गन्ना, गूड़ और रस का स्वेच्छा से सेवन करते थे। वितरण में कोई भेदभाव नहीं होता था। इसी तरह नई फसल के आने पर लोग एक दूसरे को अपने यहाँ आमंत्रित करके प्रीतिभोज करते जो वास्तव में प्रीति प्रदान करने वाला होता था।

एवमेव यदाम्राणि पक्वानि मधुराणि च।

प्रेम्णा सर्वान्समाहूय भोजयन्ति स्म कर्षकाः॥६०॥

इसी तरह जब आम पक जाते थे तब कृषक एक दूसरे को अपने यहाँ सादर आमंत्रित करके पके हुए मधुर आम का भरपूर सेवन समूह में करते थे और आनन्दित होते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शाकादीनां फलादीनामन्नादीनाञ्च सर्वदा।

वितरणं वरं प्रीतेरैक्यस्य परिवर्धकम्॥६१॥

ग्रामवासी जिसके यहाँ जो भी सब्जी, फल, अनाज उपजता एक दूसरे को प्रसन्न मन से वितरित कर प्रसन्न होते थे। इससे एकता की अभिवृद्धि होती थी और यह एक अच्छी परम्परा थी एक दूसरे के यहाँ जाकर मिलने की जिसका आज सर्वथा अभाव महसूस किया जा रहा है।

परस्पराश्रितं धन्यं जीवनं वरदायकम्।

प्राप्यते स्म तदानीं ते ग्रामीणाः सुखिनः पुरा॥६२॥

पुराने जमाने में मानव जीवन परस्पराश्रित था। वही श्रेष्ठ जीवन था क्योंकि सभी ग्रामीण तब सांसारिक सुख से सुखी थे।

टि०— आज भौतिक सुखिधाएँ है पर आनन्द नहीं है।

समूहं रचयित्वा ताः स्त्रियः प्रातर्गृहाद् बहिः।

सेवन्ते स्म सदा सायं क्षेत्रं रम्यं नरा मुदाः॥६३॥

तब स्त्री एवं पुरुष अपना अपना समूह बनाकर प्रातः और सायं घर से बाहर निकलकर प्रसन्न मन से रमणीय प्रकृति का आनन्द लेते थे।

ग्रामे परिचिताः सर्वे कोऽप्यंपरिचितो तदा।

नासीच्च कर्म सर्वेषां परिष्कारेण पूरितम्॥६४॥

गाँव में स्त्री पुरुष सभी एक दूसरे को पहचानते थे। कोई भी अपरिचित नहीं होता था। सबकी निगाह सब पर रहती थी। इसलिए दुष्कर्म नहीं होता था। और सभी मिलकर समाज का तथा लोगों का परिष्कार शुद्ध संस्कारों द्वारा करते रहते थे।

प्रतिस्पर्द्धा तदानीं न दृश्यते चाद्य दुःखदा।

समूहः पूजितो ग्रामे सहयोगः समादृतः॥६५॥

उस्र समय परस्पर प्रतिस्पर्द्धा अर्थात् आगे बढ़ने की होड़ नहीं थी। जो आज दिखाई दे रही है और जो दुखों का आज मुख्य कारण है। समाज में समहू का सम्मान होता था तथा सहयोग भाव का सभी आदर करते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नित्यक्रिया निवृत्यर्थं सदैव गमनं वरम्।
स्त्रीणां स्त्रीभिस्सदासीच्च नराणां च नरैः सह।।६६।।

नित्यक्रिया से निवृत्त होने के लिए स्त्रियों का पृथक् समूह तथा पुरुषों का पृथक् समूह प्रातः एवं सायं निकल पड़ता था। और इसे अच्छा माना जाता था।

टि०— पहले शौचालय या स्नानादि की व्यवस्था घरों में नहीं होती थी इसलिए सभी घर से बाहर नदी, तालाब, जंगल, झील, झरनों पर जाकर नित्य क्रिया से निवृत्त होते थे।

निजतां वर्धयन्तस्ते कुर्वन्ति स्म क्रियां विधिम्।
भ्रातृभावं सदाचारं रक्षन्तः संस्कृति विभे।।६७।।

हे विभे, सभी ग्रामवासी अपनापन भाव से कार्य करते थे तथा समाजिक नियमों का पालन करते थे। उनके कार्य एवं क्रियाकलाप, भ्रातृ भाव, सदाचार एवं संस्कृति की रक्षा करने वाले होते थे।

टि०— आज हम किसी को अपना नहीं मान रहे हैं इसलिए एक दूसरे को ठग रहे हैं।

स्वार्थ विरहिता लोका सर्वस्यार्थस्य सिद्धये।
कर्माणि ते प्रकुर्वन्तो जीवन्ति स्म स्वजीवनम्।।६८।।

स्वार्थ से विरहित समाज सबकी अर्थ सिद्धि के लिए कार्य करता हुआ जीवन धारण करता था।

टि०— आज इसी का अभाव हो गया है जिसकी वजह से सबमें प्रतिस्पर्द्धा बढ़ गई और समाजिक प्रदूषण बढ़ गया है।

जानन्ति स्म तदाज्ञा न सामाजिकं प्रदूषणम्।
हानौ लाभे सुखे दुःखे सहायका नराः स्त्रियः।।६९।।

सामाजिक प्रदूषण को तो निपट गँवार तक नहीं जानता था क्योंकि एक दूसरे की हानि में, लाभ में, सुख में और दुःख में स्त्री एवं पुरुष सभी सहायक होते थे। किसी को भी प्रदूषित करने का विचार किसी के मन में नहीं आता था।

भारतीया जना नित्यं भारतस्य प्रशोषणे।
लीना भारतं नष्टं दृश्यते खिद्यते मनः।।७०।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुख की बात यह है कि आज भारत को लोग ही भारत का पूरी तरह से शोषण करने में हैं प्रतिपल लगे हुए हैं। भारत नष्ट हो रहा है और यह देख क मेर मन दुखी हो रहा है।

प्रदूषितप्रकारेण विक्रयं क्रियते क्रिया।
शोषणं भारतस्याद्य भारतीयैर्विधीयते।।७१।।

आज भारत के लोग ही भारत का शोषण एवं दोहन कर रहे हैं। प्रदूषित तरीके अपना कर प्रदूषित खाद्यान्न या अन्य प्रदूषित वस्तु को भारतीयों को ही बेंचकर उनका धन हरण कर रहे हैं।

टि०—भारत समग्रता का द्योतक है जिसमें भारत का कण कण भारतीय है।

यद्येवं क्रियते कार्यं भारतस्य विनाशकम्।
प्रणष्टे भारते कस्य का गतिरिति चर्चतु।।७२।।

आज इस विषय पर चिन्तन करने की अत्यन्त जरुरत हो गई है कि यदि इसी प्रकार हम भारत का शोषण करते रहे तो भारत नष्ट अवश्य हो जायेगा। भारत के नष्ट होने पर भारतीयों की क्या गति होगी।

भारतीयं यदा हन्ति हन्ति भारतं स्वकम्।
हन्ति स्वं स्वस्य देशं च मानं जनं धनं धराम्।।७३।।

भारत के लोगों का विनाशक अपने भारत का विनाशक है। वह अपना और अपने देश का विनाशक है। भारत का विनाशक अपना ही मान, अपने ही लोग अपना ही धन एवं अपनी ही धरा का विनाशक है।

सुखसंभोगिनः श्रेष्ठाः सांसदा मन्त्रिणो विशाः।
उच्चाधिकारिणो लीनाः निर्धनो निर्धनायते।।७४।।

भौतिक सुख सुविधा का सम्यक् उपभोग करने वाले सांसद , मन्त्री उच्चाधिकारी एवं श्रेष्ठ धनपति उत्तरोत्तर सम्पन्न हो रहे हैं। जबकि निर्धन वर्ग उत्तरोत्तर निर्धन होता जा रहा है।

निर्धनं भारतं नास्ति भारतीयैर्दरिद्रताम्।
याति चानुदिनं कृत्यैर्दूषणैर्भारतं महत्।।७५।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हमारा महान भारत निर्धन नहीं है बल्कि हम भारतीय अमने दूषित कृत्यों से प्रतिदिन भारत को निर्धन बना रहे हैं।

भारतस्य धनं मानं भारतीयैर्वशीकृतम्।
कैश्चिच्छ्रेष्ठजनाः शेषा निर्धनाः भारतं महत्॥७६॥

भारत के धन एवं सम्मान को प्रभुत्व सम्पन्न कुछ भारतीयों ने ही अपने वश मं कर लिया है। परिणाम स्वरूप कुछ भारतीय ही सम्मन्न हैं भारत तथा भारत की अधिकांश जनता तो निर्धन है।

क्षेत्रेषु दृश्यते नूनं स्पर्द्धाया विवर्धनम्।
नारीषु पुरुषेषु च भौतिकसाधनेषु च॥७७॥

आज प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा दिखाई दे रही है। पुरुषो में प्रतिस्पर्द्धा दिखाई पड़ रही है तो स्त्रियों में भी प्रतिस्पर्द्धा दिखाई पड़ रही है।

प्रदूषणे प्रतिस्पर्द्धा भ्रष्टाचारो भयावहः।
स्वार्थसिद्धर्धनं कामः स्वेच्छाचारो हि कारणम्॥७८॥

प्रदूषण के मूल कारण है परस्पर प्रतिस्पर्द्धा, भयावह भ्रष्टाचार, स्वार्थसिद्धि, धन, काम की पूर्ति एवं स्वेच्छाचारिता।

वितरणं धनानां च समानं प्रभवेत् सुखम्।
मही विकसिता नूनं दुःखिनः सुखिनः सदा॥७९॥

यदि धन का वितरण समान भाव से किया जाये तो भारत ही क्या सम्पूर्ण पृथ्वी विकसित हो जायेगी। फिर तो दुखी भी सुखीं रहने लगेंगे।

कलाम सदृशो नेता प्रभवेद् भारते भुवि।
राष्ट्रपतिश्च मन्त्री च लोकः पूजिता धरा॥८०॥

हमारे भारत के वर्तमान राष्ट्रपति महामहिम श्री ए पी जे कलाम जी के सदृश ही यदि हमारे नेता, मन्त्री और भारत की जनता हो जाय तो भारत धरा आज भी वही सम्मान प्राप्त करेगी जो कभी इसने प्राप्त किया था।

कीर्तने नर्तने नित्यं मांगलिकमहोत्सवे।
सर्वेषां सहभागित्वं प्राप्नुवन्ति स्म कर्षकाः॥८१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विवाहादि, मांगलिक समारोह के सुअवसर पर नृत्य, गीत, कीर्तन आदि में किसानों को एक-दूसरे का भरपूर सहयोग मिलता था।

सेवन्ते स्म यदा सायं प्रातश्च शशिभास्करौ।
लभन्ते स्म तदा प्रीतिं स्वास्थ्यं च परमं सुखम्॥८२॥

सभी ग्रामवासी प्रातः सूर्य का और रात में शशि का सेवन करते थे। इससे परस्पर प्यार बढ़ता था। लोग स्वस्थ रहते थे और परम सुख को प्राप्त करते थे।

वैवाहिकादिसंस्कारे समेषां समुपस्थितिः।
काम्यते सर्ववर्गाणामस्पृश्यास्ते कथं कथम्॥८३॥

विवाह आदि सामाजिक संस्कारों में प्रत्येक घर में प्रायः सभी वर्ग के लोग अपना-अपना सामाजिक कार्य सम्पन्न करने के लिए आमंत्रित किए जाते थे। कोई अस्पृश्य नहीं था।

नापितचर्मकाराणामश्ववाहस्य भूमिका।
रजककर्मकारणां स्त्रीणां केन न दृश्यते॥८४॥

नाई, चर्मकार, घोड़ेवाला, धोबी, कर्मकार आदि की उपस्थिति और उनके कार्य किसे दिखाई नहीं देते। सभी परिवार एक-दूसरे के यहाँ जाकर सहयोग देते हुए आज भी दिखाई देते हैं।

काचकंकणविक्रेता कुम्भकारश्च सौचिकः।
स्थपतिर्भृष्टकारश्चः पूज्यः पटहवादकः॥८५॥

काँच की चूड़ी बेचने वाले, कुम्भकार (मिट्टी के बर्तन बनाने वाले) दर्जी, स्थपति, धान आदि भूजने वाले और ढोल बजाने वाले की पूजा, वैवाहिकादि शुभ अवसरों पर आज भी होती है।

टि०—यह सामाजिक रस्म है जिसकी अदायगी अपरिहार्य है। यह समाज को जोड़ने का दिव्य भारतीय तरीका है।

न कोऽपि वाञ्छति त्यक्तुं स्ववर्गं सुप्रतिष्ठितम्।
समाजे सर्ववर्गाणां सहयोगः समादृतः॥८६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इतने समाजिक बदलाव के बावजूद कोई भी अपने प्रतिष्ठित वर्ग को छोड़ना नहीं चाहता है क्योंकि समाज में सभी वर्गों का सहयोग और सम्मान सभी को चाहिए।

भारतसर्वकारेण स्थानमारक्षितं कृतम्।
उन्नत्यै सर्वक्षेत्रेषु वर्गाय पीडिताय च।।८७।।

फिर भी आर्थिक और शौक्षिक रूप से पिछड़े वर्ग की सर्वाधिक उन्नति के लिए सरकार ने आरक्षण लागू किया है। ताकि उन्हें वह स्थान अवश्य मिल सके जिससे ये वंचित रह गए हैं।

आरक्षणं वरं तद्धि दीयते निर्धनाय यत्।
लाभान्वितो नरा भूत्वा प्रापयन्तु हि गौरवम्।।८८।।

आरक्षण का लाभ निर्धन वर्ग को दिया जाना चाहिए ताकि विपन्न जन उससे लाभान्वित होकर गौरव को प्राप्त कर सकें।

परब्रह्मणः प्रकृतिः पालनीया,
समाजस्य शान्तिः सदा वर्धनीया।
धरित्री धरेयं सुकाम्या सुरम्या
प्रशस्या सुपूज्या नरै रक्षणीया।।८९।।

प्रभु की इस उत्तम सृष्टि की रक्षा की जानी चाहिए और समाज में शान्ति बढ़ानी चाहिए। सब के लिए सब को धारण करने वाली यह धरा अत्यंत सुन्दर है। यह हमारी सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली है। यह प्रशस्य है, पूज्य है। हम मानवों को इसकी रक्षा अवश्य करनी चाहिए।

।। इति श्रीजगन्नाथशुक्लसुतश्रीमदशोककुमारशुक्लविरचितः
सामाजिकपर्यावरणनामकः सप्तमोऽध्यायः।।

।। इति शम्।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

।।अथाष्टमोऽध्याय:।।

सामाजिकप्रदूषणम्

प्रदूषणप्रभावस्तु समाजे संस्कृतौ प्रभो।

राजनीतौ गृहे क्षेत्रे राष्ट्रे राज्ये च दृश्यते।।१।।

हे प्रभो! प्रदूषण के दुष्प्रभाव को तो आज के हर क्षेत्र में देखा जा सकता है। समाज, संस्कृति राजनीति सभी प्रदूषण से प्रभावित हैं। गृह में कार्य-क्षेत्र में राष्ट्र में और राज्य में सर्वत्र इसे देखा जा सकता है।

माधुर्यं प्रसरेत् सदा सुखकरं शक्ते:करं शंकरम्।

नैको स्यात् खलु मानवो जगति य: संपीडित: स्त्रीनरै:।

वाणी स्याद्मधुरा ललामललिता लावण्यदो वारिदो

वायुर्वारि धरा सुकर्मणि रता: पूता नरा दूषणा:।।२।।

समाज में ऐसी मधुरता फैले जिससे सर्वत्र सुख, शान्ति और शक्ति का संचार सर्वत्र हो। स्त्री पुरुष के सामंजस्य पर टिका हुआ समाज स्त्री पुरुष से पीडित न हो। वाणी सबकी मधुर हो। ललना सौन्दर्य से पूरित हो। वृष्टि हरियाली देने वाली हो। वायु, वारि और धरा सभी तत्त्व सुन्दर कर्म में रत रहें ताकि मानव समुदाय प्रदूषण मुक्त होकर सुन्दर पर्यावरण में निवास कर सकें।

समाजो विकृतो जातो राजनीति: प्रदूषिता।

स्वार्थे समाहितं सर्वं खण्डितं जनजीवनम्।।३।।

आज समाज प्रदूषित हो चुका है। राजनीति प्रदूषित हो चुकी है। सब कुछ स्वार्थ सिद्धि पर निर्भर करने लगा है, परिणामत: जन-जीवन विखण्डित हो गया है।

मातापित्रोश्च दम्पत्यो: भ्रात्रोश्चाचार्यशिष्ययो:।

कर्मणा मनसा वाचा धर्म: प्रलयतां गत:।।४।।

माता, मातृत्व धर्म का निर्वाह नहीं कर पा रही है। पिता पितृधर्म का निर्वाह नहीं कर पा रहा है। पति, पतिधर्म का निर्वाह नहीं कर पा रहा है और पत्नी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पत्नीधर्म का निर्वाह नहीं कर पा रही है। भ्राता, भ्रातृधर्म का निर्वाह नहीं कर पा रहा है और भगिनी, भगिनी धर्म का निर्वाह नहीं कर पा रही है। आचार्य (गुरु, अध्यापक) आचार्य धर्म का निर्वाह नहीं कर रहे हैं और शिष्य शिष्यधर्म का निर्वाह नहीं कर रहे हैं। मन कर्म एवं वचन से धर्म (कर्म) मलिन होता जा रहा है।

प्रशासनव्यवस्थायां वित्तव्यापारकर्मणि।
शासके शासिते चैव न्यायेऽन्यायः पुनः पुनः॥५॥

प्रशासनिक व्यवस्था में, सरकारी काम में, धन के काम में, व्यापार के काम में प्रदूषण का बोलबाला है। शासक वर्ग और शासित वर्ग में न्याय के स्थान पर अन्याय हो रहा है।

चार्वाकस्य च सिद्धान्तो जीवनेंऽगीकृतो नरैः।
प्रवृत्तिर्भोगवादस्य संजाता क्लैव्यकारणम्॥६॥

आज मानव ने चार्वाक सिद्धान्त को अपना लिया है। जिसमें भोग को भोगने पर बल दिया गया है। यह भोगवाद की प्रवृत्ति ही हमारे दुखों का मूल कारण है।

स्वकामानां प्रपूर्त्यर्थं धनाय स्वसुखाय च।
राष्ट्रहितं परित्यज्य स्वहितं साधयन्त्विमे॥७॥

आज का स्वार्थी मानव अपनी कामनाओं की पूर्ति तथा धन की प्राप्ति हेतु राष्ट्रहित को छोड़कर किसी भी प्रकार से अपना हित सिद्ध करने में लगा है।

संयुक्तपरिवारस्य व्यवस्था सुव्यवस्थिता।
खण्डिता जीवनं सर्वं सञ्जातमसुरक्षितम्॥८॥

भारतीय समाज संयुक्त परिवार की व्यवस्था पर टिका हुआ समाज है। आज संयुक्त परिवार ही टूट रहा है। क्योंकि संयुक्त परिवार की पारिवारिक व्यवस्था अव्यवस्थित हो रही है। इसलिए वह टूटा हुआ परिवार अपने आप को समाज से जोड़ नहीं पर रहा है और स्वयं को असुरक्षित मान रहा है।

एकलपरिवारस्य प्रथा प्रचलिता पृथक्।
न कोऽपि वाञ्छति स्थातुं परिवारेषु शिक्षितः॥९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आज समाज में निजी जीवन निर्विरोध जीने के लिए एकल परिवार की प्रथा चल पड़ी है। शिक्षित परिवार अपने माता-पिता, भाई-बहन के साथ रहने में घुटन महसूस कर रहा है। इसलिए वह अलग रहना पसंद करता है।

सुशिक्षितो जनो जातः सुसमाजे यथा यथा।

कलहेर्ष्याविरोधादौ वृद्धिः सिद्धिस्तथा तथा।।१०।।

समाज जैसे-जैसे शिक्षित होता जा रहा है लड़ाई-झगड़े, ईर्ष्या-द्वेष, एक-दूसरे से विरोध आदि समाजिक प्रदूषण भी वैसे-वैसे बढ़ते जा रहे हैं।

ज्येष्ठः श्रेष्ठोऽहमेवास्मि मम मतिः सर्वोत्तमा।

अनुजाग्रप्रभेदोऽपि नष्टो नष्टा च संस्कृतिः।।११।।

मैं ही बड़ा हूँ, मैं ही श्रेष्ठ हूँ, मेरी बुद्धि ही सबसे बड़ी है, यह प्रत्येक के मन में है, इसलिए छोटे-बड़े का भेद समाप्त होता जा रहा है और इससे हमारी समेकित संस्कृति प्रदूषित हो रही है।

भारतीये समाजे च पुरुषः कृषिकर्मणि।

स्त्री रता गृहकार्येषु प्रीतिभावेन भाविता।।१२।।

प्राचीन भारतीय समाज में पुरुष घर से बाहर का कार्य करते थे और स्त्री घर का कार्य करती थी। स्त्री एवं पुरुष में समन्वय था सामंजस्य था इसलिए प्यार भी था। पति-पत्नी आजीवन जीवन-साथी बन कर रहते थे।

टि०—आज पति-पत्नी साथी नहीं एक दूसरे की जरुरत बन कर रह रहे हैं। इसलिए अपनापन, विश्वास और प्यार को खो रहे हैं और टूट रहे हैं।

विच्छेदस्य विवाहस्य नामापि नाश्रृणोज्जनः।

सुसभ्येऽस्मिन् समाजे यः दृश्यते शिक्षिते यथा।।१३।।

पति-पत्नी में विवाह-विच्छेद! यह शब्द सुनने को भी नहीं मिलता था। आज इस शिक्षित, सुसभ्य कहे जाने वाले समाज में तो इस बात पर ही आश्चर्य प्रकट किया जाने लगा है कि पहले पति और पत्नी एक साथ सम्पूर्ण जीवन बिता कैसे देते थे।

पाणिग्रहणसंस्कारो रात्रौ विधिविधानतः।

सम्पद्यते प्रभाते च विच्छेदो दम्पतिषु च।।१४।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आज आलम यह है कि रात्रि में (लौकिक एवं वैदिक रीति से या सामाजिक रीति से या न्यायालय की रीति से) विधिपूर्वक विवाह होता है और प्रातः होते-होते विवाह-विच्छेद भी हो जाता है।

उभयोर्जीवनं धन्यमधन्यं जायते तदा।

पातिव्रतस्य नाशेन पत्नीव्रतोऽपि नश्यति।।१५।।

दोनों का खुशहाल, भरापूरा जीवन नरक तब और बन जाता है जब दोनों अपने-अपने धर्म को तोड़कर अधर्म पर उतर आते हैं।

प्रदग्धे सत्युभयोर्हि मातुः पितुश्च भूमिका।

पक्षपालेन पूर्णा सा भवतींधनवर्धिका।।१६।।

प्रतिशोध की आग में जब पति और पत्नी जलने लगते हैं उस समय पक्षपातपूर्ण उनके माता-पिता की भूमिका आग में घी का काम करती है।

सर्वविधां व्यवस्थां हि कृत्वा दर्शनकांक्षिणः।

आशंकन्ते समारोहे प्रियाणां समुपस्थितम्।।१७।।

सभी प्रकार की समुचित व्यवस्था करके भी दर्शनाभिलाषी (आयोजक) समारोह में प्रियजनों की उपस्थिति के प्रति आशंकित रहते हैं।

नोत्सवो दाहसंस्कारः परिजनैः प्रपूरितः।

नर्तनं क्रन्दनं सर्वं क्रियते स्वयमेव हि।।१८।।

प्रियजनों की उपस्थिति के अभाव में मांगलिक मुर्हूत हो या मृत्यु-मुर्हूत नर्तन क्रन्दन आदि लोकिक कृत्य मानव को स्वयं ही करने पड़ रहे हैं।

माता पुत्रं मृतं क्रोडे नीत्वा रोदिति खिद्यते।

पत्नी मृतं पतिं नीत्वा करोति सकलां क्रियाम्।।१९।।

व्यक्तियों के समूह से व्यक्तियों के हित में बना हुआ आज का समाज इतनां प्रदूषित हो चुका है कि सभी अलग-थलग पड़ गए हैं। माता मृत पुत्र को गोद में लेकर अकेली ही रो रही है और खेद प्रकट कर ही है। तो पत्नी मृत पति को लेकर मृत्युपरांत किये जाने वाले सकल कृत्य एकाकी स्वयं कर रही है। सभी विवश हैं।

स्वार्थे रते समाजे भोः श्मशानं हितसाधकम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न स्वार्थं वाञ्छति त्यक्तुं कर्तुं नरोऽपरक्रियाम्।।२०।।

स्वार्थ सिद्धि में रत समाज में श्मशान घाट भी लाभ का सौदा हो गया है। कोई भी व्यक्ति अपना काम छोड़कर दूसरे का साथ देना नहीं चाहता। श्मशान घाट पर अरथी का साथ देने वाला अवसर पाते ही अर्थ की बात में मशगूल हो जाना बेहतर समझता है।

सकलेन समग्रेण परिवारेण संयुतः।
कविरवाप्तवान्कष्टं जाताऽपर्णा यदा सुता।।२१।।

भरे-पूरे परिवार से युक्त होने पर भी कवि को महान कष्ट तब हुआ जब पुत्री अपर्णा पैदा हुई।

सर्वंसहा विभा भार्या सहते स्म कष्टं स्वयम्।
न काऽपि स्त्री तदासीत् या कृत्यं कर्तुं सहेत तत्।।२२।।

धैर्य की प्रतिमूर्ति सहनशीला भार्या विभा ने सारे कष्टों को स्वयं ही सहा परन्तु कोई भी सगी स्त्री स्त्रीकृत्य करने के लिए नहीं आई।

माता पिता स्वसा भ्राता भार्या पितामहो बुधाः।
श्वसुरः श्वश्र्वा बन्धुर्धर्मेण हीनतां गताः।।२३।।

सुबुद्ध माता-पिता, भाई बहन, पति-पत्नी, दादा-दादी, सास-ससुर आदि बन्धु बान्धव आज धर्म विहीन हो रहे हैं।

प्रयोजनानुसारं हि प्रातिवेशिकसुक्रिया।
साध्यते दुष्क्रिया चैव कार्यसिद्धौ पलायनम्।।२४।।

पड़ोसी भी प्रयोजन के अनुसार ही अच्छा या बुरा कार्य करता है। कार्य की सिद्धि के बाद वह भी मुँह मोड़ लेता है।

प्रगतिं वीक्ष्य नित्यं सः खिद्यते प्रातिवेशिकः।
परिजनोऽपि चिन्तायां ग्रस्तस्त्रस्तः सुखी न सः।।२५।।

पड़ोसी पड़ोसी की उन्नति से दुःखी है। स्वजन भी उन्नति को देखकर चिन्तित, व भयभीत है। कोई भी दूसरे की उन्नति से खुश नहीं है।

खिद्यते न स्वदुःखेन यथा दृष्ट्वापरं सुखम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भिद्यते मोदते चैव चिन्तायां गतजीवनम्।।२६।।

आज का मानव अपने दुःख से दुःखी नहीं है बल्कि दूसरों के सुख को देखकर दुःखी है। इस सुख और दुःख की चिन्ता में उसका जीवन समाप्त होता जा रहा है।

ईर्ष्याद्वेषेण संयुक्तो नरो दुःखेन दुःखितः।
एकाकी विकृतिं प्राप्तः परिवारः प्रदूषितः।।२७।।

मनुष्य का मन ईर्ष्या-द्वेष से भर गया है। क्योंकि सम्पूर्ण समाज में यह दुर्भाव संक्रमित कर गया है। परिवार और समाज दोनों ही प्रदूषित हो गए हैं। प्रत्येक प्राणी अकेला हो गया है, असहाय हो गया है।

सम्भ्रान्तपरिवारस्य स्थितिः संदृश्यते तथा।
अशनं व्यसनं वासः मैत्री हासः पृथक् पृथक्।।२८।।

संभ्रान्त परिवार की तो स्थिति ही बिल्कुल अलग दिखती है। यहाँ खान-पान, कार्य-व्यापार, रहन-सहन, दोस्ती, हँसी-मजाक, मनोरंजन प्रत्येक सदस्य का अलग-अलग तरीके से हो रहा है।

सम्भ्रान्ते परिवारे या भावना संभृता नृषु।
स्वतन्त्रास्तत्र सर्वे स्युः समागता हि मध्यमे।।२९।।

संभ्रान्त परिवार के सदस्यों में स्वतंत्र रूप से आहार-विहार की जो भावना भर गई है वही संक्रमित होकर मध्यम वर्गीय परिवार में भी आ गई है।

प्रीत्याभावेन ते सर्वे धनिनोऽपि प्रदुःखिताः।
धनं प्रीतिहरं जातं वर्धकं भौतिकं सुखम्।।३०।।

धन के मद में चूर, भौतिक सुख को भी धन के बल पर भोगने वाला धनिक वर्ग वास्तव में दुःखी है। वह अकेला है। एक दम अकेला। इनका धन प्रीति को हरने वाला बन गया है जो भौतिक सुख को देकर भी उसे अभावग्रस्त रखता है।

नाद्य परस्परं प्रीतिः न च कोऽप्यपराश्रितः।
सर्वसाधनसम्पन्नो विपन्नो जायते नरः।।३१।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आज आपस में प्यार नहीं है। कोई किसी पर आश्रित नहीं है इसलिए सुख या दुःख दोनों ही अकेला भोगने के लिए नर विवश है। यही कारण है कि सर्वसाधन सम्पन्न भी आज विपन्न (दरिद्र) की स्थिति में हैं।

संस्कारेण विहीनश्च दुःखी जातोऽद्य मानवः।

कुसंस्कारान्विता बाला भ्रष्टा नष्टाश्च रोगिणः॥३२॥

आज संस्कार विहीन मानव दुःखी है। बुरे संस्कार को पाकर बालक अपना जीवन नष्ट-भ्रष्ट कर रहे हैं और विभिन्न प्रकार के रोगों के शिकार हो रहे हैं।

कुपथगामिनो बालाः कदाचारसमन्विताः।

जात्याधर्मेण ते भ्रष्टाः पितरौ दुःखितौ सदा॥३३॥

आज का बाल समाज कुपथगामी हो गया है। उसका सदाचार कदाचार में परिवर्तित हो गया है। जाति और धर्म दोनों से ही बालक गिर गए हैं। इस स्थिति को देखकर माता-पिता दुःखी हैं।

जनसंख्या यथा वृद्धिमाप्नोति पुरुषास्तथा।

समाजो विकृतो जातः दूषितं जनजीवनम्॥३४॥

जैसे जैसे जनसंख्या में वृद्धि होती जा रही है वैसे वैसे व्यक्ति और समाज विकृत होते जा रहे हैं। और जन जीवन दूषित होता जा रहा है।

परिवर्तिनि संसारे प्राप्यते परिवर्तनम्।

जातौ वर्णे स्तरे धर्मे सम्प्रदायार्चनाविधौ॥३५॥

इस परिवर्तनशील संसार में सर्वत्र परिवर्तन हो रहा है। जाति, वर्ण, जीवन, स्तर, धर्म, सम्प्रदाय, यहाँ तक कि पूजा-पद्धति में भी परिवर्तन दिखाई दे रहा है।

यथा यथा जना जाता जनसंख्या विवर्धिता।

नानाविधाः समस्याश्च संजाताः सकले गृहे॥३६॥

आज जैसे जैसे जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। वैसे वैसे अनेक प्रकार की समस्याएं भी सभी घरों में उत्पन्न हो रही हैं।

स्वबाल्याद्बालका बालाश्चपला दुर्गुणैर्युताः।

स्वच्छन्दचारिणो जाता गृहं दुःखेन दुःखितम्॥३७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बचपन से ही चंचल बालक बालिकाएँ दुर्गुणों के शिकार हो रहे हैं। सारा घर इनसे दुःखी है। यह सब स्वच्छन्दता का कुपरिणाम है। इससे माता-पिता अत्यन्त दुःखी हैं क्योंकि उनकी सन्तान उनके वश में नहीं है। वह तो स्वच्छन्दचारी हो चुकी है, बंधन में कैसे रहे ?

समाजस्य प्रतिष्ठे द्वे जनसंख्यानियन्त्रिके।
वरमेको गुणी पुत्रः पुत्री चैका गुणान्विता।।३८।।

आज समाज में एक गुणवान पुत्र और एक गुणवती पुत्री का होना प्रतिष्ठा का विषय बन गया है। इससे जनसंख्या दर भी नियन्त्रण में रहती है।

पुत्रो विनयसम्पन्नो वश्यः कुलविवर्धकः।
वश्या शीला सलज्जा तु पुत्र्येका कुलभूषिका।।३९।।

पुत्र का विनम्र व आज्ञाकारी होना तथा पुत्री का भी आज्ञाकारी सुशीला व लज्जाशील होना कुलीन परिवार का लक्षण है।

विनम्रपरिवारस्य प्राणिनः प्रियवादिनः।
भवन्ति संस्कृताः सर्वे सदाचारसमन्विताः।।४०।।

विनम्र परिवार होने पर उसके सदस्य भी प्रायः विनम्र होते हैं। सुसंस्कृत और सदाचारी परिवार की संतान भी सुसंस्कृत और सदाचारी होती है। इसलिए स्वयं को विनम्र, सुसंस्कृत और सदाचारी बनाओ।

निर्धनपरिवारस्य विपरीता स्थितिः सदा।
अशनं व्यसनं वासः प्रीतिर्हासः परस्परम्।।४१।।

निर्धन परिवार की स्थिति सम्भ्रान्त से बिल्कुल भिन्न है। इनका भोजन, भजन, रहन-सहन सुख दुःख, हास-परिहास साथ-साथ होता है। इसलिए इनमें प्यार व एकता होती है।

मध्यमपरिवारस्य चिन्तनीया स्थितिः सदा।
निर्धनैर्मेलनं तेषां नोच्चैः सह समागमः।।४२।।

मध्यम परिवार की स्थिति सर्वाधिक चिंतनीय है क्योंकि निर्धन वर्ग के साथ उनका मेल-जोल हो नहीं पाता और उच्च वर्ग इनके साथ मेल-जोल करना नहीं चाहता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संघर्षणं प्रतिस्पर्द्धा प्रदूषयति मध्यमम्।

मर्यादा संस्कृतिः सर्वा रक्षणीया प्रयत्नतः।।४३।।

आज मध्यम वर्ग सर्वाधिक प्रदूषित व परेशान है। मध्यम परिवार के प्रदूषित होने का कारण है प्रतिस्पृद्धात्मक तरीके से किसी भी प्रकार से आगे बढ़ने की ललक। सामाजिक-संस्कृति एवं मर्यादा को बचाये रखने का दायित्व भी मध्यम वर्ग की परेशानी का एक प्रमुख कारण है।

टि०:— आज मध्यम वर्ग अधिक पिस रहा है, और समाज में सर्वाधिक घुटन महसूस कर रहा है। किसे छोड़े और किसे अपनाये यह उसे रोगाक्रान्त करता जा रहा है।

धनाय जीवनं मूल्यमधन्यं क्रियते नरैः।

विक्रीयते च नार्यत्र पुरुषः क्रीयते सदा।।४४।।

आज धन पर आधारित जीवन शैली को चलाने के लिए मानव, जीवन-मूल्य को समाप्त कर रहे हैं। पुरुष के लिए स्त्री बेची जा रही है तो स्त्री के लिए पुरुष खरीदा जा रहा है।

धनेन वर्धेत निष्ठा धनेन सुकरा क्रिया।

धनेन वर्धते बुद्धिर्धनेन धार्यते धनम्।।४५।।

आज धन का इतना महत्त्व हो गया है कि धन निष्ठा को बढ़ाने वाला बन गया है। धन के बल से मुश्किल से मुश्किल काम आसान हो जाता है। धन से बुद्धि बढ़ जाती है। धन से ही धन भी कमाया जाता है।

अध्ययने धनं मूलमध्ययनात् परं धनम्।

धनमध्ययने मध्ये धनेन धार्यते धरा।।४६।।

अध्ययन के लिए धन की महती आवश्यकता होती है। अध्ययन के क्रम में भी धन की आवश्यकता होती है और अध्ययन समाप्त कर लेने के बाद भी धन ही रोजगार दिलाने में सहायक होता है। आज धरती भी उसी की है जिसके पास धन है।

धनं विना ध्रुवं मृत्युर्जीवनं न धनं विना।

अतोऽहं प्रार्थये सर्वं धनमर्जय मा शुचः।।४७।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धन के बिना न जीवन सम्भव है और न ही ध्रुव (निश्चित रूप से होने वाली) मृत्यु ही संभव हैं। इसलिए मेरा निवेदन है कि आप शोक को छोड़कर धन कमायें।

राजा मंत्री प्रजा नेता प्रशासनाधिकारिणः।
कुर्वन्ति ते धनेनैव क्रियां सर्वार्थसाधिकाम्।।४८।।

राजा-प्रजा, नेता, मंत्री, प्रशासनिक अधिकारी सभी को धन की महती आवश्यकता है वे धन से ही सार्वजनिक कार्य कर पाते हैं और अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण कर पाते हैं।

स्वदेशे प्राप्यते नित्यं धनाय स्वसुखाय च।
शिक्षामधीत्य छात्राणां प्रतिभायाः पलायनम्।।४९।।

अपने देश में यह देखा जा रहा है कि देश के खर्चे पर शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत प्रतिभा सम्पन्न छात्र, धन और भौतिक सुख के लिए स्वदेश को त्याग कर विदेश पलायन कर रहे हैं या फिर अपनी प्रतिभा का उपयोग विदेश के हित में कर रहे हैं।

धनाधिक्यं वरं नैव धनाभावो न तद्वरम्।
धनात्मकं जगज्जातं धनाभावे न जीवनम्।।५०।।

धनाधिक्य होना या धनाभाव होना दोनों ही ठीक नहीं है। परन्तु धनात्मक जगत में धन नहीं तो जीवन नहीं।

चौर्योत्कोचग्रहे लीनो भ्रष्टो नष्टः कुकृत्यकः।
धनेन मुच्यते दोषाज्जायते जननायकः।।५१।।

चोर, रिश्वतखोर चरित्र से नष्ट, कर्म से भ्रष्ट, निरंतर दुष्कर्म करने वाला व्यक्ति भी धन बल से स्वयं की निर्दोष, स्वच्छछवि वाला सिद्ध करके जननायक बन जाता है।

निर्धनो हि धनाऽभावे न्यायालयेन दण्डितः।
पीडितो दुःखितो जातः प्रभावं पश्य जीवने।।५२।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे मनुष्य, धन के प्रभाव को देखो। इसके अभाव में बेचारा गरीब दण्डित हो जाता है, (क्योंकि महँगा वकिल कर नहीं पाता)। पीड़ित और दु:खी जीवन जीता है (और धनवान न्यायालय से बरी हो जाता है)

विद्धं हंसमृषिर्दृष्ट्वा शोकं श्लोकेन लब्धवान्।

नृहिंसा पशुहिंसाद्य धनाय जायते भुवि॥५३॥

हंस युगल में से घायल हंस को ऋषि वाल्मीकि ने देखा और उनके हृदय में उत्पन्न करुणा श्लोक के रूप में मुख से निकली। पर आज तो धन के लिए मनुष्य द्वारा पशु आदि का वध करना आम बात हो गई है।

मांसविक्रयिणो मार्गे दृश्यन्ते मदिरालयाः।

मत्ता नराश्च नार्यश्च समाजे दूषिते मही॥५४॥

मार्ग में स्थान-स्थान पर मदिरालय और मांस विक्रेता तथा मांस और मदिरा का पान कर के मस्त नर-नारी देखे जा सकते हैं।

टि०—यह है प्रदूषित समाज का एक रूप) इससें पृथ्वी और समाज दोनों ही प्रदूषित हो रहे हैं। नग्नात व बर्बरता बढ़ रही हैं।

किशोर्यश्च किशोराश्च सभ्यतया प्रभाविताः।

मिश्रितासंस्कृतिर्विश्वे संभोगे निरता जनाः॥५५॥

किशोर और किशोरियां वैश्विक सभ्यता से प्रभावित हो रहे हैं। सर्वत्र भोगवाद पर आधारित मिश्रित सभ्यता एवं संस्कृति का बोलबाला देखने को मिल रहा है।

दूरयन्त्रेण दूरस्थाः कुर्वन्ति रञ्जनं हृदः।

युवत्यश्च युवानश्च जाताः स्वच्छन्दचारिणः॥५६॥

आज दूरयन्त्र के द्वारा दूर से ही युवा युवती मनोरंजन कर रहे हैं। सभी स्वच्छन्द हो गये हैं।

समाजो दूषितो जातो विषमतातिवर्धिता।

नराणां पतनं नूनं नारीणामधमा गतिः॥५७॥

समाज प्रदूषित है। समाज में विषमता चरम सीमा पर है। नर का पतन हो रहा है। तो नारी अधमगति को प्रास हो रही है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रचारश्च प्रसारश्च वर्धतेऽनुदिनं रतेः।

विविधमाध्यमेनाद्य प्रोत्साहनं प्रदीयते॥५८॥

विषय वासना प्रशमन हेतु विविध संचार माध्यमों से प्रचार एवं प्रसार किया जा रहा है। इसे प्रोत्साहन मिल रहा है इसलिए यह दिनोंदिन बढ़ भी रहा है।

दूरभाषेण दूरस्था वार्ता कर्तुं समुत्सुकाः।

शक्यन्ते रञ्जनं स्वस्य हृदः प्रेमिकया सह॥५९॥

वार्ता करने के इच्छुक जन दूरभाष के द्वारा किसी भी स्थल से अपनी प्रेमिका से वार्ता करके मन को प्रसन्न कर सकते हैं।

स्वच्छन्दरमणीनां च कामक्रीडा रतिक्रिया।

दृश्यते श्रूयते सम्यक् स्वच्छन्दचारिणो जनाः॥६०॥

सामाजिक बंधन से मुक्त स्वच्छन्द विचरण करने वाली सुन्दरियों की कामक्रीड़ा, एवं रति क्रिया देखी व सुनी जा सकती है। समाज में सभी स्वच्छन्दचारी बन गये हैं।

संस्कृत्यां भारतीयायां कामो गोप्यः सयत्नतः।

स्वयोषिति रतिः कार्या केलिर्भर्त्रा सहैव च॥६१॥

भारतीय संस्कृति के अनुसार काम क्रीडा या रति क्रिया अपनी पत्नी के साथ ही करनी चाहिए। इसकी गोपनीयता की रक्षा प्रयत्नपूर्वक करनी चाहिए।

प्रदर्शनं कुमारीणामंगानां कामवर्धकम्।

दूषयति समाजं च समाजो विकृतिंगतः॥६२॥

कौमार्य से युक्त कुमारियों का अंग-प्रदर्शन करना कामवर्धक कार्य है। यह समाज को विकृत कर रहा है। और इससे सामाजिक प्रदूषण फैल रहा है।

अतिस्वच्छन्दरूपेण क्रियते या रति क्रिया।

पशुवद्या निरानन्दा भवति प्राणघातिका॥६३॥

सारे निमयों एवं मर्दादाओं को तोड़कर स्वच्छन्द रूप से पशुवत् की गई काम-क्रीड़ा या रतिक्रिया मानव को रतिसुख से वंचित करती है। यह आनन्ददायक न होकर प्राणघातक होती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वसनररहितं नृत्यं कूर्दनं कामवर्धकम्।
विकृतं कुरुते पुंसां मनश्चंचलदूषितम्।।६४।।

वस्त्रविहीन होकर उछलना कूदना एवं नृत्य करना कामवर्धक कृत्य है। यह मानव के चंचल मन को प्रदूषित कर समाज को प्रदूषित करता है।

तारुण्यं नश्यति तेषां बाल्यं विक्रियते तथा।
शैशवं शुष्कतां याति जरा भवति दुःखदा।।६५।।

अमर्यादित ढंग से रतिक्रिया करने पर वह तरुण-तरुणी की तरुणाई नष्ट कर देती है। बालक-बालिका का बाल्यपन तथा किशोर-किशोरी का कैशोर्य नष्ट कर देती है। इतना ही नहीं यह काम-क्रीड़ा शिशु के शैशव को तथा बूढ़े के बुढ़ापे को दुःखदायी बना देती है।

बालानां काम केलिर्या दृश्यते क्रियतेऽन्वहम्।
एकान्ते हरितोद्याने न शुभा शुभकारिका।।६६।।

हरे-भरे उद्यान में प्रतिदिन आज कामक्रीड़ा दिखाई देती है, यह समाज के लिए शुभ नहीं है और न ही उस तरुण-तरुणी के लिए शुभकारक है जो यह कृत्य करते हैं।

अरक्षिता रतिक्रीडा भवति क्रियते यदा।
अतिस्वच्छन्दरूपेण रोगाणां जननी च सा।।६७।।

अत्यन्त स्वच्छन्द रूप से की गई रति क्रिया असुरक्षित रतिक्रिया होती है जो मृत्युदायी रोगों की जननी बन जाती है।

रोगप्ररोधशक्तौ च जायते महती क्षतिः।
एड्स तदुच्यते विज्ञैः त्याज्या हेया च सा रतिः।।६८।।

असुरक्षित रतिक्रिया हमारी रोग प्ररोध शक्ति को नष्ट कर हमें महान् क्षति पहुँचाती है। जिसे विशेषज्ञ एड्स रोग कहते हैं। ऐसी रति क्रिया त्याज्य एवं निन्दनीय है।

एड्सरुजा च संग्रस्तैर्युवा च युवती तथा।
रति कर्मणि संसक्तौ भवतो मृत्युगामिनौ।।६९।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एडस् रोग से ग्रस्त युवा-युवती के साथ रतिक्रिया करने पर यह भी उस रोग से ग्रस्त हो जाता है एड्स के कीटाणु उनमें संक्रमित हो जाते हैं। और वह रतिक्रिया मृत्युदायिनी बन जाती है।

युवत्यश्च युवानश्च रत्यां ये प्रत्यहं रताः।
प्रयान्ति प्रत्यहं मृत्युं रक्ष्यो वीर्यः प्रयत्नतः॥७०॥

विपरीत रतिक्रिड़ा में रत रहने वाले युवा-युवती पश्चाताप से पीड़ित होकर प्रतिदिन मृत्यु को प्राप्त करते हैं। इसलिए रज वीर्य की रक्षा सप्रयत्न करनी चाहिए।

एडस् रुजा च संग्रस्ता माता जन्म प्रयच्छति।
शिशोः सूचिकया तत्र रुगियं क्रमते स्वयम्॥७१॥

एड्स रोग से ग्रस्त माता जब शिशु को जन्म देती है तब यह रोग स्वयं शिशु में संक्रमित हो जाता है। एड्स कीटाणु से युक्त सुई को लगाने पर भी व्यक्ति में एड्स रोग के कीटाणु प्रविष्ट कर जाते हैं।

सुरक्षिता रतिक्रीड़ा भवेत् सुनिश्चितं कुरु।
निरोधकः प्रयोक्तव्यो वरं स्वभार्यया रतिः॥७२॥

रति क्रिया करने से पहले यह सुनिश्चित कर लें कि आपकी यह क्रिया सुरक्षित हो रही है। इसके लिए निरोधादि संसाधनों का प्रयोग करना उचित होगा। वैसे तो अपने जीवन साथी के साथ रतिक्रिया करना सर्वथा उपयुक्त एवं स्वास्थ्यवर्धक होता है।

मरणं वीर्यपातेन जानीयुः सर्वमानवाः।
वीर्यस्य रक्षणेनैव सिंहो सिंहः खगः खगः॥७३॥

हे मनुष्य, यह जान लो कि वीर्य का निरन्तर पतन प्राणघातक है। वीर्य की रक्षा करने से ही सिंह शक्तिमान होता है तथा वीर्य की रक्षा न करने से पक्षी अल्पायु होते हैं।

आयुर्मेधा फलं वीर्यं वाञ्छसि प्रियमानव।
यौगिकं कुरु कर्म त्वं चित्तं न दुःखितं कुरु॥७४॥

हे प्रिय मानव, यदि आयु मेधा (बौद्धिक शक्ति) शारीरिक शक्ति एवं कृत कर्म की सफलता चाहते हो तो तुम यौगिक क्रिया करो मन को दुखी मत करो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समयेन विवाहः स्यात् समयेनाध्ययनं वरम्।
समयेन कृतं कार्यं सदैव फलदायकम्।।७५।।

यथा समय अध्ययन समाप्त कर विवाह करना श्रेयस्कर होता है। तदुपरान्त यथा समय सामाजिक कार्य करना सदैव फलदायक होता है।

ऋषिभिर्बहुधा गीतां मुनिभिः समलंकृताम्।
विद्वद्वरैः समानीतां धारय संस्कृतिं नर।।७६।।

हे मननशील विवेकी मानव भारतीय संस्कृति को आधार बनाकर कार्य करो। इसे हमारे ऋषि-मुनियों ने बहुधा गाया है। भारतीय संस्कृति को सजाया है। उन विद्वानों के अथक, अनवरत प्रयास से ही भारतीय संस्कृति आज भी अक्षुण्ण है। इसे प्रदूषित होने से बचाओ।

संस्कृतिर्भारतस्येयं सनातनी सर्वरक्षिका।
धर्मार्थकाममोक्षाणां प्रदात्री विश्वमोहिनी।।७७।।

भारतीय संस्कृति सनातन है। यह शाश्वत संस्कृति है। यह सब की रक्षा करने वाली है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रदान करने वाली है इसलिए विश्वमोहिनी भी है।

त्यागे दमे क्षमायां च सहने वृद्धोपसेवने।
स्वल्पाहारे सदाचारे सत्ये वसति संस्कृतिः।।७८।।

भारतीय संस्कृति त्याग मूला संस्कृति है। चंचल मन को अभ्यास एवं वैराग्य के द्वारा वश में करने वाली संस्कृति है। क्षमापरक एवं सहनशीलता की चरम सीमा को पार करने वाली संस्कृति है। अतिथि को खिलाकर स्वल्पाहार करने वाली संस्कृति है। सदाचारशीला संस्कृति है। सत्य एवं अहिंसा पर आधारित संस्कृति है।

अभिवादनशीलाऽस्ति संस्कृतिर्भारतस्य भोः।
पादस्पर्शिनमस्कारो दूरी करोति दूषणम्।।७९।।

भारतीय संस्कृति अभिवादनशीला संस्कृति है। इसमें चरण स्पर्श करके प्रणाम करने की प्रथा है। यह सामाजिक प्रदूषण को दूर करती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संस्कृतिर्भारतस्येयं प्राचीना सर्वपालिका।
विश्वबन्धुत्वभावेन भाविता सर्वदुःसहा॥८०॥

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है। यह विश्वबन्धुत्व की भावना से भरी हुई संस्कृति है। सबका पालन एवं पोषण करने वाली संस्कृति है। यह परार्थ सभी प्रकार के कष्ट सहन करने वाली संस्कृति है।

किन्तु स्वार्थे वशीभूता भौतिकसाधने रताः।
साधयन्ति क्रियां सर्वां हानिर्भवति तेन किम्॥८१॥

परन्तु आज का स्वार्थी समाज भौतिक साधन में लीन है इसलिए भारतीय संस्कृति को बोझिल समझकर सुविधापरक तात्कालिक सुख देने वाली संस्कृति को अपनाकर अपना कार्य सिद्ध कर रहा है। इससे दूसरों को हानि हो रही है तो होती रहे।

समाजे सर्वसत्वानामुपयोगः प्रदृश्यते।
परस्परं सुसम्मानं यच्छन्तु सुखिनो नराः॥८२॥

समाज में प्रत्येक प्राणी का महत्व है। इसलिए सुख चाहने वाले मनुष्य को सबको सम्मान देना चाहिए।

प्राप्नुयात् प्रकृतिर्भिन्ना मतभेदो भवेत् तथा।
समन्वयात्मिका बुद्धिः संयोजयति मानवान्॥८३॥

भले ही स्वभाव भिन्न हो, आपस में मतभेद भी हो परन्तु समन्वयात्मक जोड़ने वाली बुद्धि मानव को मानव से जोड़ती हैं।

आयुर्मेधां धृतिं कालं धारयित्वा कुरु क्रियाम्।
प्राप्तं स्ववसरं नैव प्राप्स्यसि भूतले पुमन्॥८४॥

आयु, बुद्धि, धैर्य, प्राप्तकाल तथा प्राप्त अवसर को ध्यान में रखकर काम करो। क्योंकि हे पुरुष, प्राप्त अवसर का पुनः प्राप्त होना मुश्किल है।

वैज्ञानिकोन्नतिर्मेधा सुखदा सुफला सदा।
बाधिका नाशिका दुष्टा चाप्रीतेर्जननी न सा॥८५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैज्ञानिक उन्नति एवं हमारी तीक्ष्ण बुद्धि सदा सुखद एवं सुफल फल देने वाली बनें। ये बाधा उत्पन्न करने वाली, सर्वनाश करने वाली कटुता एवं दुष्टता की जननी न बनने पाये।

विकासशीलदेशोऽयं विकासाय व्ययं वरम्।

स्वार्थं सर्वं परित्यज्य राष्ट्रस्य रक्षणं कुरु।।८६।।

भारत एक विकास शील देश है। इसके चहुँ दिश विकास पर ही धन का व्यय करो। सब कुछ त्याग कर भी राष्ट्र की रक्षा करो।

देहल्यां दृश्यते नित्यं खननं मार्गपाटनम्।

अवकरैश्च नालीभिर्नागरा दुःखिताः सदा।।८७।।

दिल्ली जैसे महानगरों में प्रतिदिन कहीं खुदाई तो कहीं खुदे हुए को पाटना दिखाई देता है। इससे तथा नालियों से तथा कूड़े कचरे से नगरवासी हमेशा दुःखी रहते हैं।

टि०— महानगरों में सौन्दर्यीकरण के नाम पर उद्यानों, मार्गों के प्रस्तर बदले जाते दिखाई देते हैं। यदि इस धन का गाँवों में उपयोग होता तो ज्यादा बेहतर होता।

पदाधिकारिणः सर्वे चर्चन्तु चेतसा धिया।

दृश्यते यन्मया नित्यं लिखामि शान्तचेतसा।।८८।।

पदाधिकारीगण मेरे लेख पर सविवेक विचार करें। बिना किसी राग द्वेष के जो मैं देख रहा हूँ, वही लिख रहा हूँ।

परत्वभावना यत्र कार्यं न फलदायकम्।

स्वत्वस्य भावना यत्र कार्यं सुफलदायकम्।।८९।।

अपना समझ कर जिस काम को किया जाता है वह सुफलदायक होता है। और पराया संमझकर जिस काम को किया जाता हैं वह फलदायक नहीं हो पाता है।

प्रत्येकस्य हि कार्यस्य समाप्तिर्निश्चिता भवेत्।

हानेर्लाभस्य दायित्वं वहन्तु कर्मचारिणः।।९०।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रत्येक कार्य की समय सीमा निर्धारित की जानी चाहिए, तथा हानि और लाभ का दायित्व संबंधित कर्मचारी पर होना चाहिए।

कार्यस्य कार्यक्षेत्रस्य समाप्तिर्नोचिता प्रभो।
यापनार्थं च ते कुत्र गच्छेयुः कर्मचारिणः॥९१॥

हे प्रभु कार्य या कार्यक्षेत्र को ही समाप्त कर देना या कर्मचारी को हटा देना उचित नहीं है। क्योंकि जीवनयापन के लिए कर्मचारी कहाँ जायेगा।

फलं प्राप्तं प्रयत्नेन प्रतिस्पर्द्धात्मके पले।
फलस्यैकस्य हेतोर्हि प्राप्यन्ते बहु-भागिनः॥९२॥

आज के इस प्रतिस्पर्द्धात्मक युग में फलदायक काम (नौकरी) बहुत ही कठिनाई से प्राप्त होती है। क्योंकि एक फल को पाने के लिए अनेक प्रतिभागियों का सामना करना पड़ता है।

स्वार्जितेन वित्तेन करोति सकलां क्रियाम्।
वृद्धावस्था न कल्पेत त्यागाय चात्मजन्मनाम्॥९३॥

स्वार्जित धन से ही व्यक्ति पारिवारिक एवं सामाजिक कार्य निष्पादित करता है। वृद्धावस्था में अपनी संतान को छोड़ पाना मुश्किल होता है।

चिकित्सकोऽपि दिग्भ्रान्तः भ्रान्ताश्च शोधकर्मिणः।
घृतं प्राणहरं तैलं कदाचिज्जायते वरम्॥९४॥

आज चिकित्सा का क्षेत्र भी प्रदूषित हो गया है। चिकित्सक एवं शोधकर्मी सभी भ्रमित हैं। वे कभी घी, तेल को प्राणघातक बताते हैं तो कभी प्राणवर्धक।

हरिद्रालेपनं नित्यं वरं चन्दनसेवनम्।
सूर्यस्य दर्शनं पुण्यं तुलसी प्राणदायिका॥९५॥

हल्दी व चन्दन का लेप लगाना तथा सेवन करना उत्तम होता है। प्रतिदिन प्रातः सूर्य के दर्शन करना पुण्यदायक होता है। तुलसी मृत्यु के मुख से प्राणी को बाहर करने की क्षमता रखती है।

न्यायालयेन नित्यं यो जनहिताय निर्णयः।
दीयते छिद्यते नित्यं स्वार्थाय नोचितश्च सः॥९६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्यायालय जनहित में हमेशा ही निर्णय देते हैं लेकिन स्वार्थी तत्त्व उस निर्णय को अपना हित सिद्ध करने के लिए अपने हित में प्रयुक्त करते प्रतीत होते हैं। और आम जनता दु:खी होती रहती है।

अधिकारेण संपन्नो वैराग्येण च संयुत:।
उत्कृष्टश्च नेता स देशधर्मस्य रक्षक:।।९७।।

अधिकार से सम्पन्न विरक्त नेता ही उत्कृष्ट होता है और वही देश और धर्म का रक्षक होता है।

धूमपाननिषेधोऽस्ति बन्धितं दुष्टवाहनम्।
रिक्ते मार्गे स्थले स्थाने मलमूत्रविसर्जनम्।।९८।।

न्यायालय द्वारा सार्वजनिक स्थान पर या वाहन में धूम्रपान करना प्रतिबंधित है, प्रदूषणकारक वाहन एवं यंत्र चलाना प्रतिबंधित है। खाली स्थान पर व मार्ग में मलमूत्र का त्याग करना प्रतिबंधित है।

न कोऽपि वाञ्छति स्वार्थं त्यक्तुमन्यस्य हेतवे।
न कोऽपि वाञ्छति सन्त: स्वभावे परिवर्तनम्।।९९।।

परन्तु जहाँ स्वार्थी तत्त्व दूसरे के लिए अपना हित छोड़ना नहीं चाहता वही सन्त भी परहित में सर्वस्व त्याग देने की अपनी प्रवृत्ति को परिवर्तित करना नहीं चाहता।

न कोऽपि वाञ्छति भोक्तुं पदार्थं हि प्रदूषितम्।
न कोऽपि वाञ्छति त्यक्तुं जिह्वास्वादं च मन्मथम्।।१००।।

शुद्ध पदार्थ का सेवन करने वाला प्रदूषित पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहता। उसी तरह रसना और काम के स्वाद का सेवन करने वाला इन्हें छोड़ना नहीं चाहता।

न कोऽपि वाञ्छति स्थातुं स्ववास्तव्ये प्रदूषिते।
न कोऽपि वाञ्छति स्नातुं जलेऽशुद्धे प्रदूषिते।।१०१।।

कोई भी प्रदूषित स्थान पर नहीं रहना चाहता है, और न ही कोई अशुद्ध प्रदूषित जल में स्नान करना चाहता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न कोऽपि वाञ्छति त्यक्तुं पावनं पवनं विभे।
न कोऽपि वाञ्छति प्राप्तुं जलं पानं प्रदूषितम्।।१०२।।

हे विभे, कोई भी पवित्र शुद्ध वायु का सेवन छोड़ना नहीं चाहता। उसी तरह कोई खाद्य या पेय पदार्थ को प्रदूषित रूप में ग्रहण करना नहीं चाहता।

न कोऽपि वाञ्छति क्रोडं त्यक्तुं मातुश्च शैशवे।
न कोऽपि वाञ्छति त्यक्तुं पितुः श्रीपदसेवनम्।।१०३।।

कोई भी शिशु माँ की गोद से हटना नहीं चाहता और न ही कोई शिशु पिता के चरण सुख का आनन्द छोड़ना चाहता है।

न कोऽपि वाञ्छति श्रोतुं वक्ता वाणीं प्रदूषिताम्।
न कोऽपि वाञ्छति त्यक्तुं प्रीतिं भक्तिं समादरम्।।१०४।।

कटु वाणी बोलने वाला भी कटु प्रदूषित वाणी सुनना नहीं चाहता। उसी तरह प्रेमपूर्ण व्यवहार करने वाला, सबको सम्मान देने का भाव रखने वाला एवं प्रभुभक्त प्रभु भक्ति छोड़ना नहीं चाहता।

न कोऽपि वाञ्छति त्यक्तुं वृत्तिं वित्तं यशो नरः।
न कोऽपि वाञ्छति त्यक्तुं प्राप्तं भोगं पदं सुखम्।।१०५।।

कोई भी अपनी आजीविका को छोड़ना नहीं चाहता। धन का लोभी धन को और मान का लोभी मान को छोड़ना नहीं चाहता। उसी तरह प्राप्त भोग को, प्राप्त पद को और प्राप्त सुख को कोई भी किसी भी प्रकार से छोड़ना नहीं चाहता।

न कोऽपि वाञ्छति ज्ञानी ज्ञाने विघ्नं निरन्तरम्।
न कोऽपि वाञ्छति प्रज्ञः स्मर्तुं परहिते कृतम्।।१०६।।

कोई भी ज्ञानी पुरुष ज्ञान प्राप्ति में अनवरत विघ्न नहीं चाहता और न ही वह किये हुए उपकार को याद रखना चाहता है।

तथा कार्यं विधातव्यं सामाजिकं प्रदूषणम्।
दूरं स्याद् मानवो मुक्तः पर्यावरणपावनम्।।१०७।।

हम सब ऐसा कार्य करें जिससे सामाजिक प्रदूषण समाप्त हो जाये, मानव जाति प्रदूषण से मुक्त हो जाये और पर्यावरण पावन हो जाये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मनुज मे वचनं हृदि धारय
सकल कर्म समाजसुहेतवे।
न खलु केचन कष्टमवाप्नुयान्
मलिनमस्तु वरं न हि जीवनम्॥१०८॥

हे नर, काव्य के वचन को हृदय में धारण करो। तुम्हारा सम्पूर्ण कर्म समाज के हित में हो। ऐसा कर्म न करो जिससे किसी को कष्ट पहुँचे और नर जीवन श्रेष्ठ हो जाये।

॥ इति श्रीजगन्नाथशुक्लसुतश्रीमदशोककुमारशुक्लविरचित:
सामाजिकप्रदूषणनामकोऽष्टमोऽध्याय॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

।। अथ नवमोऽध्यायः।।

समस्यासमाधानम्

पवित्रमथ तीर्थं च जलं वायुश्च सुस्थलम्।
पादपः पुरुषः प्राणी पवित्रा महिला धरा।।१।।

हे प्रभो, तीर्थस्थान, जल, वायु, सुन्दर स्थल प्राणी, पादप, पुरुष एवं स्त्री तथा यह धरा धाम सभी पवित्र रहें।

शान्त्याधिक्यं भवतु भवने चिन्तनं पावनं च
पूतश्चूतोऽच्युततरुवरश्चातकश्चूर्णकश्च।
चांचल्यं चाचकतु चतुरश्चारुचित्तस्य वृत्ते-
श्चाचारो नो जगति चपलः कर्षिका कृष्णमूर्तिः।।२।।

घर घर में शान्ति की अधिकता हो। मानवीय चिन्तन पवित्र हो। मधुर रस से पूर्ण आम्र वृक्ष विद्यमान रहें। हमारी चातक दृष्टि व खाद्यान्न पवित्र हों। चतुर नर चित्त वृत्ति की चंचलता को नियंत्रित रखे। संसार का व्यवहार चपलता पूर्ण न हो। दृश्यमान प्रत्येक मूर्ति कृष्ण की मूर्ति है इसलिए सबमें पूर्ण आकर्षण विद्यमान रहे।

समाधानं विनापूर्णं समस्यायाः प्रलेखनम्।
एतत् सर्वं निधायान्ते प्रस्तौमि पुरतः परम्।।३।।

समाधान पक्ष को सम्यक् उपस्थापित किये बिना समस्या का उपस्थापन काव्य की अपूर्णता द्योतित करता है इसलिए अन्त में प्रदूषण की समस्या का समाधान प्रस्तुत कर रहा हूँ।

प्रकृतितो न दूरं त्वं गच्छ सेवस्व शं फलम्।
प्रकृत्या निर्मितारूर्जाः पदार्थाः प्राणिनः कृते।।४।।

प्रकृति से दूर मत जाओ। प्रकृति में रहो और कल्याण कारक शुभ फल भोगो। प्रकृति द्वारा निर्मित पदार्थ और ऊर्जा प्राणियों के लिए ही हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृत्रिमस्य विनिर्माणं केवलं सुखसाधकम्।
परिणामेऽशुभं सद्यो भौतिकफलदायकम्।।५।।

अपने भौतिक सुख के लिए कृत्रिम वस्तुओं का अपरिमित मात्रा में निर्माण करना उचित नहीं है क्योंकि कृत्रिम पदार्थों का निर्माण परिणाम में शुभ नहीं होता।

तथापि स्वामिनादत्तं श्रद्धया च शुभाशुभम्।
कार्यं करोतुं सम्प्राप्तं लभतां सुखमुत्तमम्।। ६।।

अपने कार्य को ईमानदारी से करना चाहिए चाहे वह शुभ हो अथवा अशुभ। अपना कार्य सुख कारक होता है।

न कदापि स्वकीये त्वं जीवो जीवस्य भोजनम्।
उक्तिमाधृत्य कार्यं हि चित्ते करोतु दूषणम्।।७।।

एक जीव दूसरे जीव का भोजन है यह उक्ति अपने मन में लाकर दूषित कार्य मत करो।

किं कर्म किमकर्मेति दिग्भ्रान्ता ऋषयो वराः।
मनुष्याणां कथा कात्र तथापि सर्जने रताः।।८।।

कर्तव्य कर्म और अकर्तव्य कर्म के निर्धारण में श्रेष्ठ ऋषि मुनि भी जब भ्रमित हो जाते हैं तब आम मनुष्यों का क्या कहना। फिर भी मनुष्य सर्जन में लीन रहें।

हरीतिमा वरा पूज्या प्राणिनां प्राणवर्धिका।
पाल्या पूज्या सदैवासीद्भवतु साम्प्रतं भुवि।।९।।

हरियाली प्रिय, पूज्य और प्राणियों को जीवन देने वाली होती है। इसे अब तक हमारे पूर्वजों ने संरक्षित रखा, अब हम भी इसकी संरक्षा करें।

कुत्रचित् केनचित् कश्चिद् दुःखितः प्रभवेद्भुवि।
न काचिदपि केनापि कयापि पीडिता भवेत्।।१०।।

इस धरा पर कहीं भी कोई भी किसी से भी दुखी न हो। पुरुष स्त्री से या स्त्री पुरुष एक दूसरे से दुखी न हो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वेषां रक्षिका शिक्षा सर्वासां कर्म रक्षकम्।
प्रदूषणं लयं यातु भवेच्छान्तिस्तथा कुरु॥११॥

हमारी शिक्षा सबकी रक्षिका बने। हमारा कर्म सबका रक्षक बने। ऐसा कर्म करें जिससे प्रदूषण समाप्त हो जाए और सर्वत्र शान्ति हो जाए।

पर्यावरणशिक्षाया ज्ञानं दत्त्वा सुनिर्मलम्।
पृथिवीं परिवारं च पावनं जीवनं कुरु॥१२॥

पर्यावरण शिक्षा का निर्मल ज्ञान प्रदान करके पृथिवी, परिवार और जगत् के जीवन को पावन करें।

अभियानं सुशिक्षाणां प्रचलेदुटजे गृहे।
विविधमाध्यमेनाद्य प्रचारो दूषणान्तकः॥१३॥

विविध संचार माध्यमों से पवित्र पर्यावरण शिक्षा का प्रचार अभियान प्रत्येक घर में, यहाँ तक कि झोपड़ी (गरीब बस्ती) में भी ले जाने की आज आवश्यकता है ताकि प्रदूषण समाप्त हो सके।

जानन्त्येव न भोक्तारः प्रदूषणविभीषिकाम्।
प्रदूषणं वरं नैव प्राणिभ्यो मानवाय वा॥१४॥

प्रदूषण जनक वस्तुओं के उपभोक्ता प्रदूषण की भयावहता के विषय में जानते ही नहीं हैं। यह प्रदूषण किसी के लिए भी सही नहीं है, चाहे मानव हो अथवा मानवेतर अन्य प्राणी।

द्रव्यं कृष्णं द्रवः कृष्णः कृष्णा नारी नरो महान्।
कृष्णस्य रचना कृष्णा सर्वं कृष्णमयं जगत्॥१५॥

आज तो द्रव्य प्रदूषित है, प्रवहमान तरल प्रदूषित है, नारी एवं स्वयं को महान् समझने वाला मानव प्रदूषित है। प्रदूषित पदार्थों से रचित रचना प्रदूषित है। इस तरह सम्पूर्ण संसार प्रदूषण मय हो गया है।

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भो विज्ञ चोतिष्ठ जगतः सुधीः।
पर्यावरणरक्षायै प्रचारायोन्मुखो भव॥१६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इसलिए संसार के सुधिजनों से, सजग होने का आह्वान करता हूँ। वे सभी पर्यावरण प्रदूषण सम्बधी प्रचार के लिए उन्मुख हों ताकि पर्यावरण की रक्षा हो सके।

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भोः प्राणिन् प्राणिनामार्तनाशक।

सर्वभक्षी त्वमुत्तिष्ठ पर्यावरणहेतवे॥१७॥

हे मानव! उठो और पर्यावरण को बचाओ। प्राणियों का विघ्न विनाशक बनो। सर्वभक्षी हे मानव, पर्यावरण हित के लिए जागो।

ऋषिभिर्भारतीयैश्च पूर्वमेव प्रकीर्तितम्।

पर्यावरणरक्षार्थं चर चारय मानवम्॥१८॥

भारत के ऋषि मुनियों ने पर्यावरण की रक्षा के लिए पहले ही बहुत कुछ निर्दिष्ट कर दिया है। तुम उनका पालन करो और दूसरों से उनका पालन करवाओ।

निर्धनास्तु कथं तत्र प्रभवेयुर्धनेच्छुकाः।

प्रदूषणं वरं तेषां प्रदूषणेन पालनम्॥१९॥

बेचारे निर्धन जो प्रदूषण पर जीवन यापन करने के लिए मजबूर हैं धनाभाव के कारण भला वे कैसे प्रदूषण को रोक सकते हैं। दीनहीन के लिए तो प्रदूषण ही जीवनाधार है।

प्रदूषिते समाजे यो वसति सादरं सदा।

प्रपूजिते समाजे स खिद्यते भिद्यते सदा॥२०॥

प्रदूषित वातावरण में रहने के आदि हो चुके समाज को अच्छे वातावरण में लाओ। यद्यपि वह यहाँ आरम्भ में दुखी भी होगा।

वर्गेषु चोपवर्गेषु कक्षेषु भवनेषु च।

जातिं धर्मं धनं धृत्वा मा त्वं विभाजितो भव॥२१॥

वर्ग, उपवर्ग, भवन और फिर कमरे में, जाति, धर्म (सिद्धान्त) एवं धन के आधार पर विभाजित मत होओ।

संयुक्तपरिवारस्य भूमिका न हि दूषिता।

प्रशस्या पालिका पूज्या प्रकृतेः परिरक्षिका॥२२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संयुक्त परिवार आज भी दूषित नहीं है। यह प्रशंसनीय पूज्य एवं सबका पालन करने वाला है। यह दूषित नहीं बल्कि प्रकृति की रक्षा करने वाला है।

प्रधानः परिवारस्य परिवारं प्रपालयेत्।

परिवारः समाजेन पालनं सर्वपालकम्।।२३।।

परिवार के मुखिया का कर्तव्य है कि वह अपने पारिवारिक धर्म का निर्वाह करते हुए अपने परिवार का भी पालन करें क्योंकि परिवार और समाज में अटूट सम्बन्ध है। परिवार के पालन में समाज का पालन है।

प्रत्येकः परिवारः स्याद्ज्ञानमानेन पूरितः।

कलहेर्ष्याविरोधादेर्नाम नैव तदा भवेत्।।२४।।

सभी परिवार शिक्षित होकर एक दूसरे का सम्मान करें और सम्मान पावें। तब आपसी कलह, ईर्ष्या, विरोध आदि का नाम भी नहीं रहेगा।

परिवारो यदा साधुः सुखी स्वस्थश्च निर्मलः।

समाजः सुसुखं लब्ध्वा करोति राष्ट्रवर्धनम्।।२५।।

जब परिवार शिक्षित, स्वच्छ और सुखी होगा तब समाज सुखी होगा और वही राष्ट्र तरक्की भी करेगा।

परित्यज्य पुनःस्वीयं परिवारं सुनिर्मलम्।

या सेवा कीदृशी सेवा क्रियते जनहेतवे।।२६।।

अपने सुन्दर परिवार को छोड़कर जनहित में की गई सेवा, सेवा पर्याप्त सेवा नहीं है।

प्रथमं परिवारं स्वं पालय त्वं प्रभुप्रदम्।

माधुर्यं परिवारे स्यात् पर्यावरणकामदम्।।२७।।

प्रभु प्रदत्त परिवार की सबसे पहले सेवा करो। परिवार में मधुरता रहेगी तो अन्यत्र भी मधुरता होगी और पर्यावरण सकल कामनाओं को पूरी करने वाला बनेगा।

विकृते परिवारे यत् प्राप्यते परिवर्तनम्।

नूनं प्रणाशकं चैतत् स्वच्छन्दचारिणो जनाः।।२८।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आज परिवार में विकृति आ गई है और इसकी वजह से सर्वत्र बदलाव दिखाई दे रहा है। यह बदलाव निश्चय ही सर्वनाशक है। इससे तो सभी जन स्वच्छन्द आचरण करने लगे हैं।

न कश्चित् कस्यचिद् भ्राता न काचित् कस्यचित्स्वसा।

न काचित् कस्यचिद्माता न कश्चित् कस्यचित् पिता।।२९।।

आज कोई माता को माता मानने के लिए तैयार नहीं है और न पिता को पिता। न भाई को भाई और न बहन को बहन मानने के लिए तैयार है। सम्मान का भाव घट रहा है।

न कश्चित् कस्यचिच्छिष्यो न कश्चित् कस्यचिद्गुरुः।

विच्छेदः परितो जातो सर्वं स्वार्थेन चालितम्।।३०।।

न शिष्य गुरु को गुरु मानने के लि तैयार है और न ही गुरु शिष्य को शिष्य मानने के लिए तैयार है। सब जगह विघटन हो रहा है। आज समाज स्वार्थसिद्धि के सिद्धान्त पर चल रहा है।

एतत् सर्वं समाधातुं परिवारं सुचालय।

परिवारेऽशनं वासः प्रीतिः सर्वान् सुयोजकः।।३१।।

इन सभी समस्याओं का समाधान है परिवार को सुचारु रूप से चलाना। परिवार में ही खाना, पीना, रहना और प्यार पूर्ण व्यवहार करना हो तो परिवार जुड़ा रहेगा।

पारिवारिकदुःखं वा सुखं वा नरकर्मणा।

दैवेन दीयते नित्यं दैवाधीनं जगन्मही।।३२।।

पारिवारिक सुख एवं दुःख मानव के कर्मों का फल है। यह विधाता की देन है इसलिए इसे स्वीकार करें। पृथ्वी और इस पर बसने वाला संसार विधाता द्वारा चालित हैं।

विभाजनं वरं नैव प्रदूषणस्य कारकम्।

पृथिव्या अन्तरिक्षस्य राज्यस्य मनसो नर।।३३।।

हे नर, प्रदूषण को पैदा करने वाला विभाजन कदापि उचित नहीं है। चाहे यह विभाजन मन का हो, धरती का या फिर अन्तरिक्ष का।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मित्रतायां विभेदोऽपि वरं स्वाभाविकी क्रिया।
दुर्लभां पावनीं मैत्रीं पालय रक्षणं वरम्।।३४।।

मित्रता में मतान्तर का होना स्वाभाविक है। फिर भी दुर्लभ पावन मैत्री को बढ़ाओ। इसकी रक्षा उत्तम है।

रक्षणं मित्रतायास्तु कर्तव्यं प्रीतिदायकम्।
विच्छेदो न वरो मैत्र्यां दुःखमायाति याति च।।३५।।

प्रीति प्रदान करने वाली मित्रता की रक्षा करो । सुख और दुख तो आते जाते रहते हैं। मैत्री को मत तोड़ो।

दैवेन प्राप्यते मित्रं भार्या दैवेन सुप्रिया।
दैवेन प्राप्यते वित्तं वशगा सन्ततिः सुखम्।।३६।।

सौभाग्य से श्रेष्ठ मित्र मिलता है, सौभाग्य से ही प्रिय पत्नी मिलती है। सौभाग्य से धन मिलता है और सौभाग्य से ही आज्ञाकारी सन्तान और सुख मिलते हैं।

दैवेन प्राप्यतेऽभीष्टं दैवेन प्रातिवेशिकः।
धनं धान्यं गृहं दारा दुःखं दैवेन लभ्यते।।३७।।

सौभाग्य से ही मनोकामना की पूर्ति होती है। सौभाग्य से ही अच्छा पड़ोसी मिलता है। सौभाग्य से ही धन धान्य, अच्छा मकान और पत्नी मिलती है। दुख भी भाग्य से मिलता है।

संयोगः विप्रयोगश्च जीवनं मरणं प्रभो।
हानिर्लाभश्च संयोगो विरक्तिः तरुणीसुखम्।।३८।।

प्रभु की कृपा से ही पति-पत्नी का मिलन और विच्छेद होता है। स्त्री-सुख, संयोग अथवा वियोग भाग्य से होता है। इसी तरह जीवन में लाभ और हानि तथा जीवन और मृत्यु प्रभु कृपा से होती है।

नेतृत्वं विधिना मातुः पितुः सुखं पराभवः।
सन्ततेः सुसुखं शौर्यं पदं प्रीतिः समादरः।।३९।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नेतृत्व सुख, माता पिता का सुख, सन्तान का सुख, सम्मान और अपमान, पराक्रम, पद-प्रतिष्ठा और प्यार सभी विधाता की देन हैं।

दैवाधीनं परब्रह्म गृह्णाति रूपमानुषम्।
नरलीलां प्रकुर्वन् सो हृष्यति खिद्यते स्वयम्।।४०।।

भगवान भी भाग्य के अधीन होकर मनुष्य योनि को धारण कर नर लीला करते हैं। वे स्वयं भी सुख में सुखी और दुःख में दुःखी होते हैं।

तथापि श्रद्धया भक्त्या श्रममाचर प्रत्यहम्।
देवोऽपि श्रमिकाधीनः श्रमेण जयति श्रमी ।।४१।।

फिर भी सच्ची श्रद्धा एवं लगन से परिश्रम करो और जीवन में उन्नति करो। परिश्रमी तो भाग्य देवता को भी अपने अधीन क़र लेता है। उद्यमी व्यक्ति परिश्रम के बल पर विजयी होता है।

श्रमेण कृषकस्तुष्टः प्राणिनां प्रीतिभोजकः।।
श्रमेण कर्मणा वित्तं विद्यायाः परिवर्धनम्।।४२।।

सर्वत्र परिश्रम करने वाला किसान खुशहाल होता है और वह अन्य जीवों के लिए भोजन तैयार करता है। परिश्रम पूर्वक कर्म करके धन कमाया जा सकता है और परिश्रम से ही ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है।

अतस्त्वं कर्म कृत्वैव लभस्व गतिमुत्तमाम्।
कालिदासः कविर्बाणः श्रमेण सर्ववन्दिताः।।४३।।

महाकवि कालिदास एवं महाकवि बाण आदि ने परिश्रम करके ऐसी कृति तैयार कर दी कि विश्व उन्हें पूजता है। इसलिए तुम भी पूरी निष्ठा से कर्म करो और उत्तम गति को प्राप्त करो।

गुरवः पितरो देवा सत्कर्तव्याश्च सर्वदा।
अग्रजैरनुजाः स्निह्याः पुत्र्यः पुत्रा वधूप्रियाः।।४४।।

माता-पिता, गुरु एवं अपने से बड़ों का सर्वदा सम्मान करना चाहिए। बड़ों के द्वारा अपने से छोटे को, पुत्र पुत्रियों को और प्रिय पुत्रवधू को पवित्र स्नेह दिया जाना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुद्धैर्भावैश्च ते सर्वे प्रयच्छन्ति शुभं फलम्।
प्रीत्या परवशं यान्ति परकीया परे वशाः॥४५॥

यदि इनके प्रति शुद्ध भाव रखा जाए तो ये शुभ फल देते हैं। प्यार पूर्ण व्यवहार से पराये भी अपने हो जाते हैं।

अथ त्वं नागराणां च ग्रामीणैः तुलनां कुरु।
ग्रामीणः सुखिनो ग्रामे दुःखिनो नागरास्तथा॥४६॥

इस दृष्टि से तुलना करें तो नगरवासियों से ग्रामवासी समृद्ध हैं। गाँव वाले गाँव में सुखी हैं परन्तु नगरवासी दुखी हैं।

आहारो व्यवहारश्च ग्रामीणानां वरं स्त्रियः।
समादरेण शीलेन पूरिता ग्रामवासिनः॥४७॥

आहार एवं व्यवहार में ग्रामीण स्त्रियाँ भी श्रेष्ठ हैं। समादर का भाव उनमें भरा हुआ है। वे अच्छे आचरण से परिपूर्ण हैं।

रक्षन्ति संस्कृतिं धर्मं ग्रामधर्मं सनातनीम्।
माता पिता तरुर्भ्राता पूज्यः पितामहो मही॥४८॥

ग्रामवासी ही आज सनातन भारतीय संस्कृति की एवं धर्म की रक्षा कर रहे हैं। वे ही ग्रामधर्म की भी रक्षा कर रहे हैं। उनके लिए माता-पिता, दादा-दादी, भाई-बहन, धरती माता एवं पूज्य वृक्ष सभी समादरणीय हैं।

संयुक्तपरिवारस्य महत्त्वमनुभूयते।
सम्बन्धिनां यथा ग्रामे नैव नगरवासिभिः॥४९॥

संयुक्त परिवार का तथा सगे संबंधियों का महत्त्व जितना गाँव में अनुभव किया जाता है उतना नगर में नहीं ।

प्रदेशा हरिता ग्रामाः क्षेत्राणि हरितानि च।
वृक्षैर्मनोहराभूमिर्नगरे दुर्लभा विभे॥५०॥

हे विभे, ग्रामीण प्रदेश आज भी हरे भरे हैं, खेत खलिहान हरे भरे हैं। पेड़ों से सुशोभित हरी भरी मनोहर भूमि नगर में दुर्लभ है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निम्बाम्रकदलीवृक्षाः तुलसी लाभदायकाः।
सुखं कस्मै न यच्छन्ति ग्रामीणाः सुखिनः सदा॥५१॥

नीम, केला, आम, तुलसी आदि के पेड़ सबके लिए लाभदायक हैं। ये भला किसे सुख नहीं देते। इन्हीं से तो ग्रामवासी सुखी रहते हैं।

वातपित्तकफादीनां कीटानां नाशकं तरुम्।
पुत्रपुष्पफलैर्युक्तं निम्बमाश्रय राष्ट्रियम् ॥५२॥

वात, पित्त, एवं कफ तथा कीटाणुओं का नाश करने वाले और अपने पत्तों, फूलों एवं फलों से औषधि प्रदान करने वाले राष्ट्रीय वृक्ष नीम का आश्रय लो।

टि०— भारतीय नीम को भारत देश का राष्ट्रीय वृक्ष घोषित किया जाना चाहिए।

जीवनदायितत्त्वानां दर्शनं सुखदायकम्।
ग्रामं गच्छ तथा पश्य स्वास्थ्यं सुखं विवर्धताम् ॥५३॥

इन जीवनदायी तत्त्वों का दर्शन सुखदायक होता है। तुम गाँव में जाओ इन्हें देखो और स्वास्थ्य सुख प्राप्त करो।

नगरवासिनः स्वार्थे निरता हितसाधकाः।
गमनागमनं तेषां स्वार्थेन परिपूरितम्॥५४॥

नगर निवासी तो स्वार्थी हो चुके हैं और अपना हित साधने में लगे हैं। उनका आना जाना स्वार्थ पर आधारित होता है।

फलमूलान्नदुग्धानां दायको जनको दुःखी।
रसानां गुडसक्तूनां प्रापकः परिपीडितः॥५५॥

आज गाँव में भी शहरी करण होने लगा है। रुपये पैसे के लोभ में फल, मूल, अनाज, दूध रस, गूड़, सत्तू आदि का उत्पादक (किसान) खाद्यान्न के अभाव से पीड़ित है।

दुग्धैः पूरिता ग्रामा दुग्धाभावेन दुःखिताः।
पदार्थान् नगरे प्रेष्य पालयति स्वकं गृहम्॥५६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दूध से भरे हुए गाँव दूध के अभाव में दुःखी हैं। ग्रामवासी उत्पादित पदार्थों को धन के लिए नगर में भेज देता है और उस धन से अपने घर-परिवार का पालन पोषण करता है।

ग्रामेषु ग्राम्यवस्तूनां दर्शनं दुर्लभं भुवि।
आतिथ्यं भोजनं वस्त्रं नगरवज्जना गताः॥५७॥

सम्पूर्ण संसार में गाँव में गाँव की वस्तु दुर्लभ हो गई है। अतिथि सत्कार से लेकर खान-पान एवं परिधान तक का नगरी करण हो गया है।

नागरा रूप्यकैः क्रेतुं पारयन्ति सुसाधनम्।
ग्रामीणा न तथा कर्तुं दुःखिनो ग्रामवासिनः॥५८॥

नगरवासी रुपयों से अच्छे-अच्छे साधन जुटा लेते हैं लेकिन ग्रामवासी वैसा कर नहीं पाते इसलिए वे दुःखी हैं।

ग्रामाणां कृषकाणां च स्थितिरद्यापि दुर्बला।
वैज्ञानिके युगेप्यद्य दैवं तेषां सहायकम्॥५९॥

गाँवों एवं किसानों की स्थिति आज भी बड़ी ही दयनीय है। इस वैज्ञानिक युग में उनका सहायक विधाता ही है।

दृष्टः पंचनदो देशः सुसाधनैः प्रपूरितः।
यन्त्रेण क्रियते कर्म कृषकाः सुखिनो न ते॥६०॥

पंजाब प्रदेश में मैंने देखा कि किसान वैज्ञानिक यन्त्र से खेती तो कर रहें हैं और ऊपज भी खूब है, पर किसान यहाँ भी सुखी नहीं हैं।

यन्त्रं लभ्यं यदा तत्र ग्रामेषु स्यादनारतम्।
कृषिकर्म कथं न स्यात् कृषकाश्च वरं भुवि॥६१॥

कृषि यन्त्र यदि सभी गाँवों में उपलब्ध हो तो कृषि अच्छी कैसे नहीं होगी और धरती का किसान खुशहाल कैसे नहीं होगा ?

सर्वत्र सुलभं यन्त्रं सुलभा नूतना विधिः।
कृषकाणां कृते नूनं कृषका भुवि भोजकाः॥६२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सभी कृषकों के लिए कृषि यन्त्र एवं कृषि की नूतन विधि उपलब्ध हानी चाहिए क्योंकि वास्तव में किसान ही भूमि के भोजक हैं।

विक्ताभावे च लाभेन वंचिता ग्रामवासिनः।

मध्यमा प्रहरन्त्येषां न्यूनमूल्येन सम्पदः॥६३॥

धन के अभाव में ग्रामवासी लाभ से वंचित रह जाते हैं। आढ़ती कम कीमत पर किसानों से कृषि उत्पाद खरीदते हैं और ऊँचे मूल्य पर बेचते हैं।

वाणिजैः स्वल्पमूल्येन क्रीत्वा चान्नं फलादिकम्।

विक्रीयन्ते सुमूल्येन हृष्यते धनिकायते॥६४॥

व्यापारी कम कीमत पर अनाज फल आदि खरीद कर अधिक कीमत पर पुनः बेचते हैं और अपने धनी होने पर गर्व कर प्रसन्न होते हैं।

नगरे निवसन् नित्यं नगर ग्रामवासिनः।

चिन्तनं कृषकाणां च त्यक्त्वा भोगे रता नराः॥६५॥

जब ग्रामवासी नगर में रहने लगते हैं तब गाँव की चिन्ता छोड़कर भोग में रत हो जाते हैं। किसान की चिन्ता कोई नहीं करता।

सुन्दर्यः सुन्दरा ग्रामे सुष्ठुभावेन भाविताः।

शीलं च सुन्दरं तासां सुन्दरीणां च सुन्दरम्॥६६॥

सुन्दर भाव वाली गाँव की सुन्दरियाँ भी सुन्दर होती हैं। उनका स्वभाव बड़ा ही सुन्दर होता है। हो भी क्यों न क्योंकि सुन्दरियों का सब कुछ सुन्दर जो होता है।

वसुधा सुन्दरा ग्रामे रसं रक्तं च सुन्दरम्।

वायुः सुशोभनस्तत्र फलमन्नं च सुन्दरम्॥६७॥

गाँव की धरती सुन्दर होती है। वहाँ के अनाज में, फल में एवं रस में माधुर्य होता है। ग्रामीणों का रक्त शुद्ध होता है। वायु शुद्ध होती है। इस तरह गाँव का सब कुछ सुन्दर होता है।

नगरं न विना ग्रामं ग्रामो नगरभोजकः।

नागरा नगरं प्राप्य ग्रामं स्मरन्तु सादरम्॥६८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बिना गाँव के शहरी जीवन का अस्तित्व नहीं है। गाँव ही शहर को खाद्यान्न उपलब्ध कराता है। इसलिए शहरों में आकर शहरियों को गाँव को भी आदर पूर्वक याद करना चाहिए।

नागराणां सुखार्थं यत् क्रियते ग्राम्यदोहनम्।
घातकं न वरं तत्सत् सर्वं प्रदूषणात्मकम्।।६९।।

नगरवासियों के सुख के लिए गाँवों का दोहन एवं शोषण आत्मघाती कृत्य है। यह प्रदूषण मूलक कार्य है।

ग्राम्याणामवरोधव्यं नगरं प्रतिधावनम्।
नगरवद्भवतु ग्रामो ग्राम्यो ग्रामाय केवलम्।।७०।।

ग्रामवासियों का नगर के प्रति पलायन रोका जाना चाहिए। इसके लिए गाँव का ही नगरीकरण किया जाना चाहिए तथा गाँव को सुख-सुविधा से भर देना चाहिए।

वृत्त्यर्थं शिक्षणार्थं च प्राप्तुं च भौतिकं सुखम्।
ग्रामीणा नगरं यान्ति प्रापयन्ति सुतं सुताम्।।७१।।

ग्रामवासी सुविधा के अभाव में आजीविका के लिए, शिक्षा प्राप्त करने के लिए तथा भौतिक सुविधा पाने के लिए नगर में जाता है। वह अपनी सन्तान को अध्ययन के लिए नगर में भेजता है।

कृषकः स्वधनं निद्रां विक्रीय स्वसुखं महत्।
प्रेषयति सुतं प्राप्तुं धनं नागरजीवनम्।।७२।।

किसान अपना धन, अपना सुख एवं अपनी नींद को बेचकर भी धन एवं नगरजीवन प्राप्त कराने के उद्देश्य से अपनी सन्तान को नगर में भेजता है।

दृश्यन्ते तादृशो लोका निर्धना वृत्तिचिन्तकाः।
पलायनं प्रकुर्वन्तो ग्रामाद्धि नगरं प्रति।।७३।।

ऐसे लोग भी दिखाई पड़ते हैं जो निर्धनता की वजह से वृत्ति की चिन्ता में गाँव छोड़कर शहर में आ जाते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पलायनं वरं नैव शीलाद् धर्माच्च सुस्थलात्।
अध्ययनात् पितुर्मातुः स्नेहात् प्रकृतितो गृहात्।।७४।।

शुद्ध आचरण से, धर्म से, अपने कार्यस्थल से, अध्ययन से, माता-पिता के स्नेह से, गृह से एवं प्रकृति से पलायन करना उचित नहीं है।

भौतिकसुखसौविध्यं सुलभं नगरे वरम्।
जीवनं नरकं तत्र छिन्ना भिन्ना नराः पशुः।।७५।।

भले ही नगर में भौतिक सुख सुविधा सुलभ है परन्तु नगर जीवन नरक बन गया है क्योंकि वहाँ मानव अलग थलग पड़ा हुआ है। नर ही नहीं पशु का जीवन भी छिन्न भिन्न हो गया है।

न कश्चित् कस्यचिद् मित्रं न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः।
व्यवहारेण हीनास्ते शंकाशीलाः पृथक् पृथक्।।७६।।

नगर में न कोई किसी का मित्र है और न कोई किसी का शत्रु। व्यवहार से हीन शंकाग्रस्त सभी अलग अलग जीवन जी रहे हैं।

सुनिश्चितां तिथिं कालं कृत्वा नायाति योऽतिथिः।
आतिथ्यं दुर्लभं तत्र व्यस्तास्त्रस्ताश्च नागराः।।७७।।

अतिथि जिसके आने की तिथि निश्चित नहीं होती वह यदि तिथि एवं समय निश्चित किये बिना किसी के यहाँ जाता है तो वह आतिथ्य से वंचित रह जाता है नगर में सभी नागरिक व्यस्त एवं त्रस्त रहते हैं।

तथापि श्रद्धया भक्त्या सादरं मे निवेदनम्।
शृणु पाठय पुत्रं स्वं प्रेष्य त्वं नगरं प्रति।।७८।।

फिर भी मेरा निवेदन है कि अपने बच्चों को नगर में भेजें और उन्हें पढ़ायें।

क्रियते वरमेवैतत् स्वस्य राष्ट्रस्य हेतवे।
एकैकस्य विनिर्माणं निर्माणं जगतो विभे।।७९।।

हे विभे, ऐसा करना राष्ट्र हित में है। एक एक का निर्माण जगत् का निर्माण है। इससे अपना भला भी होता है और राष्ट्र का भी।

एकैकं जीवनं धन्यं सफलं कुरु नन्दतु।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ज्ञानं प्रदाय त्वं तस्मै पर्यावरणमूलकम्॥८०॥

एक एक को पर्यावरण मूलक ज्ञान प्रदान करके अपना और उसका जीवन सफल करें और प्रसन्न रहें।

माता पिता स्वसा जाया भर्ता भ्राताऽग्रजोऽनुजः।

स्वकीयं शिक्षयन् सत्यं सफलं कुरु जीवनम्॥८१॥

माता-पिता, पति-पत्नी, भाई-बहन या अन्य कोई भी यदि अशिक्षित हो तो उन्हें वास्तविकता का ज्ञान करायें और अपना जीवन सफल बनाएँ।

सुशिक्षिता यदा बाला परिवारः सुशिक्षितः।

स्वावलम्बी च सा बाला पर्यावरणपालिका॥८२॥

यदि बालिका को शिक्षित किया जाता है तो उससे सम्पूर्ण परिवार सुशिक्षित होता है। वह बालिका स्वावलंबी होकर पर्यावरण का पालन करने वाली बनती है।

कारणं दुष्टवृद्धीनां जनसंख्याविवर्धनम्।

शिक्षायां न्यूनता नूनं रचना सर्वनाशिका॥८३॥

पर्यावरण प्रदूषण में निरन्तर वृद्धि का कारण निरंतर जनसंख्या में बढ़ोतरी होना। शिक्षा में कमी होना और सर्वविनाशक निर्माण यह सब प्रदूषण कारक तत्त्व हैं।

बहुविनाशकयन्त्राणां निर्माणां न वरं नर।

प्रचारमाध्यमेन त्वं जनजागरणं कुरु॥८४॥

हे नर, बहु विनाशक यन्त्रों का निर्माण उचित नहीं है। प्रचार माध्यम से, जन जागरण पैदा करके प्रदूषण को रोको।

ज्ञानं प्रदाय तेभ्यस्त्वं पर्यावरणमूलकम्।

जगतो जीवनं धन्यं कुरु शिक्षय सद्गुणम्॥८५॥

सभी को पर्यावरण मूलक उपाय बताकर तथा अच्छा गुण सिखा कर जगत् के जीवन को धन्य करो।

वेदे प्रोक्ता उपायाश्च प्रदूषणविनाशकाः।

आधुनिका उपायाश्च नाशका दूषणात्मकाः॥८६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वेद में वर्णित उपाय प्रदूषण को जड़ से समाप्त करने में सक्षम हैं जबकि आधुनिक उपाय एक तरफ प्रदूषण रोकते हैं और दूसरी तरफ प्रदूषण फैलाते हैं।

पृथिव्या रक्षकः सूर्यो वातोऽन्तरिक्षरक्षकः।

अवान्तरस्य शुद्धोऽग्निरौषधं दूषणान्तकम्॥८७॥

पृथिवी का रक्षक सूर्य है। अन्तरिक्ष का रक्षक वायु है। पृथिवी के अवान्तर भाग की रक्षा शुद्ध अग्नि करता है और औषध पृथ्वी के वातावरण को प्रदूषण से बचाते हैं।

जीवानां जीवनार्थं हि जलं जीवनदायकम्।

वायुः प्राणस्तरुरूर्जा सर्वञ्चैतत् सहायकम्॥८८॥

जीवों के जीवन के लिए जल जीवन है, वायु प्राण है, तरु ऊर्जा है। ये सभी मिलकर जीवन जीने में सहायक होते हैं।

अन्तरिक्षं नभो भूमिं गंगा गर्भं च वारिधिम्।

वायुं वृक्षमपामार्गं मा हिंसीर्न प्रदूषय॥८९॥

अन्तरिक्ष को, आकाश को, भूमि को, गंगा को, गर्भ को, सागर को, वायु को, वृक्ष को एवं अपामार्ग को नष्ट मत करो, प्रदूषित मत करो।

वृक्षा नानाविधा पुण्याः पर्यावरणपोषकाः।

विषं पिबन्ति ते भूत्वा वृक्षा रुद्राः प्रदूषिताः॥९०॥

गुग्गुल, पीपल, खेर, उदुम्बुर, आदि वृक्ष विषपान करके अमृत प्रदान करते हैं। वृक्ष को पवित्र रखा जाए तो आशुतोष बन कर तत्काल शुभ फल देते हैं। और यदि वृक्ष को प्रदूषित किया गया तो वे रुद्ररूप धारण करके विनाशक बन जाते हैं।

ओषधयः प्ररोहन्ति यस्मिन् गेहे निरन्तरम्।

तद्गृहं भयराहित्यं प्राप्नोति मानवः सुखम्॥९१॥

जिस घर में निरन्तर औषधियाँ पनपती हैं। वह घर भयमुक्त हो जाता है तथा उसमें रहने वाला मानव सुखी रहता है।

रविस्तु प्रत्यहं गच्छेदायुरारोग्यवर्धकः।

गर्भं गृहं सदा शुद्धिं प्राप्नुयात् प्राणी पोषणम्॥९२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आयु और आरोग्य को बढ़ाने वाला सूर्य प्रतिदिन घर में प्रवेश करे। ऐसी व्यवस्था करो, जिससे गृह गर्भ शुद्ध रहें और प्राणी को पोषक तत्त्व मिलता रहे।

उदितः सविता चास्तो रश्मिभिः परिचोदितः।

दृष्टादृष्टान् कृमीन् हन्याद् दद्यात् पुष्टिं सुदर्शनम्।।९३।।

उदित सूर्य या अस्त सूर्य अपनी किरणों से दृष्ट और अदृष्ट कीटाणुओं को नष्ट करे रवि का दर्शन पुष्टि प्रदान करे।

जलं दोषहरं जातं खनिजैः मिश्रितं शुचिः।

वायुश्चापि तदा ग्राह्यो नाशको मिश्रितः शुचिः।।९४।।

जब जल में विशुद्ध खनिज पदार्थ मिले रहते हैं तथा वायु में अन्य प्राणधारक तत्त्व मिले रहते हैं तब वे ग्रहण करने योग्य होते हैं तथा ये रोग नाशक होते हैं।

सविता शोधनं कृत्वा कृमिनाशं निरन्तरम्।

संशोध्य दूषिताम् नित्यमृद्धिं सिद्धिं प्रयच्छति।।९५।।

सविता वातावरण में से कृमियों का नाश करके तथा दूषित पदार्थों को शुद्ध करके ऋद्धि और सिद्धि प्रदान करता है।

मृदपि नाशने दक्षं तदपि दूषणान्तकम्।

यदि स्यात् स्वस्थ रूपे तद् युज्यते विधिना यदा।।९६।।

मिट्टी प्रदूषित पदार्थ को नष्ट कर शुद्ध बनाती है। पर ऐसा तब होगा जब मिट्टी को शुद्ध रखा जायेगा, तथा मिट्टी का उपयोग स्वस्थ तरीके से किया जाएगा।

प्रलेपनं मृदः पुण्यं चर्मरोगप्रणाशकम्।

संशोध्य दूषितान् द्रव्यान् पर्यावरणशोधनम्।।९७।।

मिट्टी का लेप करने पर यह चर्मरोग को दूर करती है। यह दूषित पदार्थों को शुद्ध करके पर्यावरण शोधन का काम करती है।

पूतो वनस्पतिः पुण्यो दुष्टदोषविनाशकः।

भेषजं सुखदं वृक्षः पर्यावरणपालकः।।९८।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वनस्पति प्रदूषण के दोष को दूर करती है। यह दवा देती है। वनस्पति सुखद होती है। वृक्ष पर्यावरण पालक होते हैं।

क्रमीणां नाशने दक्षं गोमूत्रं गोमयः पयः।
पावनं पंचगव्यं त्वं पीत्वा पीत्वा सुखी भव॥९९॥

गोमूत्र एवं गोबर कीटाणुओं को नष्ट करने में दक्ष होते हैं। पवित्र पंचगव्य को बार बार पीकर सुखी होओ।

टि०—पंचगव्य कैंसर जैसी बीमारी को दूर करने में सक्षम है।

वेदेषु चोपवेदेषु यन्त्रतन्त्रेषु वास्तुषु।
समाधानं समस्यायाः पर्यावरणचिन्तनम्॥१००॥

हमारे वेदों, उपवेदों, यन्त्र एवं तन्त्र शास्त्रों में पर्यावरण की समस्या पर चिन्तन किया गया है तथा इसका स्थायी हल दिया गया है।

यज्ञेनैव तरुर्ज्योतिर्वायुरापो वनौषधम्।
पर्जन्यः सागरो भूमिः पूर्णतः शुद्धिमर्हति॥१०१॥

यज्ञ करने से ही वृक्ष, प्रकाश, वायु, जल, वन औषधि, बादल, सागर एवं भूमि पूर्णतः शुद्ध हो जाते हैं।

रक्तप्रदूषणं त्वद्य कारणं जनको रूजः।
मन्त्रेण शुद्धतां याति शरीरं सुखदं तदा॥१०२॥

भयानक शारीरिक रोगों का कारण है रक्त का प्रदषित होना है। मन्त्र से रक्तदोष दूर होता है और शरीर स्वस्थ रहता है।

संस्काराः षोडश पूज्या वरदाः शुभदायकाः।
पर्यावरणरक्षायां सन्ति सर्वे सहायकाः॥१०३॥

वेदों में षोडश संस्कार बताए गये हैं। ये हमारे लिए शुभ हैं और श्रेष्ठ फल देने वाले हैं। मंत्र शारीरिक पर्यावरण को पवित्र रखने में सर्वदा सहायक होते हैं।

वैवाहिकश्च संस्कारः सेव्यते सुखहेतवे।
उत्साहेन धनानां ते कुर्वन्ति हि प्रदर्शनम्॥॥१०४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आज हम सिर्फ विवाह संस्कार को ही सुख समृद्धि का कारण मानकर करते हुए देखते हैं। जिसमें सभी खुशी खुशी धन का प्रदर्शन करते हैं जबकि अन्य संस्कारों के प्रति उदासीन रहते हैं।

जातकर्मोपवीतं च नामकरणमुण्डनम्।
अन्नस्य प्राशनं पूज्यं विद्यारम्भः प्रपूजितः।।१०५।।

कहीं कहीं लोग जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, विद्यारम्भ संस्कार करते हुए दिखाई देते हैं।

शेषाश्च सर्वसंस्कारा: विलुप्ता एव दर्शिताः।
मृत्यौ रुचिर्न सर्वेषां क्रियते जनहेतवे।।१०६।।

शेष सभी संस्कार विलुप्त हो गए हैं। अन्तिम संस्कार में भी सबकी रुचि दिखाई नहीं पड़ती है। यह तो जल्दबाजी में किसी तरह समाज के भय से या त्रिविध ताप के भय से किया जाने लगा है।

संस्कारं संस्कृतिं सम्यक् पालयन्तो निवासिनः।
अक्षुण्णं कृतवन्तो भो भारतीयं च भारतम्।।१०७।।

भारवासियों ने षोडश संस्कारों का पालन करके तथा भारतीय संस्कृति को अपना करके भारत एवं भारतीयता को अक्षुण्ण रखा है।

षोडश श्रेष्ठसंस्काराः सर्वस्योन्नतिकारकाः।
बुद्धौ शुद्धिर्यथा तिष्ठेदाचरणीयाः प्रयत्नतः।।१०८।।

हमारे षोडश श्रेष्ठ संस्कार भारतीय संस्कृति के अंग हैं और सबकी उन्नति हेतु बनाये गए हैं। हमारी बुद्धि शुद्ध रहे इस हेतु इनका आचरण सयत्न करना चाहिए।

अमंगलान् प्रभावाञ्च दूरीकृत्य सुमंगलान्।
यच्छन्ति प्रीतिभावं च सुसंस्कारा अहर्निशम्।।१०९।।

ये संस्कार (rituals)अमंगल प्रभावों को दूर करके सुमंगल प्रभाव प्रदान करते हैं। अच्छे संस्कार प्रीतिभाव को अहर्निश प्रदान करते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुव्यक्तित्व विनिर्माणं नैतिकतानुशासनम्।

वाह्याभ्यन्तरत: शुद्धि सुसंस्कार: प्रयच्छति।।११०।।

अपने बच्चों में अच्छा संस्कार डालें। अच्छा संस्कार व्यक्तित्व का निर्माण करता है। सुसंस्कार नैतिकता एवं अनुशासन प्रदान कर आभ्यन्तर व बाह्य से परिशुद्ध करता है।

सुवीर्यस्थापनं येन विधिना क्रियते स्त्रियाम्।

गर्भ: सन्धार्यते नार्या गर्भाधानं तदुच्यते।।१११।।

जिस वीर्य स्थापन विधि से नारी द्वारा गर्भ धारण किया जाता है उसे गर्भाधान संस्कार कहा जाता है जिसमें दम्पत्ति शुभ मुहूर्त में पितऋण से मुक्त होने के लिए सहवास करते हैं।

टि०—गर्भाधान षोडश संस्कारों में प्रथम संस्कार है।

जीवनं वरदं सर्वं विधिना परिपालितम्।

स्वच्छन्दचरणं लोके न वरं वरदायकम्।।११२।।

विधि द्वारा प्रदत्त जीवन वरद है। अत्यन्त स्वच्छन्द होकर समाज में विचरण करना न तो उचित है और न ही उचित फल देने वाला है।

यन्त्रजदूषणं प्राप्य मानव: परिदूषित:।

यन्त्रवन्निरसा: सर्वे भावनारहिताश्च ते।।११३।।

यन्त्र जनित प्रदूषण पाकर मानव भी पूरी तरह से प्रदूषित हो चुका है। मानव यन्त्रवत् निष्ठा एवं भावना शून्य हो गया है।

विधिमनुसरञ्जीवो विधिना परिवर्ध्यते।

विधेर्हि विपरीतं यो चरत्याप्नोति कर्तनम्।।११४।।

विधि के अनुसार आचरण करने वाला विधि द्वारा परिवर्धित होता है। परन्तु जो विधि के विपरीत आचरण करता है उसे विनाश को प्राप्त करना पड़ता है।

अन्तरिक्षं द्युलोकं च महीं गगनमण्डलम्।

चरन् वसंश्च पातालं ना ददाति प्रदूषणम्।।११५।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आज का वैज्ञानिक मानव अन्तरिक्ष में, आकाश में, आकाशमण्डल में तथा पृथिवी के भीतर विचरण करता हुआ तथा निवास करता हुआ अनेक प्रकार के प्रदूषित पदार्थ छोड़ता है।

प्रक्षिप्तं दूषितं तत्त्वं यानं हन्ति ततो जनम्।

अन्तरिक्षं न नष्टं स्याद्विज्ञानी त्वं तथा चर ।।११६।।

प्रक्षिप्त प्रदूषित तत्त्व यान तथा मानव दोनों को नष्ट कर देता है। हे विज्ञानी, ऐसा कार्य करें जिससे अन्तरिक्ष तथा नर नष्ट न होने पायें।

अवशिष्टाः पदार्थाश्च सीसा पारदास्तथा।

घातका मिश्रिता वायौ मोनोक्साइड सल्फराः।।११७।।

वातावरण में छोड़े गये सीसा, पारा, मोनोक्साइड, सल्फर आदि पदार्थ वायु में मिलकर पर्यावरण के लिए खतरा बन जाते हैं।

वार्तायन्त्रैर्ध्वनेर्यन्त्रैर्यानविमानवाहकैः।

वार्ताधिक्येन संयाति गगने कटुदूषणम्।।११८।।

वार्तायन्त्र (मोबाइल फोन, टेलीफोन, आदि) द्वारा, ध्वनि यन्त्र द्वारा और यान एवं विमानों के द्वारा गगन को प्रदूषित किया जा रहा है।

टि०—वार्ता यन्त्र उपग्रह द्वारा चालित होते हैं इनका अधिकाधिक प्रयोग ध्वनि मंडल को ध्वनि प्रदूषण से प्रदूषित करने वाला होगा।

शब्दश्च नोचितो नीत उच्चैर्व्यापारहेतवे।

अधिको दूषकस्त्याज्यो वंचनात् विरतो भव।।११९।।

कार्य व्यापार हेतु ऊँची और अधिक शब्द करना उचित नहीं है। यह ध्वनि प्रदूषण का जनक है इसलिए सीमित वार्ता करें।

पादपा हरिता सौम्या हरिकेशा विनाशकाः।

दुर्वायोः शोधकाः पूज्याः प्राणदा शुभदाः शिवाः।।१२०।।

हरे भरे पेड़ों के हरे भरे पत्तों को हरि का केश कहा गया है। ये प्रदूषण के विनाशक हैं तथा दूषित वायु के शोधक हैं। सुन्दर वृक्ष पूज्य, प्राणद, शुभद शिव हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पंचतत्त्वे समाविष्टाः पंचतत्त्वेन निर्मिताः।

पंचतत्त्वात्मकं पुण्यं ब्रह्माण्डं त्वं पुनीहि माम्॥१२१॥

हे प्रभो, पंचतत्त्व से निर्मित एवं पंचतत्त्व में ही समाविष्ट हो जाने वाले पंचतत्त्वात्मक सुन्दर ब्रह्माण्ड को तथा मुझे पवित्र रखो।

पंचतत्त्वं यदा पूतं पूता तदा वसुन्धरा।

जलं ज्योतिस्तथा वायुराकाशस्तस्य तत्कृतिः॥१२२॥

यदि पंचतत्त्व पवित्र है तो वसुंधरा पवित्र है। जल, ज्योति, वायु, आकाश तथा इनकी रचना पवित्र है।

शरीरं नश्वरं नैव पंचतत्त्वेन निर्मितम्।

विकृतं पंचतत्त्वे वै लीयते जायते ततः॥१२३॥

पंचतत्त्व से निर्मित हमारा शरीर भी नष्ट नहीं होता अपितु विकृत होने के बाद पंचतत्त्व में ही विलीन हो जाता है। तथा कालान्तर में पुनः जंन्म ग्रहण कर लेता है।

वेदे निगदितं पूर्वं पावनपयसा स्वकम्।

शरीरशोधनं कृत्वा पंचतत्त्वं विवर्धताम्॥१२४॥

वेद में पहले ही कहा जा चुका है कि पवित्र पय से अपने शरीर को पावन करके पंचतत्त्वात्मक शरीर को पुष्ट करो और वृद्धि को प्राप्त करो।

टि०—अन्तिम संस्कार करने पर पंचातत्त्वात्मक शरीर विभक्त होकर अपने अपने मूल तत्त्व में मिल जाता है।

सविता देवता वारि पुनातु पुष्टिवर्धकम्।

आपस्तदा शिवाः सन्ति शुभाः सन्ति च निर्मलाः॥१२५॥

जब भगवान् सूर्य अपनी किरणों से जल को पवित्र करते हैं तभी जल कल्याण कारक बनता है। जल शुभ और निर्मल होता है। तथा जल पुष्टिवर्धक होता है।

अन्तस्तः परितः पूताः प्राणिनां परिपालकाः।

जलं वायुश्च वृक्षाश्च तुलका दूषणान्तकाः॥१२६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जल, वायु और वृक्ष जब हर तरह से पवित्र होते हैं तभी प्रदूषण को समाप्त करने में सक्षम होते हैं तभी पर्यावरण में सन्तुलन होता है और जीवों का जीवन चलता है।

त्रिविधाः शक्तयो वाण्या याभिश्चलति जीवनम्।
अक्षयास्त्रिविधारूर्जाः सूर्यवायुजलोद्भवाः।।१२७।।

जिस प्रकार वाणी की तीन शक्तियों के द्वारा वाग् व्यवहार रूपी जीवन चालित होता है। उसी तरह सूर्य, वायु और जल से उत्पन्न अक्षय त्रिविध ऊर्जा से जगत् चलित होता है।

प्रीतिदा मधुरा वाणी वक्तव्या कार्यसाधिका।
शब्दब्रह्म विना नास्ति जीवनं जगतो विभे।।१२८।।

हे प्रिय पत्नी विभा, हम सबको कार्य साधिका, प्रसन्नता प्रदान करने वाली मधुर वाणी बोलनी चाहिए, क्योंकि शब्द ब्रह्म के सुन्दर स्वरूप के सम्यक प्रयोग के बिना सांसारिक जीवन की स्थिति संभव नहीं है।

आदित्येनाङ्गिरो द्वारा चाग्निना वायुना पुरा।
ऋषिभिर्ऋग्यजुः सामा अथर्वाणः प्रचोदिताः।।१२९।।

इसी शब्द ब्रह्म के सहारे ऋषि अग्नि, आदित्य, वायु एवं अंगिरा ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद को देखकर प्रकट किया।

वेदोक्त विधिना शान्तिः स्थापनीया सदा बुधैः।
दिव्यन्तरिक्षे च भूमौ च जले वायौ वनस्पतौ।।१३०।।

वेदोक्त विधि से विद्वानों को दिव्य अन्तरिक्ष में, भूमि पर, जल में, वायु में एवं वनस्पतियों में शान्ति स्थापित करनी चाहिए।

शान्तेश्च जायते शान्तिरशान्तेः शमनं कुतः।
यस्मिंश्चादृशो भावः तादृशं प्राप्यते फलम्।।१३१।।

शान्ति से ही शान्ति उत्पन्न होती है। अशान्ति से अशान्ति की शान्ति कहाँ? जिसमें जैसा भाव होता है उसमें से वैसा फल प्राप्त होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विकृतकारणात् कार्यं जायते विकृतं विभे।
विशुद्धात् वस्तुनो वस्तु विशुद्धं जायते पुनः॥१३२॥

हे विभे, विकृत कारण से विकृत कार्य रूप फल उत्पन्न होता है। उसी तरह विशुद्ध करण से विशुद्ध कार्य रूप वस्तु उत्पन्न होती है।

पारसीकैः सकारस्य हकारोच्चारणं कृतम्।
सिन्धुर्हिन्दुस्ततो हिन्दी ततो हिन्दनिवासिनः ॥१३३॥

पारसियों ने जब सकार को हकारोच्चरित किया तब सिन्धु से हिन्दू हो गया, तथा सिन्धी से हिन्दी और हिन्दी से हिन्दवासी।

काव्यं प्रीतिप्रदं भव्यं भावनया विशुद्धया।
सक्षमं रक्षणे स्याच्चेत् सफलं कविजीवनम्॥१३४॥

विशुद्ध भावना से विरचित भव्य एवं प्रीतिप्रद यह काव्य यदि पर्यावरण को बचाने में सक्षम हुआ तभी कवि जीवन सफल हो पायेगा।

न्याये न्यायो न चान्यायो धनैर्बलैः प्रभावितः।
न्यायालयः प्रभोः स्थानं न्यायाधीशः प्रभुः स्वयम्॥१३५॥

न्याय में सही न्याय हो । न्याय में अन्याय न हो। धन से एवं बल से न्याय प्रभावित न हो। न्यायालय परमेश्वर का स्थान होता है और न्यायाधीश स्वयं प्रभु होता है।

न्यायाधीशस्य न्यायेन निर्णयेन प्रभावितः।
समाजः परिवारश्च मैत्री वृत्तिर्धनं गृहम्॥१३६॥

न्यायाधीश के एक निर्णय से तथा उसके न्याय से समाज, परिवर, मैत्री, वृत्ति, धन और गृह सभी प्रभावित होते हैं।

नेतृत्वं तथा भाव्यं राष्ट्ररक्षा सुरक्षिता।
हिन्दवो मुस्लिमा सिक्खा ईसाइनो सुपूजिताः॥१३७॥

हमारा नेतृत्व ऐसा होना चाहिए कि राष्ट्र की रक्षा सुरक्षित रह सके, तथा समाज में हिन्दू , मुस्लिम, सिक्ख एवं इसाई सभी सम्मानित जीवन जी सकें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पर्यावरणशिक्षायाः प्रसारो दूषणान्तकः।
प्रभवेन्नगरे ग्रामे पर्यावरणपालितम्॥१३८॥

प्रदूषण नाशक पर्यावरण की शिक्षा का प्रसार जब गाँव एवं शहर में होगा। तो पर्यावरण का पालन स्वतः होगा।

संस्कृतेन जगत्सर्वं जीवति संस्कृतं विना।
जीवितुं शक्यते नैव संस्कृते निहितं जगत्॥१३९॥

संस्कृत से सम्पूर्ण संसार संचालित होता है। संस्कृत के बिना जीवित रहना दुष्कर है। संस्कृत में संसार निहित है।

संस्कृतिर्भारतस्येयं वर्गैः सर्वैः समादृता।
पालनीया प्रयत्नाद्धि वाहितव्या च सर्वदा॥१४०॥

भारतीय संस्कृति को सभी वर्गो ने सम्मान दिया है तभी यह अक्षुण्ण है। इसलिए संस्कृत की रक्षा की जानी चाहिए और इसे आगे बढ़ना चाहिए।

संस्कृतं सरलं साध्यं संस्कारेण हि संयुतम्।
व्यवहारे भवेन्नैव पाण्डित्यस्य प्रदर्शनम्॥१४१॥

विशुद्ध परन्तु सरल संस्कृत का प्रयोग करना सर्वफल साध्य है। व्यवहार में पाडित्य प्रदर्शन उचित नहीं है।

टि०—संस्कृत भाषा का सरलीकरण उसे व्यवहार्य बनाता है।

भाषाणां जननी दैवी वाक् संपूता परिष्कृता।
मुग्धा सर्वसमर्था सा संस्कृतेः परिरक्षिका॥१४२॥

सबको मुग्ध कर देने वाली सभी भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा शुद्ध एवं सर्व समर्थ भाषा है। संस्कृत भारतीय संस्कृति की रक्षिका भाषा है।

टि०— संस्कृत एक मात्र भारतीय भाषा है जिसमें शब्द निर्माण की विलक्षण अद्भुत क्षमता है। जैसे 'Missile का प्रक्षेपास्त्र', ' omputer का संगणक' आदि समानार्थी शब्द संस्कृत की निर्मित्ति हैं। संस्कृत के समाप्त होने की दशा में भारत की संस्कृति एवं भारत की समस्त भाषायें लाचार हो जायेंगी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तसिल् प्रत्ययस्यैव प्रयोगं वीक्ष्य मोदते।
मनो मे नर्तनं कर्तुं वाञ्छतीच्छति सर्वदा।।१४३।।

तसिल् प्रत्यय के प्रयोग को देखकर मेरा मन प्रसन्नता से झूम उठता है, और बार बार नर्तन करना चाहता है।

वार्तालापप्रकारश्च सरलो जनसाधकः।
लेखनं पाठनं पाठ्यं संपूजितं च संस्कृतम्।।१४४।।

संस्कृत में बात करना सरल और सुलभ है। इसमें लिखना पढ़ना एवं पढ़ाना आसान है। संस्कृत संपूजित भाषा है।

उद्योगिनं नरं लक्ष्मीर्वृणते स्वयमेव हि।
भाग्येन दुर्गमो गम्यः सुगमं दुर्गमं पदम्।।१४५।।

परिश्रमी प्राणी को लक्ष्मी स्वयं वरण करती है। फिर भी भाग्य से दुर्गम सुगम हो जाता है और सुगम पद दुर्गम हो जाता है।

वागिन्द्रियं वशीकृत्य व्यवहारं शुभं चर।
मधुरा प्रीतिदा वाणी कार्यपूर्तौ सहायिका।।१४६।।

वागीन्द्रिय को वश में करके उत्तम व्यवहार करो। बोली गई मधुर भाषा एवं प्रीति प्रदान करने वाली भाषा कार्य की पूर्ति में सहायक होती है।

धनार्जनं हि नारीणां नराणां च पृथक् पृथक्।
विभाजकं वरं नैव नारीणां वृद्धिहेतवे।।१४७।।

पति पत्नी का अलग अलग स्थानों पर नौकरी करना और धनार्जन करना गृहस्थ धर्म को खण्डित करने कृत्य वाला है। भले ही यह स्त्री की उन्नति के लिए किया जा रहा है।

क्षरणं स्खलनं भूमौ बालानां वृत्तिहेतवे।
तरुणीनां वरं नैव रुध्यतां तत्प्रदूषणम्।।१४८।।

आधुनिकता में आकर बाल-बालाओं, युवा युवतियों का वृत्ति हेतु मार्ग से विचलित होना उचित नहीं है। इसे रोका जाना चाहिए। यह प्रदूषण पैदा करने वाला सामाजिक कृत्य है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दूरदर्शनभाषे च श्रवणं दर्शनं रतेः।

प्राप्यते तद्वरं नैव पर्यावरणदूषकम्।।१४९।।

दूरदर्शन एवं दूरभाष पर जो रतिक्रीडा देखने व सुनने को मिल रही है वह उचित नहीं है। यह समाजिक पर्यावरण को प्रदूषित करने वाला कृत्य है।

संगणकं विना नास्ति जीवनं वरदायकम्।

संगणको वरो जातो जीवने सर्वसाधकः।।१५०।।

संगणक (कम्प्यूटर) के बिना वरदायक जीवन दुर्लभ है। संगणक जीवन के लिए श्रेष्ठ साबित हो रहा है और यह सकल कामनाओं को पूरा करने वाला सिद्ध हो रहा है।

तकनिक्या विकासेन जायते महती क्षतिः।

वृत्तिहीनो नरो नित्यं दुष्कर्मणि रतश्च सः।।१५१।।

तकनीकी विकास से धरती पर महान् क्षति हो रही है। व्यक्ति बेरोजगार होकर दुष्कर्म में लग रहा है।

नरो मानवतामुक्तः प्रकृतितो बहिर्गतः।

औद्योगिको ह्यविष्कारः पर्यावरणदूषकः।।१५२।।

आज मनुष्य मनुष्यता से मुक्त होना चाहता है और प्रकृति के विपरीत आचरण करना चाहता है। जिस प्रकार औद्योगिक आविष्कार उन्मुक्त भाव से पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं।

कार्यस्थलाद् गृहादन्यत् नास्ति स्थानं वरं सुतात्।

प्रासादोऽपि वरो नैव पूजितः सर्ववन्दितः।।१५३।।

अपने कार्य करने के स्थान से एवं मातृभूमि से श्रेष्ठ कोई भी स्थान नहीं है। शोभायमान प्रतिष्ठित राजमहल भी इनसे श्रेष्ठ नहीं है।

यथा यथा हि जायन्ते जगत्यां जनचेतनाः।

पर्यावरणरक्षार्थं मानवास्तत्परास्तथा।।१५४।।

जैसे जैसे जग में जनचेतना आ रही हैं। वैसे वैसे लोग पर्यावरण की रक्षा के लिए तत्पर भी दिखाई दे रहे हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बालं वृद्धं च नारीञ्च श्रमिकं भारवाहकम्।

पशुं न पीडयेत् प्राणी भूयः कार्यं न कारयेत्॥१५५॥

बालक-बालिकाओं , वृद्धों , स्त्रियों, मजदूरों भारवाहकों, पशुओं तथा अन्य प्राणियों से अनुचित या अधिक कार्य लेकर उन्हें कष्ट नहीं देना चाहिए।

मध्याह्ने भोजयते् प्रातः सायं च फलसिद्धये।

पयश्च पाययेद् भूयोऽसह्यं कार्यं न कारयेत्॥१५६॥

प्रातः मध्याह्न एवं सायंकाल में उन्हें खिलाना पिंलाना चाहिए, और क्षमता के अनुसार कार्य करवाना चाहिए तभी श्रमिक उचित फल देगा।

यथा स्वकास्तथा चान्याश्चिन्तनीयं च पालकैः।

अव्यक्तवाक् पशुः प्रेयान् पर्यावरणपालकः॥१५७॥

मालिक को यह सोचना चाहिए कि जैसे अपने हैं वैसे ही दूसरे भी। नहीं बोलने वाला पशु प्रिय है और पर्यावरण का रक्षक है।

मनसा कर्मणा वाचा सर्वभूतेषु सर्वदा।

दयाभावं सुसंस्थाप्य कर्तव्यं जीवनं वरम्॥१५८॥

मन, वचन एवं कर्म से सभी जीवों पर सदा दयाभाव रखना चाहिए तथा सबका जीवन उत्तम बनाना चाहिए।

पशूनां रक्षणं नूनं साधितव्यं सुखेहया।

पृथिव्या जीवनं धन्यं कर्तव्या चोर्वरा धरा॥१५९॥

सुख की कामना करने वाले प्राणी को निश्चय ही पशुओं की रक्षा करनी चाहिए। पृथिवी का जीवन उत्तम बनाना चाहिए तथा धरा को उर्वरा बनाना चाहिए।

प्रयास्यन्ति यदा चान्या ऊर्जाश्च धरणीतलात्।

ऊर्जाया अक्षयं स्रोतः सूर्यो भुवनभास्करः॥१६०॥

इस धरा से जब ऊर्जा के सभी स्रोत समाप्त हो जायेंगे तब भी ऊर्जा का अक्षय स्रोत भुवन भास्कर सूर्य विद्यमान रहेगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्रव्यमेव गतिं प्राप्य चोर्जा ददाति वा पुनः।
विशेषस्थितिमाधृत्य चोर्जायां परिवर्तते॥१६१॥

द्रव्य ही गतिशील होकर अथवा विशेष अवस्था में ऊर्जा उत्पन्न करता है, या फिर द्रव्य स्वयं ही ऊर्जा में परिवर्तित हो जाता है।

अग्निर्वनस्पतिर्वारि वायुर्विश्वस्य पालने।
सृष्टेः सन्तुलने श्रेष्ठाः सन्ति सर्वस्य सिद्धये॥१६२॥

अग्नि, वनस्पति, वारि एवं वायु विश्व के परिपालन में, सृष्टि को सन्तुलित करने में तथा कामना की पूर्ति में श्रेष्ठ भूमिका निभाते हैं।

अपारम्परिकोर्जा च पारम्परिकोर्जा तथा।
अनवीकरणीयैका नवीकरणीया शुभा॥१६३॥

पारम्परिक एवं गैर पारम्परिक ये दो ऊर्जा के प्रकार हैं। इनमें एक अनवीकरणीय है तथा दूसरा नवीकरणीय है। नवीकरणीय पारम्परिक ऊर्जा उत्तम ऊर्जा कहलाती है।

प्ररोपणं पदार्थानां प्रापणीयं च चक्रवत्।
तेदैवोर्वरभूमिश्च पुष्टितुष्टिप्रदायिका॥१६४॥

चक्रवत पदार्थों को उगना चाहिए तभी भूमि उर्वरा रह पायेगी तथा पुष्टि एवं तुष्टीदायक अन्न उत्पन्न हो पायेगा।

पूर्वजैरोपिता वृक्षाः फलं यच्छन्ति साम्प्रतम्।
भविष्याय प्रदास्यन्ति वृक्षाः सर्वैः प्ररोपिताः॥१६५॥

हमारे पूर्व पुरुषों द्वारा लगाये गये वृक्ष वर्तमान पीढ़ी को फल दे रहे हैं। उसी तरह हमारे द्वारा लगाये गये वृक्ष भावी पीढ़ी को फल देंगे। इसलिए सभी को पेड़ लगाने चाहिए।

प्राणरक्षार्थमेतेषां रोपणं परमोचितम्।
अन्यथा तरुहिंसापि हिंसैव परिकल्पिता॥१६६॥

सब की प्राणरक्षा के लिए वृक्षों का लगाना उचित कदम है। अन्यथा वृक्षों के नष्ट हो जाने पर तरु हिंसा का दोष लगेगा। तरुहिंसा भी हिंसा है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तरुहन्ता पशोर्हन्ता दण्ड्यः त्याज्यश्च हिंसकः।

प्ररोपकस्तरोः पूज्यः पारितोषिकभाक् च सः।।१६७।।

तरुहन्ता एवं पशुहन्ता दण्डनीय है त्याज्य है क्योंकि वह हिंसक है। पर पेड़ों को लगाने वाला पूज्य है। वह पारितोषिक का भागी है।

पशोर्भारस्य मात्रापि सुकर्तव्या सुनिश्चिता।

सारल्येन पशुर्भारं संवहेत् पशुरुत्तमः।।१६८।।

किस पशु को कितना भार ढोना चाहिए यह निर्धारित किया जाना चाहिए। ताकि भार वहन का कार्य सरलता से पशु कर सके और वह उत्तम स्थिति में रह सके।

पुरस्काराः प्रदातव्याः रोपकेभ्यस्तरोः सदा।

सेचकपालकेभ्यश्च सूत्साहवर्धनं वरम्।।१६९।।

वृक्ष लगाने वालों को उसे सिंचने एवं पालन करने वालों को पुरस्कार प्रदान करने से उत्साहवर्धन होता है। यह उत्साहवर्धन पर्यावरण पोषण की उत्तम विधि है।

प्रशस्यं सर्वकारेण पादप्ररोपणं वरम्।

पुरस्कारप्रदानं तन्नूनमुत्साहवर्धकम्।।१७०।

वृक्षारोपण श्रेष्ठ कृत्य है। सरकार द्वारा इसकी प्रशंसा की जानी चाहिए। वृक्षारोपण करने वालों को पुरस्कार प्रदान करने से उनका उत्साहवर्धन अवश्य होता है।

वृक्षाणां रोपणं कार्यं तथा येन च सत्वरम्।

वर्धनं प्राप्नुयाद् वृक्षः पर्यावरणपोषकः।।१७१।।

वृक्षारोपण इस प्रकार किया जाना चाहिए जिससे कि वृक्ष तुरन्त वृद्धि को प्राप्त करे और पर्यावरण का पोषण करे।

शुष्के स्थाने च वृक्षः सः रोपणीयः प्रयत्नतः।

अल्पेनैव च नीरेण सत्वरं वर्धनं भवेत्।।१७२।।

शुष्क स्थान पर वह पेड़ लगाना चाहिए जो थोड़े ही समय में कम पानी से भी शीघ्र ही बड़ा हो जाए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सिकतायाः स्थलेऽप्यद्य रोपणं सरलं तरोः।
विधिना नूतनेनैव रोपणीयस्तरुर्वरः॥१७३॥

आज तो रेतीले स्थान पर भी वृक्षारोपण सरल हो गया है। इसलिए नूतन विधि से वृक्षारोपण करना उचित है।

प्रकृतिस्तु करोत्येव स्वकीयां सकलां क्रियाम्।
कुक्कुटो वदति प्रातो मयूरनर्तनं वने॥१७४॥

प्रकृति अपना कार्य करती रहती है। मूर्गा स्वतः प्रातः बोलता है और मोर वन में स्वतः नाचता है। इसलिए हमें भी अपना कार्य करते रहना चाहिए।

पक्षिणः पंक्तिबद्धास्ते मोददाः सुखदाः शुभाः।
कलरवं प्रकुर्वन्तः कुर्वन्ति जनजागृतिम्॥१७५॥

प्रसन्नता एवं सुख को देने वाले शुभ पक्षी पंक्ति बद्ध होकर कलरव करते हुए जनचेतना पैदा करते हैं।

पशवः पक्षिणः कीटा आपदां पूर्वसूचकाः।
संकटनाशका रक्ष्याः शुभस्यापि च सूचकाः॥१७६॥

पशु, पक्षी एवं कीट विपत्तियों की पूर्व सूचना देते हैं। संकट नाशक इन जीवों की रक्षा करनी चाहिए। ये शुभ समाचार की भी सूचना देते हैं।

टि०—भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं की पूर्व सूचना चूहे आदि पशु अपनी चहलकदमी से दे देते हैं।

मधुमासो मधोर्मासः पुष्पाणामाकरश्च सः।
प्रकृतेर्भूषणं प्रीतेर्वर्धकः शुभचिन्तकः॥१७७॥

वसन्त ऋतु मधु को उत्पन्न करने वाली व मधुरता देने वाली ऋतु है। इसे फूलों का आकर कहा जाता है। यह वसन्त प्रकृति का आभूषण है। यह सबका शुभ चिन्तक है।

जले जलसमीपे वा नद्यां सरोवरे शुभे।
क्षेपकोऽवशिष्टानां भक्तो भवति पातकी॥१७८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जल में अथवा जल के समीप नदी या सुन्दर तालाब में पूजावशिष्ट पदार्थों को फेंकने वाला भक्त पातकी होता है।

निष्ठीवनं मलं मूत्रं क्षेपणं दन्तधावनम्।
मलप्रक्षालनं नीरे, दग्धशवेन दूषणम्॥१७९॥

पानी में थूकना, मल-मूत्र फेंकना वस्त्र आदि धोना दन्त धावन करना तथा मल प्रक्षालन करना, जले हुए शव को फेंकना दूषित कृत्य हैं।

पुष्पादीनां फलादीनामन्नादीनां समापने।
अर्चनापूजनादीनां क्षेपणं नोचितं जले॥१८०॥

पूजा अर्चना के उपरान्त पुष्प, फल, अन्न आदि का जल में फेंकना उचित नहीं है।

धारणा ध्वंसनीयाद्य नदीपातं फलप्रदम्।
शुद्धभूमौ च सुस्थाने पातितं फलदं शुभम्॥१८१॥

इस धारणा को ध्वंस करने का समय आ गया है कि नदी में पूजावशिष्ट पदार्थों को फेंकने से पुण्य मिलता है । बल्कि इन्हें शुद्ध भूमि पर और अच्छे स्थान पर स्थापित करना शुभ है और शुभ फल देने वाला होता है।

पातनीयानि वारीणि दूषितानि नदीनदे।
जलस्त्रोतसि वाप्यां न रक्षणीयानि तान्यथ॥१८२॥

प्रदूषित पानी को नद-नदी में, जल स्रोत में, या तालाब में नहीं गिराना चाहिए। शुद्ध जल की रक्षा की जानी चाहिए।

उत्पादनार्थमन्नानां झटिति लब्धुं फलं महत्।
रासायनिकभूम्यां न प्राकृतिकं प्रयुज्यताम्॥१८३॥

शीघ्रता से अधिक फल उत्पादन हेतु रासायनिकों का भूमि में इस्तेमाल करना उचित नहीं है बल्कि पारम्परिक खाद का उपयोग करना लाभप्रद है।

भूजलस्तरक्षीणं न जायेत जगति तले।
जलस्य संचयः कार्यो जनावासः पृथक् पृथक्॥१८४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धरती का भूलस्तर क्षीण न होने पाये इसके लिए जगह जगह पर सरोवरादि बनाकर जलसंचय किया जाना चाहिए। एक ही स्थान पर अधिक आबादी होने के कारण भूजल का अधिक उपयोग एक क्षेत्र में होता है। फलतः भू जलस्तर क्षीण होता चला जाता है। इसलिए आबादी को अलग अलग बसाया जाना चाहिए।

वायुर्वृष्टिर्जलादीनि शुद्धस्थितौ यदा तदा।
अन्नं रसः फलं मूलं रजो वीर्यश्च सन्ततिः॥१८४॥

वायु, वृष्टि, जल, अन्न, रस, फल, मूल, रज और वीर्य, सुन्दर व शुद्ध स्थिति में होते हैं तभी इनसे बनने वाला तत्त्व भी शुद्ध व सुन्दर स्थिति में होता है।

सर्वरोगहरो वायुर्गन्धदो निर्मलः शुचिः।
प्राणदः प्रेरको रक्ष्यो वातु पातु पुनातु वः॥१८६॥

सभी रोगों को दूर करने वाला, सुगन्धित, निर्मल, पवित्र जीवनदायी एवं बढ़ते रहने की प्रेरणा देने वाली वायु रक्षा योग्य है। पवित्र पवन प्रवहमान हो और हम सब को पवित्र करे।

पर्वतेषु प्ररोहन्ति वायोः प्रशोधकाः स्वतः।
यदि न कर्तनं तेषां वृक्षाश्च रक्षिताः स्वतः॥१८७॥

वायु शोधक पदार्थ वन पर्वतों पर स्वतः उग आते हैं। यदि पेड़ों की कटाई न की जाय तो वृक्षों की रक्षा स्वतः हो जाती है।

वृष्टेर्जलस्य वायोश्च शोधकाः पादपाः शुभाः।
रोपणीयाः सदा सर्वैर्धरा वृक्षैः सुशोभिता॥१८८॥

वृष्टि के जल को एवं वायु को ये शुभ वृक्ष स्वतः शुद्ध करते हैं। इसलिए वृक्षारोपण सभी को करना चाहिए। तभी धरा वृक्षों से सुशोभित हो पायेगी।

वनस्पत्यौषधैर्वृक्षैः पुष्पैःपर्णैः सुभाषितैः।
गृहं विभूषितं नूनं दृष्टेः सुखस्य वर्धकम्॥१८९॥

यदि गृह वनस्पति, औषधि, वृक्ष, पुष्प पत्तों एवं सुभाषितों से सुशोभित रहता है तो वह दृष्टि को सुख पहुँचाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शस्यं रोहतु संरम्यं शिखरं परमोज्ज्वलम्।
शस्येन श्यामला भूमिः शस्य-प्रभावरक्षिका।।१९०।।

सुन्दर हरियाली शिखरों पर सुशोभित हो तथा उसे परमोज्ज्वल करे। हरियाली से हरी भरी भूमि हो, और वृक्ष शस्य प्रभाव की रक्षा करते रहें।

वृक्षैः सुजीवनं वायोर्वृक्षं विना न जीवनम्।
सन्तुलको न भूमौ स्यादसन्तुलननाशकः।।१९१।।

वृक्षों से ही वायु का शुद्ध जीवन संभव है। वृक्षों के बिना शुद्ध वायु का जीवन नहीं है। वृक्षों के बिना भूमि को सन्तुलित करने वाला और असन्तुलन को दूर करने वाला कोई नहीं है।

प्रददाति पयः पूतं पादपः पवनं पुनः।
प्रोर्वरकं परां पुष्टिं प्राशनं पशुभेषजम्।।१९२।।

वृक्ष पवित्र जल, पवित्र, पवन एवं उत्तम उर्वरक के अलावा पूर्ण पुष्टि, पुष्ट भोजन और जीवों को औषधि प्रदान करते हैं।

रोधव्यं पूर्णयत्नेन चोत्पाटनं निरर्थकम्।
पुष्पाणां पादपानां च रम्या जीवनदायकाः।।१९३।।

इसलिए पूर्ण प्रयत्न करके वृक्षों का उत्पादन रोको। बेवजह फूलों और सुन्दर वृक्षों को मत उखाड़ो। वृक्ष जीवनदायक होते हैं।

काष्ठानामिंधनादीनामूर्जानां दायकस्तरुः।
तथा सर्वैः प्रयोक्तव्यः पौनःपुन्येन प्रापकः।।१९४।।

लकड़ी, ईधन आदि को एवं ऊर्जा को देने वाले वृक्ष का इस्तेमाल इस तरह किया जाना चाहिए कि वे हमेशा प्राप्त होते रहें।

पेट्रोलडीजलादीनां गैसादीनां निरन्तरम्।
उपयोगो न लभ्योऽस्ति विकल्पमनुगच्छतु।।१९५।।

पेट्रोल, डीजल और गैस आदि का निरन्तर उपयोग लभ्य नहीं है इसलिए विकल्प को सुरक्षित रखना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विभीषिका समस्तासु प्रदूषणं विभीषणम्।
एतास्तु जीवनं घ्नन्ति तत्तु भूमिं भयं प्रभुम्॥१९६॥

सभी विभीषिकाओं में प्रदूषण भीषण विभीषिका है क्योंकि अन्य विभीषिकाएँ केवल जीवन को नष्ट करती है परन्तु प्रदूषण तो भूमि भय एवं प्रभु (निर्माता) को भी नष्ट कर देती हैं।

युद्धोन्मादी च यो देशो युद्धाय यतते शतम्।
विस्फोटैर्हननं कृत्वा हन्ति नरान् न जीवनम्॥१९७॥

युद्धोन्मादी जो देश अनेक युद्ध लड़ते हैं वे विस्फोट द्वारा लोगों का हनन कम पर्यावरण का हनन ज्यादा करते हैं।

अमरिका इराकेण युध्यते विक्रमैर्धनैः।
प्रक्षेपास्त्रैश्च विस्फोटैः पर्यावरणकोमलैः॥१९८॥

अमेरिका इराक के साथ धन एवं बल से लड़ रहा है। अनेक प्रक्षेपास्त्र एवं विस्फोटक आदि से लड़कर वह उसको नहीं बल्कि कोमल पर्यावरण को नष्ट कर रहा है।

जैवास्त्रं युज्यते हन्तुं मानवान् च रसायनम्।
अस्त्राण्यनेकरूपाणि पर्यावरणनाशनम्॥१९९॥

मानव को मारने के लिए जैविक अस्त्र एवं रासायनिक अस्त्र तथा बहुविध अन्यान्य अस्त्रों का युद्ध में प्रयोग पर्यावरण विनाशक होता है।

कुक्कुराः शंकरा जाता घातका नरनाशकाः।
पर्यावरणमेवैते घ्नन्ति च हिंसकाः सदा॥२००॥

मानव के विनाश के लिए भयानक शंकर कुत्तों को उत्पादन किया जा रहा है, जो घातक एवं नरनाशक है। ये हिंसक पर्यावरण की ही हत्या करते हैं।

विद्युदुत्पादनार्थं यज्जलस्त्रोतावरोधनम्।
नोचितं जीवनं यातु तमसि विद्युतो विना॥२०१॥

विद्युत् उत्पादन के लिए जलस्रोत का अवरोधन उचित नहीं है। भले ही जीवन अंधकार में विद्युत् के बिना ही क्यों न रहे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कपाटं स्वं च सन्धाय गृहे तिष्ठन्ति नागराः।

शंकातमसि ते त्रस्ता वसन्ति स्वार्थिनो नराः॥२०२॥

नगरवासी अपना कपाट बन्द करके गृह में स्वतः बन्द रहते हैं। वे स्वार्थी नर भयभीत होकर शंका रूपी अंधकार में स्वतः रहते हैं।

टि०—आज कपाट बन्द कर बेसुध भाव से अपने कमरे में बन्द रहने की प्रथा सी चल पड़ी है जो दुख का एक कारण भी बन रही है।

जलोर्जापि तदा लभ्या संसारे सुलभं जलम्।

सागरस्य जलं क्षारमन्यज्जलं प्रदूषितम्॥२०३॥

जलोर्जा भी तभी उपलब्ध होगी जब संसार में जल सुलभ होगा। समुद्र का जल खारा है और सामान्य पेय जल प्रदूषित हो चुका है।

सौरोर्जायाः प्रयोगो तु हिताय जगतः प्रिये।

सुलभा सर्वदा चोर्जा शाश्वतोर्जाप्रदायिका॥२०४॥

हे प्रिये, सौर ऊर्जा का प्रयोग जगत् के हित में है। यह सर्वदा सुलभ है। सूर्य शाश्वत ऊर्जा का प्रदाता है।

जलीयोर्जा स्थलीयोर्जा गैसीयोर्जा च वायुजा।

सौरजैवा च पेशीया जैवा च परमाणुजा॥२०५॥

जलीय ऊर्जा, स्थलीय ऊर्जा, गैसीय ऊर्जा, वायूर्जा, सौर ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा पेशीय ऊर्जा , जैव एवं अजैव ऊर्जा आदि ऊर्जा के प्रमुख प्रकार हैं।

मानचित्रं धरायास्तु चित्रणं कागदे कृतम्।

भूभागं प्रकृतिं चोर्जां प्रकटयति संस्कृतिम्॥२०६॥

धरा का कागज पर प्रस्तुत चित्र मानचित्र कहलाता है जो भू भाग, प्रकृति , ऊर्जा सभ्यता एवं संस्कृति को दर्शाता है।

कोयलेंधनतैलाद्या खनिजा जलराशयः।

रक्षणीयाः सुयत्नेन क्षरणं हानिकारकम्॥२०७॥

कोयला, ईंधन, तेल आदि खनिज पदार्थ एवं खनिज जलराशि की रक्षा प्रयत्न पूर्वक करनी चाहिए। इनका क्षरण हानिकारक है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शोधनं रोपणं रक्षा वर्धनं वायुवारिण:।
वनानां वन्यवस्तूनां भूमे: संरक्षणं वरम्॥२०८॥

वायु वारि, वन, वन्यवस्तु भूमि का रक्षण, शोधन, वर्धन एवं संरक्षण श्रेष्ठ कर्म है।

गिरेरुत्सर्जिता गैसा तरंगा गगनं गता:।
कृत्रिमा: प्राकृता धूमा: पर्यावरणदूषका:॥२०९॥

ऊँचे स्थानों से छोड़े गये गैस, ध्वनि यंत्रों द्वारा फेंके गये ध्वनि तरंग तथा कृत्रिम या प्राकृत विधि द्वारा उत्सर्जित धुआँ अधिक मात्रा में आकाश में जाते हैं तो ये ही पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं।

वारिदो वारिदो वायुर्धूमज्योतिर्जलान्वित:।
शोधको दूषितानाञ्च शुध्यति पादपैर्भुवि॥२१०॥

जल को देने वाला मेघ, वायु, धूम, एवं जल से निर्मित होता है। यह मेघ प्रदूषण को दूर करता है और वृक्ष मेघ को शुद्ध करते हैं।

सागरो जनको यस्य यस्य हि गगनं गृहम्।
गन्तव्यं भुवनं यस्य कोऽहं वदतु साम्प्रतम्॥२११॥

सागर जिसका पिता है, आकाश जिसका वास स्थान है, गन्तव्य स्थल जिसकी भूमि है, बताओं वह मैं कौन हूँ?

पवनो लालको यस्य विद्युद् यस्य प्रकाशिका।
वसुधा शाम्यते येन सोऽहमस्मि स वारिद:॥२१२॥

पवन जिसे प्यार करता है विद्युत जिसे प्रकाशित करती है, जो वसुधा को शान्त करता है वह बादल मैं हूँ।

हृष्यन्ति बालका दृष्ट्वा पक्षिण: पादपा धरा।
ताप: प्रशाम्यते येन सोऽहमस्मि स वारिद:॥२१३॥

जिसे देखकर बालक प्रसन्न होते हैं, पशु पक्षी एवं वृक्ष प्रसन्न होते हैं, और धरा प्रसन्न होती है एवं जो ताप को शान्त करता है वह बादल मैं हूँ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राणिनां जीवनं यो हि जीवेभ्यो जलदायकः।
धराद्याः शोधको यो हि सोऽहममस्मि स वारिदः॥२१४॥

जो प्राणियों को जल देकर जीवन देता है और जो धरा के मल को धो डालता है। वह मैं बादल हूँ।

वृक्षाणां रोपाणादन्यः प्रदूषणस्य रोधकः।
नास्त्युपायोऽपरः श्रेष्ठो वृक्षाणां रोपणं कुरु॥२१५॥

वृक्षारोपण से श्रेष्ठ प्रदूषण रोधक उपाय दूसरा कोई नहीं है। इसलिए हे मानव! तुम वृक्षारोपण करो।

भाषकं दर्शकं यन्त्रं गणकं लेखकं तथा।
चालकं श्रावकं योद्धा वाहकं भोजकं भुवि॥२१६॥

कम्प्यूटर के इस युग में बोलने के लिए, दिखाने के लिए, गणना के लिए, लिखने के लिए, सुनने सुनाने के लिए, सामान ढोने के लिए, यहाँ तक की भोजन कराने के लिए यन्त्र तैयार हो गए हैं।

संगणकं सुलभं लोके संगणकेन साध्यते।
सरला सरसा सौम्या क्रिया संचाल्यते सदा॥२१७॥

कम्प्यूटर (संगणक) सर्वत्र सरलता से उपलब्ध है। इसलिए संगणक द्वारा क्रिया सम्पन्न करना सरल सरस और मधुर हो गया है।

यन्त्रान् प्रकुर्वन्तस्ते यन्त्रवच्च जनाः गताः।
शुष्काश्च नीरसा लोके प्रकृत्या विमुखाश्च ते॥२१८॥

यन्त्रों का प्रयोग करते करते नर यन्त्रवत् शुष्क और भावना विहीन नीरस हो गये हैं। आज नर प्रकृति से विमुख होते जा रहे हैं।

शाकुन्तलं सुरम्यं हि मेघदूतं वरं रघुः।
पंचतन्त्रार्थशास्त्रं च पर्यावरणमोदकम्॥२१९॥

यह कटु सत्य है कि हमारे पूर्व पुरुषों ने प्रकृति के रम्य वातावरण में ही महान् ग्रन्थों की रचना की और पर्यावरण को प्रसन्न करने वाला बनाया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मेघदूतम्, रघुवंश, पंचतन्त्र, अर्थशास्त्र आदि की रचना इसके उदाहरण हैं।

भवभूतिर्भवे भूतिर्माघस्तृगुणसंयुत:।

वाल्मीकिस्तुलसीदास: प्रकृत्या: समुपासका:॥२२०॥

मनोरम वातावरण में महाकवि भवभूति भव की भूति से युक्त हुए, महर्षि वाल्मीकि जी ने रामायण की रचना की, गोस्वामी तुलसी दास जी ने रामचरित मानस की रचना की। ये सभी कवि मनीषी प्रकृति के उपासक रहे थे।

पिपासितस्तरुर्जात: क्रन्दनं तस्य वर्धते।

जगतो भूषणं नष्टं वृक्षाणां रोपणं कुरु॥२२१॥

आज वृक्ष प्यासे हैं। उनकी व्यथा प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। संसार के आभूषण नष्ट हो रहे हैं। इसलिए वृक्षारोपण करो।

वदन् रुदन् तरो: कण्ठच्छुष्कं दु:खेन संयुतम्।

पाहि मां पाह मामुच्चैर्घोषं कुर्वन्ति पादपा:॥२२२॥

रो रो कर वृक्ष बेहाल हो गये हैं। उनका कण्ठ सूख गया है। वे बार-बार जोर-जोर से कह रहे हैं कि मुझे बचाओ मुझे बचाओं। मैं तुम्हारा रक्षक हूँ। मुझे मत काटो।

प्रतिगृहं प्रतिग्रामं तरुस्तारुण्यपूरित:।

प्रभवेद्रमणीयं हि जीवनं सुफलं जगत्॥२२३॥

तरुणाई से पूरित तरु प्रत्येक गाँव एवं प्रत्येक घर में हो तो वृक्षों का जीवन सुन्दर व सुफल दायक हो।

पृथिव्या अष्ट रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।

रा वायुरौषधिर्मित्रमाचार: सर्वरक्षक:॥२२४॥

पृथिवी के आठ रत्न हैं वायु, जल, अन्न, सुभाषित, शुद्ध आचरण, धन, मित्र और औषधि। इन आठ के रहने पर ही शतायु मानव जीवन का निर्वाह उत्तम तरीके से संभव है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सत्सु चाष्टसु चैतेषु वरं मानवजीवनम्।
चिरञ्जीवी भवेद् भूमौ पर्यावरणरक्षितम्।।२२५।।

इन आठ के रहने पर ही शतायुष मानव जीवन का निर्वाह उत्तम तरीके से संभव हो पायेगा, और तभी पर्यावरण भी सुरक्षित रह पायेगा।

पदार्थेषु च सर्वेषु ब्रह्मणः परिकल्पनम्।
क्रियासु विधिषु प्रोक्तं संसारः साधितो भवेत्।।२२६।।

सभी पदार्थों, क्रियाओं एवं विधि के विधान के पीछे परमात्मा का उत्तम विधान काम करता है ताकि संसार का सम्यक् परिपालन हो सके।

यो जातस्तस्य मृत्युस्तु निश्चिता जन्मनिश्चितम्।
एतज्ज्ञात्वा सदा कुर्युः पर्यावरणपालनम्।।२२७।।

जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है और जिसकी मृत्यु हो गई है उसका जन्म लेना भी निश्चित है। इसे जानो और पर्यावरण का पालन उत्तम तरीके से करो।

ब्रह्मणः कल्पना सृष्टिर्ब्रह्मणा जायते क्षयम्।
ब्रह्मणो बहुरूपाणि रमस्व ब्रह्मणि नर।।२२८।।

परमात्मा द्वारा प्रकल्पित यह सृष्टि परमात्मा द्वारा ही नष्ट की जाती है। परमात्मा के ही विभिन्न रूप दृश्य एवं अदृश्य जगत् है। इसलिए हे नर तुम उस परमात्मा में रमण करो।

शीघ्रता शोभना नैव रत्यां प्रीत्याञ्च पूजने।
अशने व्यसने पाने शौचे स्नाने च जीवने।।२२९।।

अपने जीवन में, पूजा-उपासना में, प्यार में, रति क्रिया में, स्नान में, शौच क्रिया में, खाने व पीने में शीघ्रता आनन्द दायक नहीं होती।

शीघ्रता शोभना नैव शत्रुतायाः प्रवर्धने।
पठने पाठने वित्ते प्रदूषणप्रसारणे।।२३०।।

पढ़ने-पढ़ाने में, धर्नाजन में, प्रदूषण को बढ़ाने में तथा शत्रुता करने में शीघ्रता ठीक नहीं है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शीघ्रता शोभना पूज्या स्ववसरस्य सेवने।
सत्संगतौ प्रभोर्भक्तौ यज्ञे दाने सुकर्मणि।।२३१।।

सज्जनों की संगति करने में, प्रभु भक्ति में, यज्ञ करने में, दान देने में, प्राप्त अवसर का सेवन करने में और उत्तम कार्य करने में की गई शीघ्रता प्रशंसनीय होती है।

शीघ्रता शोभना भूमौ पादपानां प्ररोपणे।
प्रदूषणस्य तत्त्वानां नाशने तरुरक्षणे।।२३२।।

इस धरा पर जीवन धारण करते हुए वृक्षारोपण करने में, तरुओं की रक्षा करने में एवं प्रदूषण कारक तत्त्वों को नाश करने में शीघ्रता करनी उचित है।

अपमानो न वक्तव्यो न वक्तव्या रतिक्रिया।
गृहछिद्रं न वक्तव्यं न वक्तव्यं धनं तपः।।२३३।।

यदि किसी के द्वारा अपमानित होते हो तो किसी को मत बताओ। रति क्रिया के विषय में किसी से चर्चा मत करो। घर की कमियों को उजागर मत करो। धन एवं तप का ब्यौरा सभी को मत दो।

वक्तव्या शत्रुता नैव वक्तव्या करुणापरा।
वाणी नैव हि वक्तव्या यत्र तत्र यथा तथा।।२३४।।

शत्रुता की चर्चा मत करो पर उत्तम मित्रता की चर्चा अवश्य करो। जो जी में आये, जहाँ तहाँ मत बको।

सामाजिकं स्वरूपन्तु सुभगं सुखदं शुभम्।
भवतु भावना मेऽस्ति प्रदूषणं लयं व्रजेत्।।२३५।।

सामाजिक स्वरूप सुन्दर सुखद और शुभ हो और प्रदूषण समाप्त हो जाए यही मेरी शुद्ध भावना है।

सम्मिल्य समभावेन पर्यावरणशोभनम्।
आगच्छ प्रकुर्मो वै कामदं सुखदं शिवम्।।२३६।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आओ, हम सब मिलजुल कर समभाव से अपने पर्यावरण को सुन्दर व सुखद बनाएँ। ताकि वह पर्यावरण हमारी कामनाओं को पूर्ण कर सके। हम सब को सुख दे और वह शिव स्वरूप बन जाए।

स्वास्थ्यदं सुखदं शुभ्रं प्राकृतिकं सामाजिकम्।
रम्यं गम्यं स्वरूपं स्याद्धर्मं च रक्षणात्मकम्।।२३७।।

प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण ऐसा हो जिसमें इनका स्वरूप आरोग्यप्रद, सुखद, शुभ्र, रम्य, गम्य हो तथा पर्यावरण धर्म रक्षणात्मक हो।

प्रसूनं गन्ध युक्तं स्यात् पादपः फलभूषितः।
अन्नं पुष्टिप्रदं रम्यं भवतु मानदं धनम्।।२३८।।

फूल खुशबू से भर जाए, पेड़ फलों से लद जाए, खाद्यान्न सुन्दर व पुष्टिदायक हो जाएँ और पर्यावरण प्राणदायक एवं कल्याणकारक बन जाए।

सौरभं प्रसरेद् भूम्यां प्रसूनं मुदितं भवेत्।
सेचनं वर्धनं तस्य पर्यावरणमोदकम्।।२३९ ।।

प्रसून प्रसन्नचित हों और उनकी सौरभ भूमि पर सर्वत्र फैल जाए। पुष्पों का सिंचन एवं वर्धन पर्यावरण को प्रसन्नता प्रदान करने वाला हो।

श्वसनं बाधितं नैव स्यादुपायं तथा कुरु।
आहारो व्यावहारश्च पानं च सुखकारकम्।।२४०।।

ऐसा उपाय करो जिससे श्वसन क्रिया बाधित न हो। श्वास प्रश्वास, स्पर्श एवं पान सब सुख कारक हो।

श्वासप्रश्वासो जीवानामुन्मुक्ते गगने भवेत्।
शुद्धं वातं च सम्प्राप्य मोदन्तां मानवाः पशुः।।२४१।।

श्वास और प्रश्वास उन्मुक्त वातावरण में हो। शुद्ध वातावरण को प्राप्त करके मानव और पशु सभी प्रसन्न रहें।

शुद्धो वायुर्जलं तिष्ठेद्यतितव्यमहर्निशम्।
ऊर्जा प्रदायकं तत्त्वं सम्प्राप्तं नभसि स्थले।।२४२।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुद्ध वायु एवं शुद्ध जल सदा बने रहें इसके लिए अहर्निश प्रयत्न करते रहें। ऊर्जा प्रदायक तत्त्व स्थल एवं नभ में सर्वत्र शुद्ध रूप में प्राप्त हों।

सामुद्राः संक्षयं नैव यान्तु सयत्नवान् भव।
अन्यथा सागरीयास्तु नूनं नक्ष्यन्ति सागरम्॥२४३॥

सामुद्रिक वस्तु नष्ट न होने पायें इसका उपाय करें अन्यथा ये सागर को भी नष्ट कर देंगे।

सामुद्राः पादपा जीवाः सुरक्षिता यथा तथा।
कुरु कार्यं जगत्सर्वं जीवनं सागरेण हि ॥२४४॥

समुद्री पेड़ पौधे व जीव जन्तु को सुरक्षित करने के उपाय करो क्योंकि अधिकांश जगत् का जीवन सागर पर निर्भर करता है।

पालनीयाः प्रयत्नेन चान्तारार्ष्ट्रियरीतयः।
पृथिव्याः पालनार्थं भोः सर्वैरार्ष्ट्रैर्बलाबलैः॥२४५॥

पृथिवी का पर्यावरण सांगोपांग बना रहे इस निमित्त से बनाये गये अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का पालन सबल एवं निर्बल सभी राष्ट्रों को करना चाहिए।

संयुक्तराष्ट्रसंघेन राष्ट्रेण विविधेन च।
पर्यावरणरक्षार्थमुपायो बहुचिन्तितः॥२४६॥

संयुक्त राष्ट्रसंघ ने तथा अनेक राष्ट्रों ने पर्यावरण की रक्षा के लिए अनेक उपायों पर बहुचिन्तन किया है।

संस्था बहुविधा नित्यं पर्यावरणपालिकाः।
लोकास्तत्पराश्चान्ये विकल्पस्य च शोधकाः॥२४७॥

विश्व में पर्यावरण की रक्षा करने वाली अनेक संस्थायें कार्य कर रही हैं। तथा कई समितियाँ बनी हैं जो विकल्प की तलाश में लगी हुई हैं।

दिवसा उत्सवा नाना पर्यावरणरक्षकाः।
संमान्यन्ते जनैरार्ष्ट्रैः प्रदूषणनियन्त्रकैः॥२४८॥

पर्यावरण की रक्षा हेतु अनेक उत्सव और अनेक दिवस समाज, राष्ट्र तथा प्रदूषण नियन्त्रण संस्थाओं के द्वारा मनाये जाते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

टि०— ५ जून को प्रति वर्ष पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।

नारी त्वस्तु सुरक्षिता न हि कदा केनापि संपीडिता
नारी सौम्यसुरम्यसृष्टिजगतो नारी परा संगिनी।
नारी शिक्षितनीतितत्त्वनिपुणा नारी परा शासिका
नारी सद्गृहिणी सदा च सुसुखं प्राप्नोति ना सद्गृहम्।२४९।

संसार की सुन्दर एवं सौम्य सृष्टि नारी है। नारी श्रेष्ठ जीवन साथी है। नारी को शिक्षित किया जाये और वह नीति के तत्त्वों में निपुण हो जाए तो नारी श्रेष्ठ शासिका है। जिस घर में सद्गृहिणी नारी है वह घर और उसका प्रत्येक सदस्य सदैव पूर्ण सुख को प्राप्त करता है। नारी की पूर्ण रक्षा होनी चाहिए। किसी के द्वारा वह पीडित न महसूस करे ऐसी सामाजिक व्यवस्था होनी चाहिए।

पुत्रीं प्राप्य पिता प्रयातु परमं चानन्दसन्दीपनं
पुत्री क्लेदकरी कदापि न परा शिष्टा वरा वर्धिका।
पुत्री वृद्धिकरी सदा सुखकरी पुत्र्याः प्रियं पालनं
सर्वः स्यादनुशासितः सुसरलं पुत्र्या वरं जीवनम्।।२५०।।

सामाजिक पर्यावरण ऐसा हो जिसमें पुत्री की उत्पत्ति पर माता पिता परमानन्द को प्राप्त कर सकें। यदि पुत्री शालीन हो शिष्ट हो तो किशोरावस्था में भी कष्ट देने वाली नहीं होती। पुत्री हमेशा घर को खुशहाल करती है तथा उन्नति को प्रदान करती है। ऐसी पुत्री का पालन प्रिय होता है। पुरुष प्रधान समाज में यदि पुरुष एवं स्त्री वर्ग अनुशासित हो जाएँ तो पुत्री का जीवन और भी धन्य हो जाए।

उत्साहेन समन्विता इह जना मोदेन मोदान्विताः।
यन्त्राणां जननं कृतिश्च विमला पूतात्वपूता धरा।
वृक्षाः सन्तु निरामया भुवि जना मानेन संपूरिताः।
सर्वो नन्दतु पावनेन मनसा रम्यं जगज्जीवनम्।।२५१।।

इस धरा धाम पर पर्यावरण संवर्धन के उत्साह से सभी जन भर जाएँ, और इस प्रसन्नता से सुप्रसन्न हो जाएँ। कृत्तिम यन्त्रों का निर्माण एवं उनकी कृति विमल हो जाएँ ताकि प्रदूषित धरा पुनः पवित्र हो जाए। इस पृथ्वी पर वृक्ष और सभी जन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निरोग हो जाएँ और मान सम्मान से भर जाएँ। निर्जीव पदार्थ में भी ज्ञान आ जाए और सभी पवित्र मन से आनन्दित हो जाएँ और इस प्रकार सम्पूर्ण जागतिक जीवन सुन्दर व खुशहाल हो जाए।

।।इति श्रीजगन्नाथशुक्लसुतश्रीमदशोककुमारशुक्लविरचित:

समस्यासमाधाननामको नवमोऽन्तिमश्चाध्याय:।।

।। इति शम्।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection